भ० महावीर स्वामी की २५ सौवीं निर्वाण-तिथि के उपलक्ष्य मे
अहिंसा निकेतन का पुष्प नं० १०

प्राच्य जैन सराक शोध कार्य

लेखक
श्री बाबूलाल जैन जमादार
अहिंसा निकेतन बेलचम्पा
महेशपुर, खरखरी, (धनबाद) बिहार

प्रकाशक
श्री अहिंसा निकेतन बेलचम्पा
मु० रेहला (पलामू), बिहार

प्रथम बार २००० | दीपावलि निर्वाण दिवस वीर नि० स० २४९९ | लागत मूल्य तीन रुपया

प्रकाशक

अहिंसा निकेतन

मु० पो० बेलचम्पा, पो० रेहला

(पलामू) बिहार

●

अक्टूबर १९८३

वी० नि० सं० २५१०

●

प्रथम संस्करण

२०००

मूल्य

तीन रुपया

●

श्री महावीर स्वामी

अपनी बात !

समय हो तो पढिये ।

उत्थान-पतन जिंदगी में साथ साथ चलते है, इसका भोग सभी प्राणियो को करना पडता है जो कभी राजा महाराजा साहूकार, श्रीमत, लक्षाधीश थे वह आज सामान्य जन जीवन व्यतीत कर रहे हैं । अभावो को जो नही समझते थे वह स्वय अभावो में समय गुजार रहे हैं । इन्ही के आश्रय से चलने वाले धार्मिक कार्यों की भी इसी तरह गति मद हो चली है ।

दूसरी ओर जो दीन दु खी निर्धन और साधन विहीन थे आज वह पूर्ण धन, वैभव, ऐश्वर्य से सम्पन्न हैं और मनमानी के तौर पर धर्म के विपरीत आचरण करके अपनी अपनी चला रहे हैं जिसका परिणाम कटुता, सघर्ष, और दुराव तथा भ्रष्टाचार और अनाचार में दिख रहा है ।

यही दशा हमारे कार्य में साधक और बाधक बनी । जव हमने सराक जाति में कार्य प्रारम्भ किया तब धन वैभव की कमी नही थी, और जोर शोर से कार्य चलाया । जो लोग ५० वर्ष से इस एरिया में कार्य कर रहे थे उन्होने सहयोग देना तो दूर साथ में जाने वालो को भी अलग थलग करने के प्रयत्न किये, वाधायें खडी की और नाना प्रकार से वदनाम करने में भी कसर न छोडी । वह कार्यक्रम आजतक बरावर उन हितैषी धर्म बन्धुओ का चल रहा है । उनका कार्य उनके साथ चला और हमारा कार्य हमारे साथ चला और चल रहा है ।

दैव की गति विचित्र है, १।। माह ही कार्य सन् १९७१ ई० में कर पाया था और उसमें तेजी से प्रगति हुई ही थी कि भारत सरकार ने नोन कोकिंग कोल्यरियो का राष्ट्रीयकरण कर दिया । १६ अक्टूबर १९७१ ई० को हम हक्के वक्के रह गये । क्योकि श्री सेठ विमल प्रसाद जी जैन की तीन कोलयरियाँ इस राष्ट्रीयकरण में चली गई । सारा कार्य

अस्तव्यस्त हो गया, सभी प्रोग्राम रखे रहे और "किंकर्तव्यविमूढ" की दशा में कभी अपनी ओर और कभी सेठजी के परिवार की ओर देखता और भविष्य की चिन्ता मे खो जाता।

२५ अक्टूबर १९७१ ई० को हमने निश्चय किया कि अब सभी साधन समाप्त हो गये, सेठ जी अपनी नई समस्याओ मे उलझ गये, अत अब सीधे बडौत वापिस चलना चाहिये और अपना पुराना काम सम्भालना चाहिये। यह बात सभी को बता दी। उधर विरोधियो ने खुशिया मनाई कि चलो "जमादार" असफल हो गया, चला था पूज्यवर्णी जी का स्वप्न करने लेकिन, धर्मात्मा, दानी, और कर्त्तव्यशील दानवीर सेठ विमलप्रसाद जी को जब धमप्राण बा० शिखरचदजी जैन ने हमारे जाने की बात सुनाई तो वह तिलमिला उठे, आखो में एक नई ज्योति जगी और कुछ देर सोचकर बोल उठे, "पडितजी (जमादारजी) से कह दीजिये कि "जब तक हमारी सांस है तब तक यह सराक जाति का कार्य बद नहीं होना है। बगाल, बिहार उडीसा तीनो प्रातो का सर्वे पूरा कराऊँगा, उसका इतिहास भी जैन समाज के समक्ष रखूगा। चाहे कहीं से भी पैसा लाकर लगाना पडे इसकी चिता वह (मैं) रच मात्र न करें। अपना कार्य वह बराबर चालू रखें, आदि।"

हमे बल मिला, सहयोग मिला धन मिला और साधन मिले। कार्य तेजी से चलने लगा। विरोधियो ने असहयोग आदोलन छेडा हमने ध्यान नही दिया, उन्होने सहयोग देने से इकार किया हमने प्रसन्नता से उनकी ओर देखना बद कर दिया, क्योकि हमें किसी से चदा आदि तो लेना नही था, सभी सेठ विमलप्रसादजी जैन का धन लग रहा था।

"सराक बधुओ के बीच" "सराक हृदय" और "जैन स स्कृति के विस्मृत प्रतीक" यह तीन पुस्तके इसी सक्रमण काल में निकली। जिसकी भूरि भूरि प्रशसा समस्त जैन समाज ने की। समाज का शुभाशीर्वाद हम लोगो को बल देता गया और अपने पूज्य पुरुषो की भावनाओ का हम समादर करते हुए अपने बिछुडे श्रावक (सराक) बधुओ के घरो तक

पहुँचते रहे। जहाँ हम नही पहुँच सके वहाँ हमारे सहयोगी सराक वधु, धर्म वधु पहुँचे और हमें सहयोग दिया।

भारत सरकार ने समस्त कोयला खानो को लेने का निर्णय कर लिया था ऐसा नित्य सुना जाता था। लेकिन उडीसा के दौरे पर ज्यो ही गया, और वहाँ के कुछ सराक वधुओ से सम्पर्क साध ही रहा था कि, ३० जनवरी १९७३ ई० को सुना कि समस्त कोयला खानो का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया है और सभी अधिकार सम्पत्ति आदि सरकार ने सम्भाल लिये। आदि।

यह आघात मुझे वेदना के गहरे गर्त मे ले गया और हम पुन आशा निराशा के झूले में झूलने लगे। भूल गये सथाल परगना के ग्रामोंके भ्रमण के कष्टों को, भूल गये भूख प्यास की बाधा को, भूल गये विरोधियों के तानो और भूल गये ऋपियो के वाक्यो को, शून्य सा बैठा था, कि किसी ने झकझोरा "उठ, चल! खरखरी, और वहाँ पर स्थितिका अध्ययन कर हिम्मत से काम ले, निराश मत हो।"

खरखरी कब आ गया पता नही चला, आकर मालूम हुआ कि बा० शिखरचदजी सेठ विमलप्रसादजी के साथ डगरा चूरू में है। यहाँ कोई नही है सभी बाहर हैं, रात्रि में सेठ विमलप्रसादजी के अनुज श्री बा० सुरेन्द्रकुमार जी जैन कलकत्ता से आये, उनसे बात करू तो क्या करू। सरकार ने तो सभी कुछ रहा सहा सेठजी का छीन लिया। बगला, कारें, ट्रक, मोटर, बुलडोजर, फर्नीचर आदि सभी ले लिया। क्या इसी को देश निर्माण कहेंगे! यह भी तो भारतीय है इन्हे क्यो इस तरह तरसाया गया? आदि प्रश्न उठते, गिरते और बनते।

एक हफ्ता तक निराशा की गतिविधि में कुछ भी तो न कर सका। आखिर तै किया कि १५ फरवरी ७३ ई० से सराक क्षेत्र छोड दूगा, अब कुछ तो शेष नही है। इतना बडा कार्य सेठजी कैसे अब सम्भालेंगे। वह अपनी चिन्ता करेंगे या हमारी।

हमारी दशा धान की मोटी बच्चे के हाथ में से वनविलाव छीनकर भागने पर जो अवस्था की धानेमें राणा प्रताप की हुई थी वही हो रही थी। हमने निराशा में एक आशा की झलक देखी और उनीके आधार पर अपने जाने पहचाने समाजमान्य श्रीमतो को पत्र दिये कि इस संकट काल में साथक जातिके कार्य में आपलोग मदद करें तो आशा काम की चिन्ता मिटे। आयेकी चिन्ता सेठजी पर रहे।

कलकत्ता के कुछ उत्साही बन्धुओंने हमारा उत्साह बढाया (पत्रोत्तर देकर तथा सान्त्वना का वचन देकर) तथा कुछ श्रीमतो ने सराक छात्रोंको पुस्तकें फीस आदि देकर उत्साहित किया। पर जिन पर हम क्या सारी समाज गौरव करती है, ऐसे श्रीमतोंने (एक उच्च कोटिके श्रीमत को छोड कर लिखा) सोचो विचारो या उत्तर ही नहीं दिया।

"हम इसी चिन्ता में घुले बैठे थे कि यकायक सेठजीने कहा-चिन्ता न करना पंडित जी। चौथी पुस्तक अवश्य बनाना है और उडीसा प्रात का कार्य भी करना है जो भी खर्च होगा दूँगा साथ ही आप निराश न होना आपके कार्य में थोडी बाधा तो पडेगी लेकिन आपके निजी खर्च में रत्ती मात्र भी कमी न आ पावेगी। ६ माह का समय चाहिये फिर ज्यो का त्यो कार्य सराक का चलेगा। आप कुछ श्रीमतो से भी परामर्श करें। हिम्मत बधी। उडीसा के दौरे को रुपया सामने रख दिये।

ऐसे संकट के समय में ऐसा दानवीर धर्मवीर अपने कर्त्तव्य से रत्ती मात्र न डिगा यही उनकी महानता है और उसी का शुभ परिणाम है कि सभी कुछ जाने के बाद भी भ० पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर का निर्माण हुआ, प्रतिष्ठा हो रही है, नेत्र यज्ञ हो रहे हैं। स्कूल, औषधालय भी चल रहे हैं, दान पूजा भक्ति भी हो रही है ऐसे दानवीर कम है समाज में।

कहने और करने में बडा अतर है। मुनीवत में जो धर्मकी और धर्मात्माओ की रक्षा करें वही धर्मरक्षक समाजभूषण या श्रावकोत्तम है। मान्य दानवीर सेठ साहू शातिप्रसाद जी जैन ने हमारी प्रार्थना पर सराक क्षेत्र में प्रचार प्रसार कार्य के लिये दो हजार रुपया माह की सहायता

देना स्वीकार की है। जिसकी कई किश्तें प्राप्त हो गई हैं। एक महान् सकट साहूजी ने टाल दिया। उनका स्मरण करना आवश्यक है।

तो यह "प्राच्य जैन सराक शोध कार्य"[1] नामक चौथी पुस्तक इस महान सकट में बन पाई है, जो जो भी कष्ट वेदनायें हुई उन्हें हमारे प्रेरणास्रोत सेठ जी, उनका परिवार और वा० शिखर चदजी मा० सदैव हिम्मत बधा कर दूर करते रहे हैं। तथा कई वार जो भी वापिस जाने का विचार बना उसे इन्ही की प्रेरणा से तथा मान्य साहू जी के मार्ग दर्शन से स्थगित करना पडा। उसके लिये आभारी हूँ। पुस्तक में क्या कहाँ है उसे ध्यान से पढिये और मार्ग दर्शन करावें।

जैन सामाज पर अब एक बहुत बडी जिम्मेवारी है कि वह अपने द्रव्य का उपयोग किस तरह करे। हमने तो जो भी सर्वे करने मे अच्छाई व कमी पाई वह लिख दी, मार्ग लिखेदिये, ग्राम, थाना, पोस्ट, सज्जन पुरुप आदि सभी जानकारी अपनी शक्ति प्रमाण दी है उसका सदुपयोग कोई भी करे हमें क्या ? गलतियाँ मेरी, अच्छाई आपकी।

बहुत से सज्जनो ने हमारे कार्य की प्रशसा की बहुत निंदा भी कर रहे हैं। अत दोनो ही बधाई के पात्र हैं। प्रशसको से हमें नया बल मिलता है और निंदको से हमें नया मार्ग मिलता है।

हमारी इस पुस्तक में महर्षियो के तथा हमारे मार्गदर्शको के शुभाशीर्वाद व शुभ सदेश भी है, तथा जैनगजट के प्रसिद्ध विद्वान् सम्पादक डा० लालबहादुर जी जैन शास्त्री एम०ए०,पी० एच० डी० देहली का 'बिछुडो को सम्हालें' लेख भी है जिममें प्राचीन परम्परा का बोध कराया है उसके लिये उनका धन्यवाद।

श्री सराक जैन समिति की प्रेरणा से परम पूज्य प्रात स्मरणीय श्री १०८ मुनि नेम सागर जी महाराज, ब० सिंघई पूरणचन्द्र जी अशोक नगर

---

१ पाचवी पुस्तक "सराक जाति का इतिहास" होगा। जिसका कार्य प्रारम्भ हो गया है।

विषय-क्रम

सम्बोधन

पूज्यमुनि जयन्तीलाल जी महाराज, अहिंसा निकेतन, बेलचम्पा

बन्धुओ !

सराक-संबंध में पिछली तीन पुस्तिकाओ मे हम कुछ भावनायें प्रगट कर चुके है। जब-जब पुस्तिका तैयार होती है। श्री बाबूलालजी जमादार मेरे पास नाम के परामर्श हेतु आते है और पुस्तक के निरीक्षण और लेखन की अपेक्षा करते हैं। इस समय भी वे उसी निमित्त आये, विचार विमर्श के पश्चात 'प्राच्य जैन सराक शोधकार्य' नाम दिया गया।

यहाँ पर प्राच्य शब्द उभय अर्थ वहन करता है—एक तो हमारे सभी सराक-बन्धु पूर्व भारत में बसे हुए है, पूर्वांचल को प्राची दिशा होने से प्राच्य कह सकते है—दूसरा प्राच्य का अर्थ है प्राचीन से भी। 'सराक' वर्त्तमान होने पर भी प्राचीन की विराट् उपलब्धि है।

पूर्व प्रदेशो में जीवित मानव में यदि हम मगल की अपेक्षा करे, तब सराक का जीवन एव परपरागत संस्कृति-संस्कार का वैभव—महान् आदर्श हमें उपलब्ध होता है। पूर्व भारत से सराक को यदि हटा देते है—अहिंसा की एक बहुत बडी दीवार हट जाती है जिस पर पूर्व भारत की जैन संस्कृति का मंदिर खडा है।

जैन जगत् इस अज्ञात-सत्य को अभी नही समझा है इसलिये "सराक माने जैन संस्कृति की धरोहर" यह कल्पना उसके मन में उद्भासित नही हो रही है।

अत आवश्यकता है जैन तीर्थयात्रियो को पूर्व भारत के जैन तीर्थों के साथ-साथ सराक अनुप्राणित तीर्थ में लाने की। हमारा यह भी प्रयास है—ऐसे कुछ तीर्थ का निर्माण हो—वहाँ पर प्राचीन, कलायुक्त, सराक क्षेत्रो से सप्राप्त अखड जैन बिम्बो को पुन स्थापित करें, साथ में सेवा केन्द्र, शिक्षा

अहिंसा निकेतन—वेलचपा ने सराक का कार्य अभियान किया। श्री बाबूलालजी जमादार जैसे कर्मठ कार्यकर्ता इस कार्य में जुटे—और श्री सेठ-ला० हरचन्दमल जैन के भतीजे श्री सेठ विमलप्रसाद जी जैन ने पूर्णरूप से योगदान किया। श्रीसराक जैन समिति ने पूर्व भारत के तमाम सराक क्षेत्र का सर्वेक्षण किया फलत चार पुस्तिका के रूप मे सराक-का पूरा मान चित्र आपके सामने आया।

अहिंसा निकेतन वेलचपा ने इस कार्य को विस्तृत करने का मानसिक वृत तैयार किया है।

मित्रो! आपकी भावना की कसौटी का अब समय आ गया है क्योकि अब हम सक्रिय क्षेत्र मे कदम रख चुके है और सराक को गले लगाकर पुन प्राची में अहिंसा का उद्घोष करने जा रहे है।

पूज्य श्री ब्र० शीतलप्रसादजी ब्रह्मचारी, श्री पुण्यात्मा मगल विजयजी महाराज, श्री श्रद्धेय गणेशप्रसादजी वर्णी एव तपोवर्नी श्री जगजीवनजी महाराज आदि महापुरुषो की अन्तर्निहित भावनाओ को साकार कर उन्हे श्रद्धाजलि देना है।

हमारी भविष्य की कार्यरेखा होगी

१ अहिंसा निकेतन के प्रमुख पत्र 'वेलचपा' के प्रकाशन द्वारा सराक-जैन सस्कृति का उद्घोष।

२ नये जैन-सराक-तीर्थ की स्थापना।

३ तीर्थ के साथ सेवा केन्द्र और शिक्षा केन्द्र।

४ पूर्व भारत के तमाम सराक बन्धुओ का एक विशाल महासम्मेलन।

५ २५००, श्री महावीर शताब्दी समारोह में—सराक के साथ पूर्ण मिलन का दृढ सकल्प।

यदि महावीर प्रभु की कृपा बनी रही और आपके सहयोग का शुद्ध भाव-प्रवाह आ मिला तो सिद्धि अवश्य होगी।

आनन्द मगलम् वेलचपा दिनाक २०-८-७३

परमपूज्य श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज तथा समस्त मुनि सघ
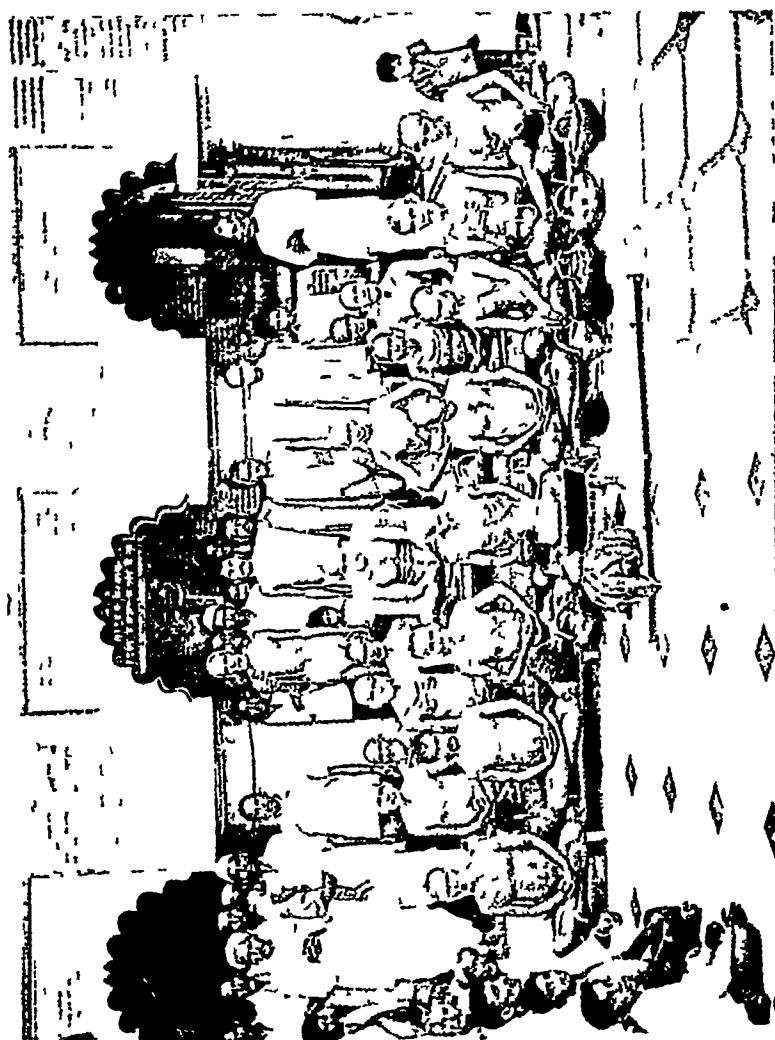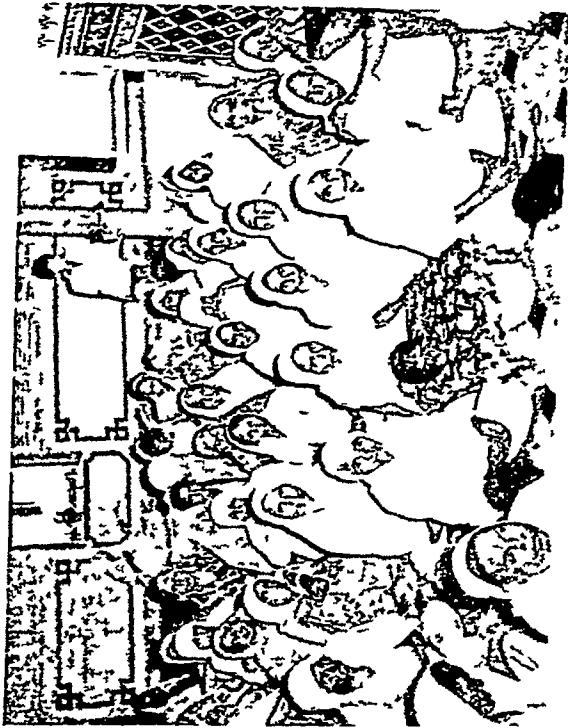
समस्त दि० जैन आर्यिका सघ (जिन्होने सराक जाति के कार्य की भूरि-भूरि प्रशसा की है ।)

धर्मवृद्धि शुभाशीर्वाद

धर्मवत्सल, श्री जिनदेव, श्रुत, श्रमणभक्ति परायण, प० बाबूलाल जी जमादार को सद्धर्मवृद्धि आशीर्वाद।

प्रा० पूज्य १०८ गुरुदेव समतभद्राचार्य के आज्ञानुसार १९७२ की चातुर्मास का योग्य सौभाग्य श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर जी पर ४९ त्यागियो को प्राप्त हुआ। चातुर्मास में आपने सराक बधुओ की स्थितिकरण की दिशा मे २ पुस्तकें अर्पण की व देखी गईं। सन् २५।७।७३ को जब विहार खरखरी हुआ तब तीसरी पुस्तक भी अर्पणी, जो भी पढ ली। चौथी पुस्तक भी प्रसिद्ध हो रही है। जिसके सम्बन्धी कुछ फोटो प्राचीन मदिर मूर्ति आदि के बतलाये गये।

इन साहित्य से मुझे अतीव हर्ष और समाधान हुआ और भव्य सराक बधुओ का सच्चा इतिहास ज्ञात हुआ, अब इन बधुओ को अपने निमल मार्गानुसरण मे सूर्य प्रकाश जैसी सुविधा हुई है। साहित्य को पढ कर हृदय भर आया। आपको जितने धन्यवाद दिये जाँय थोडे हैं। आपने श्रेष्ठिवर्य विमलप्रसाद जी से भी शिखर जी में परिचय करा दिया, दानवीर सेठ श्री का औदार्य प्रशसनीय है। सेठ श्री को भी जितने धन्यवाद दिये जाय थोडे हैं। आपका और श्रेष्ठिवर्य का नाम इतिहास के पत्र में स्वर्णाक्षरो में अकित रहेगा कि आपने बडी ही खोजपूर्वक विश्लेषण अनथक परिश्रम से, आत्मीयता और वात्सल्यपूर्ण हृदय से सराक बधुओ का परामर्श लिया और इनके उद्धार में श्रेष्ठिवर्य ने अपार धन राशि लगायी।

जनगणना के बारे मे भी आपका प्रयत्न सराहनीय रहा जब कि मैंने आशीर्वाद का पत्र दिया था। इस समय तीर्थरक्षा, अहिसा सस्कृति रक्षा के लिए करोड निधि के सकलन में मेरा विहार आचार्यो की आज्ञा से चल रहा है जो भारतीय दि० जैन समाज को ज्ञात है। आपके सामाजिक वात्सल्यता, परीक्षा प्रधानता, वक्तृत्व प्रतिभा, कष्टसहिष्णुता आदि सद्गुणो से

समाज और संस्कृति में जो उपकार हो रहा है वह ऐतिहासिक है व रहेगा। तीर्थ-संस्कृति की रक्षा के साथ समाज की भी रक्षा अनिवार्य है।

"न धर्मो धार्मिकैर्विना"।

अतः इस प्रबन्ध देखकर आपको, श्रेष्ठिवर्य श्री विमलप्रसाद जी को धन्यवाद पूर्वक हार्दिक सद्धर्म वृद्धि आशीर्वाद कर श्री जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना है कि आपको पूर्ण सफलता प्राप्त हो और यह विशाल पुण्य आपको अनन्त सुख की ओर ले जावें। इसी तरह श्री शिखर जी सारे आदि साथियों तथा उन सब भव्य सराक भाई बहिनों को शुभ सद्धर्म वृद्धि आशीर्वाद।

मुनि आर्यनन्दी, जरबरी

शुभाशीर्वाद

श्री मंत्री महोदय, श्री श्रावकोत्तम विद्वद्रत्न गुरु सेवा परायण साहित्य निर्माणक महान् कवि और सराक परम हितैषी जैनधर्म प्रभावक स्वाध्याय प्रेमी आदरणीय श्री पं० बाबूलाल जमादार जैन शास्त्री जी को सद्धर्म वृद्धिरस्तु शुभाशीर्वाद। आपने जो सराक (श्रावक) जैन बन्धु को ढूंढ़ सारे दिखाकर उन्हीं को दयामय जैनधर्म में स्थिर करने का जो प्रयत्न कर रहे हैं सो देखने (पढ़ने) बड़ा आनन्द हो रहा है। उपक्रम स्तुत्य है। आपके कार्य को जो महान् सत योगि, त्यागी सज्जन का आशीर्वाद प्रेरणा है सो सभी धन्य हैं इससे भी आपका कार्य अधिक शोभनीय होवे यही हमारी शुभ कामना आशीर्वाद। जब पूर्व आचार्य श्री ने प्रतिज्ञा करके रोजीना ५०० जैन बनाकर सभी आहार करेंगा इसी कार्य को आज हम सभी को करना जरूरी है क्योंकि काल बहुत बदल गया। आज जैन को जैन बनाने का महत्वपूर्ण कार्य है जो आप कर हो रहे हैं वहाँ उदारदाताओं का दान भी प्राप्त हुआ सो वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं सो जैन समाज बहु भाग से ये कार्य को स्वीकार कर तन, मन, द्रव्य से सेवा करें और गरीब दुःखी असहाय सराक समाज को सत् पथ पर लगाकर सत् सत्कार कर वात्सल्य भाव से पास बुलाकर अन्नदानादि सभी प्रकार

मदद कर उन्ही के आत्मा का कल्याण करे। वे सभी भेद भाव छोड़कर भगवान महावीर की वाणी का आश्रय करें उसी में उन्हो का स्वपर कल्याण है, उन्हो का आत्मोद्धार हो, सद्‌गति प्राप्त हो परपरा मोक्ष मिले यही हमारा आशीर्वाद है। मत्री महोदय, कार्य सेवा भावी त्यागी सज्जन और सभी सदस्य, उदार दाता सभी को हमारा आशीर्वाद कार्य सभी प्रकार से वृद्धिगत पावे। यही शुभ कामना।

क्षु० जयकीर्ति जी महाराज (अक्कलकोट)

●

मान्य सेठ साहू शान्तिप्रसाद जी जैन, देहली

आपके जीवन का यह महान् कार्य है, सेठ विमल प्रसाद जी और बा० शिखरचन्द जी आपको उचित सहयोगी मिले, अब डटकर कार्य करते रहें, ताकि चार सौ साल की अभिलाषा जैन समाज की पूर्ण हो सके और सराक जाति का पूर्ण इतिहास बन सके। मेरी शुभकामना आपके साथ है, प्रगति से अवगत कराते रहें।

जैनरत्न सेठ शीतल प्रसाद जी जैन, मेरठ

जैन जनगणना के कार्य में आपने जिस प्रतिभा का परिचय दिया था उसी दिन हम समझ गये थे कि जमादार जी बिछुटी जातियो मे अवश्य प्रवेश करेगे। और अब जब आपकी पुस्तकें हमारे पास हैं और आपकी खोज पूर्ण बाते हम व हमारे साथी पढते है तो हृदय गद्‌गद् हो जाता है। आपको बिहार के रत्न श्री सेठ विमलप्रसाद जी और श्री शिखरचन्द जी का सहयोग मिल गया यही समाज के लिये गौरव है। हमारा सहयोग प्रतिक्षण आपके मगलमय कार्य मे है व रहेगा। आशा है आप सराक जाति का पूर्ण इतिहास बनाकर ही चैन लेगे।

श्री प० शीलचन्द्र जी जैन शास्त्री, न्यायतीर्थ, मवाना

सराक सम्बधी साहित्य पढकर और आपकी मेहनत देखकर साधुवाद देने को मन करता है। पर न जाने क्यो मन कुछ शकाओ मे फँस

श्री १०५ क्षु० विशालकीर्ति जी महाराज माडवी (सूरत)

आपने जो पवित्र और उदार जैनधर्म का प्रचार करने का बीडा उठाया है वह बहुत प्रशंसनीय है और सराहनीय है। आपका कार्य बहुत तीव्रगति से प्रसार हो उसके लिये मैं श्री भगवान् बीस तीर्थकरो के पास सहृदय से प्रार्थना करता हूं, जो श्री सम्मेदशिखर जी के ऊपर स्थित है।

मैं इस पवित्र कार्य मे आपको सहयोग देना चाहता हूँ आप मेरे अनुरूप व्यवस्था भोजन आदि की कर दें तो मै शीघ्र चलकर आपके पास आ सकता हूँ।

श्री देवकुमार जैन सिद्धान्त दर्शन शास्त्री श्रमणोपासक, बीकानेर

आपके द्वारा लिखित सराक जाति सम्बधी पुस्तकें पढी। उनमे स्पष्ट पता चलता है कि बगाल, बिहार, उडीसा में हमारे बधु लाखो की सख्या मे विद्यमान है। हमारी उपेक्षित नीति से वह हमसे दूर रहे हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि वह कृषक है आदि। मात्र खर्च कर लेने से और दौरा कर लेने से भाई कार्य नही बनेगा आप जैसे क्रातिकारी के हाथो में आया कार्य अधूरा न रह जाय इसकी चिन्ता आपको अवश्य होगी। पर मैं यह सुझाव देना अपना धर्म समझता हूँ कि इन सराक बधुओ को सच्चे हृदय मे गले लगाना समाज न भूले। खेती व्यापार और उनके बच्चो को रोजगार पर लगाना समाज न भूले साथ ही उनके बच्चो को शिक्षा की भी व्यवस्था आप स्वय करें करावें और प्रेरणा करें ताकि वह बधु अपने में मिलकर आनदित हो।

आपके प्रयत्नो की प्रशसा क्या करूँ पर सहयोग की भावना अवश्य व्यक्त करता हूँ। सेवा बताते रहे।

श्री प० बशीधरजी जैन शास्त्री एम० ए०, देहली

सराक सम्बन्धी साहित्य मिला, धन्यवाद।

सराक बधुओं के विकास हेतु समाज को क्या करना चाहिये, इस सम्बध में पुस्तकें अच्छी जानकारी सक्षिप्त मे देती है।

पूज्य ब्र० शीतलप्रसाद जी, वर्णी गणेशप्रसाद जी जैसे महान् महानुभावो ने इस दिशा मे कार्य करने की अनेक बार प्रेरणा की थी किंतु समाज पर उसका क्या प्रभाव पडा, सामने है। उस कार्य क्षेत्र में कार्य है, प्रसिद्धि कम है। प्रसिद्धि चाहने वाला उधर नही जा सकेगा। सच्ची सेवा व लगनवाला ही वहाँ टिक कर रह सकेगा। यदि हम नही करेंगे तो और कोई करेगा। कार्य अवश्य हो रहा और होगा, किन्तु उसकी गति कार्यकर्त्ताओ पर निर्भर रहेगी। हो सकता है उसका श्रेय अन्य को मिले। आपके इस महान् कार्य की सफलता हो इस भावना के साथ मेरी भावना स्वीकार करे।

श्री बा० दिगम्बरदास जैन, एडवोकेट, सहारनपुर

धन्य है आप को, कि जो काम विद्वान समय मुनियों, क्षुल्लकों, ब्रह्मचारियों द्वारा वर्षों पहले होना चाहिये था, वह न हो सका। पर आपने बड़ी सुन्दरताई से इस कार्य को किया है व आगे करने का प्रयत्न कर रहे हो। यह कार्य बहुत जरूरी था। जनगणना सन् १९७५ ई० से पहले हो जाना चाहिये था। खैर, सुबह का भूला शाम को घर आ गया तो अच्छा। हमारी जैन समाज खास तौर से दिगम्बर जैन समाज का तो गुरु ही अजीब है। मैं आपके कार्य की प्रशंसा करता हूँ।

श्री सिद्धान्ताचार्य पं० अगरचन्द जी नाहटा, बीकानेर

आपने एक बहुत ही महत्व का पवित्र कार्य प्रारम्भ किया है। आपके सफलता की शुभकामना करता हूँ। सरल हृदय से आपने उपयोगी जान-कारी दी है। भ० पार्श्वनाथ का चित्र भी बहुत सुन्दर है, इधर और जो जैन मूर्तियाँ मिली हो उनके भी चित्र प्रकाशित करें। आप जैसे कर्मठ लगकर कार्य करेंगे तो प्रचार कार्य में काफी सफलता मिलेगी। फिर आपके सहयोगी प्रेरणा स्रोत साधु व श्रीमन्त हैं आपको साधनों का अभाव भी नहीं होगा। वास्तव में जीवन लगाने की जरूरत है लोग थोड़ा काम करके छोड़ देते हैं, तो परिश्रम व्यर्थ हो जाते हैं। मुनि जयन्ती जी से वन्दना कहें।

कुछ सुझाव हैं इन्हें आप देखना और उचित उपयोग में लाना। वैसे आपने सावधानी पहले ही बरती है आगे भी बरतें ऐसी आशा है। इति-हास बनने में अब देरी नहीं है ऐसी आशा बँध रही है।

श्री पं० तेजपाल जी काला सम्पादक जैन दर्शन, नाँदगाँव

आपने यह प्रभावशाली कार्य अपने हाथ में लेकर जैन समाज के अभाव की पूर्ति का महान् बोझा उठाया है। आपके सिर पर पूज्य ऋषियों का, विद्वानों का और श्रीमन्तों का सदैव हाथ रहा है और वर्तमान में है। इसी बल से आप सफलता की ओर उत्साह से बढ़ रहे हैं और समाज को सराक बन्धुओं की बड़ी-बड़ी अनुभूतियों की जानकारी मिली है। आपका

माहित्य हजारो वर्षा तक पढा जायेगा ऐमा मेग विचार है। मेरी शुभ-कामना आपके साथ है।

श्री प० परमेष्ठीदास जी जैन न्यायतीर्थ सम्पादक 'वीर'

भाई, आपने अपने जीवन मे अनेको कार्य किये है बडी-बडी क्रातियाँ की है, आन्दोलन किये है और उनमे मफलता प्राप्त की। लेकिन 'सराक जाति' में जो भी कार्य आप कर रहे हैं वह मवसे श्रेष्ठ और आपके जीवन को अमर वनाने वाला है। पूर्ण लग्न से इस कार्य को कर डालिये मफलता अवश्य मिलेगी। कष्ट महने के आप आदी है अत जो वगाल, विहार की वाधायें है उन्हें आप शीघ्र निपटा लेंगे और आगे ममाज को सराक मम्वधी पूरी जानकारी देगे। वीच मे काय न छोडना चाहे शरीर रहे या न रहे। मेरी शुभकामना मफलता देगी।

श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन स० सम्पादक 'वीर' मेरठ

आप नवयुवको के लिये मर्दव प्रेरणा के स्रोत रहे है। जिम कार्य को कोई न करे उसे आप मदैव कर दिखाते हो, जैन जनगणना का कार्य आपकी स्मृति स्वरूप समाज मे रहेगा पर, मराक जाति का यह महान् कार्य आपकी अमर स्मृति वन जावेगा। पूज्य श्रद्धेय ब्र० शीतल प्रमाद जी और पूज्य श्रद्धेय श्री १०५ क्षु० गणेशप्रसाद जी वर्णी की भावना की पूर्ति आपके द्वारा अवश्य होगी ऐसी आशा है। हमारी शुभकामनायें आपके माथ है। नवयुवक सदैव की भाँति आपके माथ हैं।

श्रद्धेय स्व० प० माणिकचन्द जी जैन न्यायाचार्य, फिरोजावाद

चिरजीवी हो, शतायु होकर भी इसी तरह जैन ममाज की सेवा करते रहना, मेरा शुभाशीर्वाद है। जव-जव तुम्हारे कार्यो की प्रशमा सुनता हूँ और चर्चा सुनता व पढता हूँ तव-तव मुझे अति प्रमन्नता होती है। एक गुरु को अपने योग्य शिष्य पर गर्व होना स्वाभाविक है।

श्री सेठ मूलचन्द जी किसनदास जी कापडिया, सम्पादक 'जैनमित्र' सूरत

जैनमित्र मे सवमे पहले पूज्य ब्र० शीतलप्रमाद जी के लेख मराक

श्रीमान् सेठ सुनहरी लाल जी जैन रईस, आगरा

जैन ममाज की भूली विसरी श्रावक जाति की चर्चा मदैव सुनता था और उनके विपय की जानकारी की तीव्र इच्छा रहती थी, पर वह भावना जीवन में पूरी होती नजर नही आती दिखती थी। ऐसे निराश पूर्ण वातावरण में आपने जो अपने कर्मठ सहयोगियो के साथ कदम वढाया है और जो खोजवीन सराक जाति की है जिसे आपकी लिखी पुस्तको मे पढकर अपार हर्ष हुआ है और अधूरी भावना पूर्ण हुई। मेरा व मेरे परिवार का महयोग आपके साथ है। आप अपने इस महान् कार्य में सफल हो यही भगवान् जिनेन्द्र देव से प्रार्थना है।

लाला परसादी लाल जी पाटनी, दिल्ली

आपने एक पुस्तक सराक जाति की पूरी जनगणना परिश्रम करके की उसके लिये आपको जितना धन्यवाद दिया जाये उतना थोडा है। वातें करने में और काम करने मे रात दिन का अन्तर होता है। मैंने इस पुस्तक को ८-१० वार गहराई से देखा है आपने सारे इलाके मे फिर कर ४४२७ घरो की टटोल की और ३११६३ जनसख्या का पता लगा चुके। असली महावीर स्वामी के २५०० वा निर्वाण दिवस का कार्य तो आपने किया है अव उनको सभालने का कार्य भी सव आपका ही है इनमें से जिन आदमियो की रुचि और विशेप देखते हो उनको अपनी सभाओ मे मेरी राय मे वुलाना चाहिये तो आप उनके नाम व पूरे पते जिससे पत्र उनको मिल जाये। उनको भी दो चार सभाओ मे वुला लिया जाये जिससे उनका भी प्रेम व महयोग वढेगा अपने को तो उनको पूर्ण तरीके से अपनाना चाहिये। आपने जनगणना मे थोडी सी भी करके ५०-६० लाख की गिनती तक पहुँचे गये थे लेकिन दु ख है कि आपके काम छोड देने के वाद सरकारी गणना सिर्फ २७ लाख की ही आई। आपके प्रयत्न के लिये वहुत-वहुत धन्यवाद। पत्र देवें।

वैद्यरत्न आनन्ददास जैन (रजिस्टर्ड)

सराक जाति के लेखा-जोखा सवधी निम्न पुस्तकें "१ सराक वधुओ

जादोडीह, तमाड, नौढी, वुण्डु, वेडाडीह, गुटूहातु, पागुरा, माहील, मेगाऊ, मुन्दागी, खुण्टी, चोकाहातु, अडेदारु, पण्डाडीह, हाराडीह, दारला और जालटाण्डा ।

मिहभूमि जिले में मूल मगको के ग्राम—नवाडीह, चिपडी, मगडी, आगमिया, देवलटॉड तथा गगामाटी ।

इम प्रकार सिर्फ इन २६ ग्रामो के मगको के मध्य ही वेटी-रोटी का मम्वन्ध चलता है । २६ ग्रामो में २० ग्राम रांची जिला मे पडता है और ६ ग्राम सिहभूमि जिला में ।

(२) **सिकरिया सराक**—ये मिकरिया सगक के नाम मे जाने जाते हैं एव मूल मराको के साथ वेटी-रोटी का सम्वन्ध नही चलता है । मूल मगक सिकरिया मराक को निम्न-कोटी (Inferior category) का मानते है । मिकरिया मराको के सभी ग्रामो का नाम मुझे मालूम नही है । परन्तु हांसा, वडटोला, गजगांव, डोडमा और घाघग आदि ग्रामो में मिकरिया सगक निवाम करते है । इन ग्रामो का नाम आप अपनी तीसरी किताव "जैन मस्कृति के विस्मृत प्रतीक" मे पृष्ठ सख्या ५४ मे लिखे है ।

(३) **काडसी सराक**—ये काडमी मगक के नाम मे जाने जाते हैं । इन्हे मिकरिया से भी निम्न-कोटि का ममझा जाता है । इनके ग्रामो के वारे में मुझे मालूम नही है । मूल मगको के साथ काडमी मराक का कुछ मम्वन्ध नही हैं । परन्तु सिकरिया सराक और काटमी मगक में वटा वेतुका मामाजिक मम्वन्ध है । मिकरिया मगक काटसी मराक को वेटी देते है परन्तु काडमी सराक के घर मे शादी करते नही हैं । सिकरिया सगक और काटमी मराक दोनों का ही खान-पान शुद्ध है ।

इस तरह इम क्षेत्र के मगक तीन वर्गों में विभक्त हैं । परन्तु इतना निश्चित है कि तीनो ही वर्ग प्राचीन जैन मस्कृति का प्रतिनिधित्व करते है । विभाजन का कारण स्पष्ट नही है । परन्तु दन्त कथाओ मे ऐमा लगता है कि विभाजन का कारण इस जाति का कट्टर मामाजिक नियम ही हो मकता है ।

नित्य स्मरण (भावना)

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते सव जग जान लिया ।
मव जीवो को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ।।१।।
वुद्ध, वीर, जिन, हरि-हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो ।।२।।
नही सताऊ किसी जीव को, झूठ कभी नहिं कहा करू ।
पर धन वनिता पर न लुभाऊ, सतोपामृत पिता करू[२] ।।३।।
अहकार का भाव न रखू, नही किसी पर क्रोध करू ।
देख दूसरो की वढती को, कभी न ईर्षा भाव करू ।।४।।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल चित्तव्यवहार करू ।
वने जहाँ तक इस जीवन में, औरो का उपकार करू ।।५।।
वनकर सव "युगवीर" हृदय से, देशोन्नतिरति रहा करें ।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सव दु ख सकट सहा करें ।।६।।

---

१ यह स्मरण भावना मन की शाति का कारण है, इसे समस्त जैन शिक्षा-मस्थाओ में नित्य प्रार्थना के तौर पर सराक ऐरिया मे प्रचलित किया जा रहा है, आप भी नित्य स्मरण करें तो शाति मिले और अपने कर्त्तव्य का सही वोध हो ।

२ हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह (सग्रह) यह पाच पाप है, उनसे वचना चाहिये । इस सतोप रूपी अमृत से सुख मिलेगा ।

आत्म शांति के लिये ध्यान मंत्र

(मगक वनुओ ! ार्व सकटो मे वचने के लिये, तथा जात्म-गाति के लिये अपनी शक्ति प्रमाण व समयानुमार कोई मत्र आप जपे, गाति मिलेगी, कष्ट दूर होगा। यह ध्यान रहे, ध्यान करते ममय मा का अक्षर छूट न जाय और न जल्दवाजी हो। एक माला नित्य करें।

१ ॐ ह्री णमो अरिहताणम् ।।
२ ॐ ह्री णमो सिद्धाणम् ।।
३ ॐ ह्री अर्हत सिद्ध ।।
४ ॐ ह्री अर्ह असि आ उ सा नम ।।
५ ॐ ह्री चतुर्मुखसज्ञाय नम ।।
६ ॐ ह्री स्वर्गसोपानसज्ञाय नम ।।
७ ॐ ह्री सिद्धचक्रसज्ञाय नम ।।
८ ॐ ह्री पचमहालक्षणाय नम ।।
९ ॐ ह्री इन्द्रध्वजसज्ञाय नम ।।
१० ॐ ह्री अष्ट महाविभूति सज्ञाय नम ।।
११ ॐ ह्री सम्यग्दर्शनाय नम ।।
१२ ॐ ह्री सम्यग्ज्ञानाय नम ।।
१३ ॐ ह्री सम्यक्चारित्राय नम ।।
१४ ॐ ह्री वीतरागाय नम ।।
१५ ॐ ह्री श्री महावीराय नम ।।
१६ ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथाय नम ।।
१७ ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभुदेवाय नम ।।
१८ ॐ ह्री श्री आदिदेवाय नम ।।
१९ ॐ ह्री श्री ऋषभदेवाय नम ।।
२० ॐ ह्री श्री वीतरागाय जिनाय नम ।।
२१ ॐ ॐ ॐ ।। या ॐ नम , ॐ नम , ॐ नम ।

ध्यान करने योग्य महामंत्र (पंचनमस्कार मंत्र

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणम् ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणम् ।।

अर्थ—समस्त लोक के अरहता को नमस्कार हो, सिद्धो को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायो को नमस्कार हो और साधुओ को नमस्कार हो ।

यह ध्यान करने योग्य महामत्र कैसा है ?

एसो पचणमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो ।
मगलाण च सव्वेसिं, पढम हवई मगलम् ।।

अर्थ—ऐसे पचनमस्कार मत्र का स्मरण करने से समस्त पापो का नाश होता है, क्योकि यह महामत्र मगल दायक है सुखदायक है, इसके पढने से सुख प्राप्त होता है, यह सर्व सुख दाता प्रथम मगल है । (इस मत्र को नित्य पढना चाहिये) ।

मगल क्या ? उत्तम क्या ? और शरण किसकी ?

चत्तारि मगलम्, अरहता मगलम्, सिद्धा मगलम्, साहू मगलम्, केवलिपण्णत्तो धम्मो मगलम् ।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरण पव्वज्जामि, अरहते सरण पव्वज्जामि, सिद्धेसरण पव्वज्जामि, साहूसरण पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्त धम्म सरण पव्वज्जामि ।

अर्थ—चार मगल हैं—(१) अरहत मगल (२) सिद्धमगल (३) साधु मगल (४) और केवली द्वारा प्रज्ञप्त धर्म मगल ।

लोक में चार पदार्थ उत्तम है—(१) अर्हत उत्तम (२) सिद्ध उत्तम (३) साधु उत्तम (४) और केवली द्वारा प्रज्ञप्त धर्मउत्तम है ।

चार की शरण ग्रहण करो —(१) अरहतो की शरण में जाता हूँ (२) सिद्धो की शरण में जाता हूँ (३) साधुओ की शरण में जाता हूँ (४) और केवली द्वारा प्रज्ञप्त धर्म की शरण में जाता हूँ ।

चौबीस तीर्थंकर-दर्पण

नाम तीर्थंकर (भगवान)	पिता का नाम	माता का नाम	जन्म नगरी	वंश
१ श्रीऋषभनाथ	श्री नाभिराय	श्री मरुदेवी	अयोध्या नगरी	इक्ष्वाकु
२ ,, अजितनाथ	,, जितशत्रु	,, विजयसेना	,,	,,
३ ,, सम्भवनाथ	,, दृढ़राज्य	,, सुषेणा	श्रावस्ती	,,
४. ,, अभिनदननाथ	,, स्वयवर	,, सिद्धार्था	अयोध्या	,,
५ ,, सुमतिनाथ	,, मेघरथ	,, मंगला	,,	,,
६ ,, पद्मप्रभनाथ	,, धरण	,, सुसीमा	कौशाम्बी	,,
७ ,, सुपार्श्वनाथ	,, सुप्रतिष्ठित	,, पृथ्वीसेना	वाराणसी	,,
८ ,, चन्द्रप्रभनाथ	,, महासेन	,, लक्ष्मणा	चन्द्रपुर	,,
९ ,, पुष्पदत	,, सुग्रीव	,, जयरामा	काकदीपुरी	,,
१० ,, शीतलनाथ	,, दृढ़रथ	,, सुनदा	भद्रपुर (विदिशा)	,,
११ ,, श्रेयासनाथ	,, विष्णु	,, विपुलानदा	सिंहपुरनगर	,,
१२ ,, वासुपूज्य	,, वासुपूज्य	,, जयावती	चम्पानगर	,,

नाम तीर्थंकर (भगवान)	पिता का नाम	माता का नाम	जन्म नगरी	वंश
१३ श्री विमलनाथ	श्री कृतवर्मा	श्री अर्यश्यामा	कपिला	इक्ष्वाकु
१४ ,, अनन्तनाथ	,, सिंहसेन	,, जयश्यामा (लक्ष्मीमति)	अयोध्या	,,
१५ ,, धर्मनाथ	,, महासेन	,, सुव्रता	रत्नपुर	कुरुवंश
१६ ,, शान्तिनाथ	,, विश्वसेन	,, ऐरादेवी	हस्तिनापुर	इक्ष्वाकु
१७ ,, कुंथुनाथ	,, सूरसेन	,, श्रीकान्ता	,,	कुरुवंश
१८ ,, अरनाथ	,, सुदर्शन	,, मित्रसेना	,,	सोमवंश
१९ ,, मल्लिनाथ	,, कुम्भ	,, प्रजावति	मिथिला	इक्ष्वाकु
२० ,, मुनिसुव्रतनाथ	,, सुमित्र	,, सोमा	राजगिरि	(हरिवंश यादव)
२१ ,, नमिनाथ	,, विजय	,, वप्पिला	मिथिला	इक्ष्वाकु
२२ ,, नेमिनाथ	,, समुद्रविजय	,, शिवादेवी	द्वारिकापुरी	हरिवंश (यादव)
२३ ,, पार्श्वनाथ	,, विश्वसेन	,, ब्रह्मादेवी (वामादेवी)	वाराणसी	उग्रवंश
२४ ,, महावीर	,, सिद्धार्थ	,, त्रिसलादेवी	कुंडनपुर	नाथवंश

नोट—१ भगवानऋषभ देव को आदिनाथ स्वामी, पुष्पदंतस्वामी को सुविधिनाथ स्वामी और भगवान् महावीर स्वामीको-वीर, अतिवीर, सन्मति तथा वर्द्धमान स्वामी के नाम से भी स्मरण करते हैं। सराक जाति में इन्ही तीर्थंकरो के नाम पर तथा गणधरो के नाम पर गोत्र हैं तथा वंश भी इसी तरह से हैं। यादव वंशी मेदनीपुर में हैं जो भ० नेमनाथ और नारायण कृष्ण के उपासक हैं गोत्र कृष्ण है।

चौवीस तीर्थंकरों के नाम (छन्द रूप में) याद कीजिये

ऋपभ अजित सम्भव अभिनदन,
सुमतिपदम सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयासजिन,
वासुपूज्य पूजित सुर राय ।।
विमल अनत धर्म जन उज्वल,
शाति कुथु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नम्मिनेमि पार्श्व प्रभु,
वर्द्धमान पद पुष्प चढाय ।।

●

चौबीस तीर्थंकरों के चिह्न (छन्द रूपमे) याद कीजिये

ऋपभनाथ का जु "वृपभ" जान । अजितनाथ के "हाथी" मान ।।
सम्भव जिनके "घोडा" कहा । अभिनन्दन पद "वन्दर" लहा ।।
सुमतिनाथ के "चकवा" होय । पद्मप्रभु के "कमल" जु होय ।।
सुपार्श्वनाथ के "सथिया" कहा । चन्द्रप्रभुपद "चन्द्र" जु लहा ।।
पुष्पदतपद "मगर" पिछान । "कल्पवृक्ष" शीतल प्रभु मान ।।
श्री श्रेयासपद "गेंडा" होय । वासुपूज्य के "भैंसा" जोय ।।
विमलनाथ पद "शूकर" मान । अनन्तनाथ के "सेही" जान ।।
धर्मनाथ के "वज्र" कहाय । शातिनाथ पद "हिरन" लहाय ।।

कुथनाथ पद "वकरा" जान । अरहनाथ के "मीन" जू मान ॥
मल्लिनाथ पद "कलसा" कहा । मुनिसुव्रत के "कछुआ" लहा ॥
"लाल कमल" नमिजिनके होय । नेमनाथ "पदशख" जु होय ॥
पार्श्वनाथ के "सर्प" जु कहा । वर्द्धमान पद "सिंह" ही लहा ॥

नोट—प्रत्येक तीर्थंकर के चरणो मे या उसके नीचे ऊपर कहे हुए चिह्न अंकित होते हैं, इसी से पहचाने जाते हैं कि यह कौन से भगवान् या तीर्थंकर हैं । इन चिह्नो को कण्ठस्थ करके जब भी कही आपको प्राचीन या अर्वाचीन प्रतिमायें दिखे और उनके नीचे चिह्न दिखे तभी पहचानो कि यह जैन मूर्ति है और किस तीर्थंकर की है । इससे फिर भ्रम न रहेगा कि यह मूर्ति किस धर्म के अवतार की है ।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों के पंचकल्याणक दिवस

गर्भ, जन्म, तप, केवल और मोक्षकल्याण

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुक्ल) पक्ष
चैत्र मास	
४ चौथ—भ० अनन्तनाथ स्वामी (मोक्ष कल्याणक)	१ पढवा—भ० मल्लिनाथ स्वामी (गर्भ कल्याणक)
४ चौथ—भ० पार्श्वनाथ स्वामी (ज्ञान कल्याणक)	३ तीज—भ० कुंथुनाथ स्वामी (ज्ञान कल्याणक)
५ पचमी—भ० चन्द्रप्रभु स्वामी (गर्भ कल्याणक)	५ पचमी—भ० अजितनाथ स्वामी (मोक्ष कल्याणक)
८ अष्टमी—भ० शीतलनाथ स्वामी (गर्भ कल्याणक)	६ छठ—भ० सम्भवनाथ स्वामी (मोक्ष कल्याणक)
९ नवमी—भ० आदिनाथ स्वामी (जन्म-तप कल्याणक)	११ एकादशी—भ० सुमतिनाथ स्वामी (जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष कल्याणक)
१५ अमावस्या—भ० अरहनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)	,,
१५ अमावस्या—भ० अनन्तनाथस्वामी (ज्ञान कल्याणक)	१३ त्रयोदसी—भ० महावीर स्वामी (जन्म कल्याणक)
	१५ पूर्णिमा—भ० पद्मप्रभुस्वामी (ज्ञान कल्याणक)
वैशाख मास	
२ दोयज—भ० पार्श्वनाथ स्वामी (गर्भ कल्याणक)	१ पढवा—भ० कुंथुनाथस्वामी (जन्म-तप-मोक्षक०)
९ नवमी—भ० मुनिसुव्रतनाथस्वामी (ज्ञानकल्याणक)	६ छठ—भ० अभिनंदनस्वामी (गर्भ मोक्ष कल्याणक)

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुक्ल) पक्ष
१० दसवीं—भ० मुनिसुव्रतनाथस्वामी (जन्म-तप क०)	८ अष्टमी—भ० धर्मनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)
१४ चतुर्दशी—भ० नमिनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)	१० दसमी—भ०महावीरस्वामी (ज्ञानकल्याणक)

जेष्ठ मास

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुक्ल) पक्ष
८ अष्टमी—भ०श्रेयांसनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	४ चौथ—भ० धर्मनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)
१० दसमी—भ०मल्लिनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	१२ द्वादसी—भ०सुपार्श्वनाथस्वामी (जन्म-तप क०)
१२ द्वादसी—भ०अनंतनाथस्वामी (जन्म-तप कल्या०)	
१४ चतुर्दशी—भ०शान्तिनाथस्वामी (जन्म-तप-मोक्षक०)	
१५ अमावस्या—भ०अजितनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	

अषाढ मास

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुक्ल) पक्ष
२ दोयज—भ०आदिनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	६ छठ—भ०महावीरस्वामी (गर्भकल्याणक)
६ छठ—भ०वासुपूज्यस्वामी (गर्भकल्याणक)	८ अष्टमी—भ०नेमनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)
८ अष्टमी—भ०विमलनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)	
१० दसमी—भ०नमिनाथस्वामी (जन्म-तप कल्याणक)	

सावनमास

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुक्ल) पक्ष
२ दोयज—भ०मुनिसुव्रतनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	२ दोयज—भ०सुमतिनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)
१० दसमी—भ०कुंथुनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	६ छठ—भ०नेमनाथस्वामी (जन्म-तप-कल्याणक)

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुल्ल) पक्ष
	७ सप्तमी—भ०पार्श्वनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)
	१५ पूर्णमासी—भ०श्रेयासनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)

भादौं मास

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुल्ल) पक्ष
७ सप्तमी—भ०शातिनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	६ छठ—भ०सुपार्श्वनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)
	१४ चतुर्दशी—भ०वासुपूज्यस्वामी (मोक्षकल्याणक)

असौज मास

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुल्ल) पक्ष
२ दोयज—भ०नमिनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	१ पढवा—भ०नेमनाथस्वामी (ज्ञानकल्याणक)
	८ अष्टमी—भ०शीतलनाथस्वागी (मोक्षकल्याणक)
	८ अष्टमी—भ०पुष्पदतस्वामी (मोक्षकल्याणक)

कार्तिकमास

वदी (कृष्ण) पक्ष	सुदी (शुल्ल) पक्ष
१ पढवा—भ०अनतनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)	२ दोयज—भ०पुष्पदतस्वामी (ज्ञानकल्याणक)
४ चौथ—भ०सम्भवनाथस्वामी (ज्ञानकल्याणक)	६ छठ—भ०नेमनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)
१५ अमावस्या—भ०महावीरस्वामी (मोक्षकल्याणक)	१२ द्वादसी—भ०अरहनाथस्वामी (ज्ञानकल्याणक)
	१३ त्रयोदसी—भ०पद्मप्रभुस्वामी (जन्म-तप कल्याणक)
	१५ पूर्णमासी—भ०सम्भवनाथस्वामी (जन्मकल्याणक)

वदी (कृष्ण) पक्ष

१५ अमावस्या—भ०श्रेयासनाथस्वामी (ज्ञानकल्याणक)

सुदी (शुक्ल) पक्ष

९ नवमी—भ०अजितनाथस्वामी (तपकल्याणक)
१० दसमी—भ०अजितनाथस्वामी (जन्मकल्याणक)
१२ द्वादशी—भ०अभिनदनस्वामी (जन्म-तपकल्याणक)
१३ त्रयोदशी—भ०धर्मनाथस्वामी (जन्म-तपकल्याणक)

फागुन मास

४ चौथ—भ०पद्मप्रभुस्वामी (मोक्षकल्याणक)
६ छठ—भ०सुपार्श्वनाथस्वामी (ज्ञानकल्याणक)
७ सप्तमी—भ०सुपार्श्वनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)
७ सप्तमी—भ०चन्द्रप्रभुस्वामी (ज्ञानकल्याणक)
९ नवमीं—भ०पुष्पदतस्वामी (गर्भकल्याणक)
११ एकादशी—भ०आदिनाथस्वामी[१] (ज्ञानकल्याणक)
११ एकादशी—भ०श्रेयासनाथस्वामी (जन्म-तपकल्याणक)
१२ द्वादसी—भ०मुनिसुव्रतनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)
१४ चतुर्दशी—भ०वासुपूज्यस्वामी (जन्म-तपकल्याणक)

३ तीज—भ०अरहनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)
५ पचमी—भ०मल्लिनाथस्वामी (मोक्षकल्याणक)
७ सप्तमी—भ०चन्द्रप्रभुस्वामी (मोक्षकल्याणक)
८ अष्टमी—भ०सम्भवनाथस्वामी (गर्भकल्याणक)

नोट—(१) इन पाँचो कल्याणको के दिन भगवान् की पूजा (जिसके नाम का कल्याणक हो उसकी) करनी चाहिये, यदि पूजा न मिले और समय कम हो तो यह मंत्र बोलें
ॐ ह्रीं भगवान आदिनाथ जिनेन्द्राय ज्ञान-कल्याणकायनम अर्घं । (या जिसका कल्याणक हो उसका नाम बोलें) ।

श्रावक (सराक) के तीन लक्षण

१. जल छान कर पीना। २ रात्रि में भोजन न करना। ३ प्रभु दर्शन पूजा अथवा जिन भक्ति उपासना करना।

सराक (श्रावक) आठ चीजों से बचते हैं

मराक जाति में प्रसिद्ध गोत्र

आदिदेव, ऋषभदेव, शांतिदेव, अनन्तदेव, कृष्णदेव, जिगनेश (जिनेश) गौतम, सांडिल्य, पाराशर, ब्रह्मदेव, भारद्वाज, वत्सराज आदि पाये जाते हैं[1]। टाइटिल भी इनके मराक, मांझी, मंडल, चौधरी, यादव सिंह, नायक आदि हैं।

०

१ इन सब गोत्रो का वर्णन लेखक की लिखी पुस्तको (मराक बन्धुओ के बीच, मराक हृदय, जैन संस्कृति के विस्मृत प्रतीक और इसी पुस्तक में पढ़ें)।

	स्थान	पो०	घर	जनसंख्या	कमी क्या	पूर्ति लागत	गोत्र
९	ऊपरबघा	,,	९	५०	चित्र भ० पार्श्वनाथ-महवीर	१०००)	,, ,,
१०	वेलु जा	वाटविनोर	१०	५५	वाचनालय	१०००)	आदि देव
१२	भुजडी	मुहाल	१०	६०	औपधि	१०००)	शाति देव
१२	आसनसोल	,,	२२ गुजराती	११ + २३५	,,	६०००)	आदि देव
			२१४	१३३६		३६०००)	

पुरलिया जिला

	स्थान	पो०	घर	जनसंख्या	कमी क्या	पूर्ति लागत	गोत्र
१३	ठाकुरदी	कालूहर	४०	२५०	जैन भवन	१०,०००)	आदिदेव,धर्मदेव,गौत्तम,साडिल्य
१४	धारकीडी	,उदयपुर	७०	४५०	,, कुआँ	१२,५००)	आदि ०, धर्म, अनत, साडिल्य
१५	उदयपुर	,,	१७	१३०	जैन भवन, वाचनालय	५०००)	आदि० गौतम साडिल्य
१६	भडारकुली	वेहडा	१०	६५	औषधि	६०००)	आदिदेव
१७	अनाई जामवाद	पुरलिया	प्राचीन मूर्ति स्थान मंदिर निर्माण			५००००)	में हो गया है।
१८	पाकवीर	लालपुर	,,	,,	,,	३०००)	—
१९	केलाही	भवरेडी	७०	४७५	जैन भवन, औपधि	१०,०००)	आदिदेव, अनत, साडिल्य
२०	केहली डी	भवरेडी	१५	९५	,,	६००)	,,
२१	जवडरा	झापडा	६५	४२५	×	×	आदिदेव, साडिल्य
२२	झापड़ा	,,	७५	५२६	जैन भवन	१०,०००)	आदि अनतधर्म सित्तमम,सांडिल्य

स्थान	पो०	घर	जनसंख्या	कमी क्या	पूर्ति लागत	गोत्र
३९ झरिया	—	२०	१७५	×	×	अग्रवाल, खण्डेलवाल
		७४७)	५१०३		१३६००)	
			रघुनाथपुर ऐरिया			
४० नूतडी	तोड़माफड़ा	५०	३५०	कुआ	२०००)	ब्रह्मपुरी, आदिदेव धर्म०
४१ लुचिया	रामकनाली	२०	१३०	पुस्तकालय	५००)	आदिदेव, धर्मदेव, साडिल्य
४२ जुनागदडी	,,	४०	२५०	×	×	,, ,,
४३ पातरबन	मुगाडी	५	२८	×	×	आदिदेव
४४ गोराग	रामकनाली	२४	१५०	×	×	धर्मदेव, साडिल्य
४५ वृन्दावनपुर	,,	८	४९	×	×	आदिदेव, धर्मदेव,
४६ लक्ष्मनपुर	,,	८	५२	कुआ	२०००)	आदिदेव, ऋषभदेव
४७ मिनेडा	मिनेडा	८०	४५०	वाचनालय	३०००)	,, साडिल्य
४८ मिमकल	जागुड़ीवाडी	५	३१	×	×	,, आदिदेव
४९ केलाही	मिनेडा	१५	८५	वाचनालय	५००)	,, ब्रह्मपुरी
५० मिगरेटान	,,	२८	२५५	×	×	धर्मदेव
५१ अपरग्यजरा	,,	१२	८२	×	×	,,
५२ गजरा	,,	६०	८३५	वाचनालय	५००)	आदिदेव, धर्मदेव, साडिल्य

जिला वर्द्धमान, बाकुडा (प० बंगाल) और राँची (बिहार)

वर्द्धमान जिले के ग्रामों का दर्पण

	स्थान	पो०	घर	जनसख्या	कमी क्या	पूर्ति लागत	गोत्र	
							आदिदेव,	वर्मदेव
१	देंदुआ	सालानपुर	१२	१०५	जैनभवन	५०००)		
२	सालानपुर	,,	२८	१५५	×	×	,,	,,
३	सावनपुर	,,	३	२१	जैनचित्र	१००)	,,	×
४	सुदिका	,,	४	३१	,,	,,	,,	×
५	लालवाजार	लालवाजार	३०	३०१	जैनमन्दिर बंगला वाचनालय	१५०००)	,,	
६	कुल्टी	कुल्टी	१	१५	×	×	,,	
७	वागनपुर	वागनपुर	१०	१०९	×	×	,,	
८	दोहमानी	दोहमानी	२८	२०१	जैनमदिर पुस्तकालय	५०००)	,,	ऋषभदेव
९	जिमहारी	सालानपुर	२६	५४	जिनचैत्यालय	५०००)	,,	×

	स्थान	पो०	घर	जनसख्या	कमी क्या	पूर्ति लागत	गोत्र
२६	सत्ता	पानोडिया	२	२२	×	×	,,
२७	सालकुडा	गिरियाविहार	१५	१२५	×	×	,,
२८	कानगोई	निहिजाम ,,	८	८१	वाचनालय	२०००)	,,
२९	मिहिजाम	,, ,,	२०	२००	जिनमदिर	३००००)	×
			४११	३६४०		८३४००)	

रांची (बिहार) ऐरिया के ग्रामों का दर्पण

सिंह भूमि के ग्रामों का दर्पण

	स्थान	पो०	घर	जनसख्या	कमी क्या	पूर्ति लागत	गोत्र
३०	निवाडी	टीकर	७०	५५४	हाईस्कूल तथा मदिर मरम्मत	१००००)	आदिदेव, धर्मदेव, गौतम, साडिल्य, वत्सराज
३१.	रागाभाटी	,,	१	८	×	×	आदिदेव
३२	देवलटाड	,,	२५	२००	पाठशाला व औषधालय	५०००)	,, गौतम
३३	रूगडी	,,	२५	२२५	औषधालय	२०००)	,, धर्मदेव
३४	अगसिया	,,	२५	२७५	,,	,,	,, वत्सराज
३५	चौपडी	,,	१५	१२०	,, , पाठशाला	५०००)	,,
३६	तडाई	रडगाव	३५	१९०	×	×	,, साडिल्य, वत्सराज
३७	रडगाव	,,	८	७५	पाठशाला	२०००)	,, धर्मदेव

जिला दुमका-सिंहभूमि (संथाल परगना) बिहार के ग्रामों का दर्पण

स्थान	पो०	घर	जनसख्या	कमी क्या	पूर्ति लागत	गोत्र
१. जामताडा	जामताडा	३	१८	×	×	आदिदेव
२. विन्ध्यापाथर	खास	२०	२७६	औषधालय, पुस्तकालय	१०००)	,,
३ कडया	कडया	३६	३०८	पाठशाला जैन	१०००)	ऋषभदेव
४ आमलाजोडी	कूलडागल	६	५२	×	×	,,
५. घासनिया	घासनिया	४	६१	जैनकलैंडर व पत्र	२००)	,,
६ वृन्दावनी	वृन्दावनी	२	११	×	×	,,
७. विलकान्दी	विलकान्दी	११	९८	औषधालय होम्यो	१०००)	,,
८. जयतारा	,,	५	४५	×	×	,,
९. बासुकुली	,,	२	१६	×	×	,,
१०. सीलाजोडी	,,	२	१६	×	×	,,
११. हाडजुडिया	,,	२	२१	×	×	,,
१२. शादीपुर	शादीपुर	२	१८	×	×	,,
१३. बोलिहारपुर	खास	५	४२	×	×	,,

उड़ीसा प्रांत के ग्रामों का दर्पण

जिला—जगन्नाथपुरी[1]

क्रम स०	ग्राम नाम	पोस्ट	घर	जनसख्या	गोत्र	प्रमुख सज्जन
१	माईघर पाडा	माईघर पाडा	१४	१२६	काशी साहू	श्री दैत्यारी साहू
२	हीरापुर	,,	४	३६	,, ,,	,, ,,
३	रथी जना	,,	१४	१२६	नाग सेनापति	श्री वीरधर सेनापति
४	बालकटी	बालकटी	१८	१७२	,, ,,	श्री माध गुनी सेनापति
५	वनमालापुरी	,,	२४	२१६	,, ,,	श्री बाहुरी बाँध सेनापति
६	वारामन	,,	१५	१३५	,, ,,	श्री पूर्णचन्द्र सेनापति
७	अदलाबाद	,,	१२	१०८	जिगनेश	,, भूधर दास
८	हरिपुर	,,	७	८२	सेनापति	,, तुरग सेनापति
९	बालिहा	बागुरशा	१०	९०	काशी नाग	,, सोमनाथ नायक
१०	भिरखिया	,,	८	७२	,, ,,	,, कृष्ण मेला नाथ
११	बांगुरशा	,,	२७	२४३	जिनेश	,, जगन्नाथ साहू

१ ग्रामो का पूरा वर्णन अगली पाचवी पुस्तक में छपेगा ।

मक्र सं०	ग्राम नाम	पोस्ट	घर	जनसंख्या	गोत्र	प्रमुख सज्जन
२९	डीहा	तारावोई	३	२८	,, दास	श्री तुरगदास
३०	वोडगग	,,	५	२८	,, दास	,, लोकनाथ दास
३१	रहताभाटी	,,	७	५६	,, सेनापति	,, वादिभ सेनापति
३२	कलाराझर	,,	१०	८२	,,	,, वनमाली साहू
३३	कुद पटना	कुद पटना	२८	२५२	काशी-नाग	,, नटनरदास-नायक
३४	नीमापडा	,,	११	८६	,, ,,	,, पवनकुमार नायक
३५	वेदापुरी	वेदापुरी	७०	५६०	,, ,,	,, वृन्दावन पुष्टि
३६	वालिपटना	,,	२८	२२८	जिनेश	,, वाहुबली साहू
			६८४	६००५		

जिला-बरहमपुर गंजम[१]

क्रम नं०	ग्राम नाम	पोस्ट	घर	जनसंख्या	गोत्र	प्रमुख सज्जन
१	बरहमपुर	बरहमपुर	२३	२०७	जिनेश० पुराण	श्री अर्जुनदास राउत
२	केन्द्रीपुनिया	केन्द्रीपुनिया	५०	८५०	,,	श्री मधुसूदन साहू
३	मौकर झारा	,,	१५	१३५	,,	,, यदुनाथ साहू
४	अनुल कुथर	,,	२०	१८०	,,	,, भगवदत्त साहू
५	गर रापुर	,,	१०	१०३	,,	,, कुमुदाकर साहू
६	मगोडा	काटू	१५	१३६	,,	,, शिवनाथ साहू
७	रनाकाटा	,,	६	५८	,,	,, श्री रंग साहू
८	काटू	,,	१२३	११०७	,,	,, कृष्णाकर साहू, श्री उमापति साहू
			२६२	२३७२		

१ इन ग्रामों का पूरा विवरण पांचवी पुस्तक मे छपेगा ।

जिला-दुमका, सिंहभूमि (सन्थाल परगना)
तथा वीर भूमि के ग्रामों का वर्णन

जामताड़ा -पो०-जामताड़ा, थाना-जामताड़ा, जि०-दुमका। सन्थाल परगना।

जैन तीर्थङ्करों के चित्र (कैलेंडर) चाहते हैं। णमोकार मंत्र जानते हैं। खान-पान शुद्ध है बाहर भी शुद्ध खान-पान चलता है।

प्रमुख सज्जन १ श्री आनंद गोपाल सिंह २ श्री धरणीधर सिंह ३ श्री प्रभात कुमार सिंह।

वृन्दावनी—पो०—खास, थाना-रानीश्वर, जि०—सन्थाल परगना।

सराकघर–२, संख्या–१०, गोत्र–आदिदेव।

खेती व नौकरी करते हैं। णमोकार मंत्र कोई नही जानता। खान-पान शुद्ध है। पढे-लिखे एक दो पोस्ट ग्रेजुयेट युवक हैं।

प्रमुख सज्जन १ श्री राधेश्याम मंडल M A २ श्री दिवाकर मंडल ३ श्री प्रभाकर मंडल।

विलकान्दी—पो०—खास, थाना—रानीश्वर, जि०—सन्थाल परगना।

सराकघर–११, संख्या–९८, गोत्र–आदिदेव ऋषभदेव। पढे लिखे पोस्ट ग्रेजूयेट कई हैं। खान-पान शुद्ध हैं, जैन आचार का पालन घर-घर में है श्रीराम कृष्ण मिशन का प्रभाव इस गांव में पाया उन्ही के भक्त है। जैन महामंत्र कोई नही जानता और न यह भी जानते कि हमारे कुल देवता कौन हैं। क्योंकि यहां कोई जैन साधु या व्रती विद्वान् आता तो नही न आया।

बीहड घना जंगल पार करके इस ग्राम मे जाया जाता है, कष्ट साध्य मार्ग है, आदमी एक बार तो घबडा जाता है।

खेती, व्यापार और नौकरी करते हैं। प्राइमरी, मिडिल स्कूल हैं, औषधि का प्रबन्ध नही है। लडकियां भी पढी है। दहेज प्रथा मे परेशान हैं। सामाजिक बंधन के मानने वाले हैं।

प्रमुख सज्जन १ श्री धरणीधर राय २ श्री नारायण मंडल ३ श्री शांति पद मंडल ४ श्री धरणी धर मंडल।

जयतारा—पो०—विलकान्दी, थाना—रानीश्वर, जि०—सन्थाल परगना।

सराकघर—५, संख्या–४५, गोत्र–आदिदेव, ऋषभदेव।

सराकघर—५, संख्या—८२, गोत्र—आदिदेव, ऋषभदेव।

यह गाँव सुन्दर व स्वच्छ है, पढ़े-लिखे पोस्ट ग्रेजुएट तक युवक हैं कलकत्ता जैसी महानगरी में परमिट आफीसर सराक बन्धु हैं, दहेज प्रथा से परेशान हैं। गोरा मिलनसार हैं। खेती व नौकरी करते हैं। रास्ता काफी कष्टदायक सिद्ध हुआ। सराकों का दहेज प्रथा बंद करने के लिये सम्मेलन चाहते हैं। पचायत आफीसर भी इस ग्राम के सराक हैं। णमोकार मंत्र एक दो सज्जन जानते हैं।

प्रमुख सज्जन १ श्री गोविंद चन्द्र माल २ श्री नरेन्द्र सिंह।

भागाबाद-पो०—बोलिहारपुर, थाना—मुहम्मद बाजार, जि०—वीरभूमि,

सराकघर—१२, संख्या—१०८, गोत्र—ऋषभदेव।

बोलिहारपुर से सम्बन्धित ग्राम है अतः सभी कार्य इसी ग्राम से पूरे होते हैं, १॥ मील का फासला है दोनों ग्रामों में।

ग्रेजुएट व इन्टर पास लड़के-लड़कियां हैं। बांग्ला साहित्य चाहते हैं। खेती व नौकरी करते हैं। णमोकार मंत्र कुछ वृद्ध जानते हैं। तीर्थ क्षेत्रों की वंदना करने के इच्छुक हैं। दहेज प्रथा से परेशान हैं। खान-पान शुद्ध है कोई-कोई युवक प्याज लेने लगे हैं जिससे ग्राम वाले चिंतित हैं। स्टेट बैंक बोलिहारपुर में दो सराक बन्धु अच्छी पोस्ट पर हैं। रास्ता टूटा-फूटा है, पैदल चलने में आराम मिलता है।

प्रमुख सज्जन १ श्री गौर सुन्दर मंडल २ श्री तारापद मंडल बी० काम, ३ श्री द्वारकानाथ मंडल ४ श्री शिवनाथ सिंह मंडल।

डुमका—पो०—खास, थाना—खास, जि०—खास।

सराकघर—२, संख्या—१२, गोत्र—आदिदेव।

भागलपुर से ८ मील के लगभग है, अच्छा जिला है, न्यूयार्क (अमेरिका) व लन्दन रिटर्न दो योग्य इंजीनियर श्री अतुल कृष्ण मंडल और श्री नवकृष्ण मंडल हैं। दोनों मिलनसार धार्मिक सज्जन हैं। समाज की दशा से चिंतित हैं। दहेज ने जो जोर पकड़ा है इसके लिये वह सम्मेलन के इच्छुक हैं। वह अपनी जाति से भी पूरे परिचित नहीं हैं, उन्हें यह जानकर प्रसन्नता

सालदही—पो०—नाला, थाना—नाला, जि०—सन्थाल परगना।

सराकघर—६, सख्या—६८, गोत्र—आदिदेव।

विशेष—रास्ता अतिविकट है, जाने-आने में अधिक परेशानी है, जगल चारो ओर घना है। तीन वर्ष पूर्व यहाँ एक विशाल सराक जैन सम्मेलन बुलाया गया था, जो अपने समय का सर्वश्रेष्ठ सम्मेलन था, जिसमें स्व० श्री मालविजयजी महाराज ने भाग लिया था। उसके बाद से आज तक कोई आया गया नही, इसी से लोगो का विश्वास जैनधर्म से हट गया और डरते हैं, जैनियो से बात करते हुए, क्योकि जैनी कहते हैं, करते नही ऐसी उनकी नही धारणा बैठी है।

उन्हे सभी तरह समझाया, वह पुन एक सम्मेलन सराको का चाहते है। तथा जैन समाज से विश्वास चाहते हैं कि वह पीछे तो नही हटेगी। णमोकार मत्र कुछ लोग जानते हैं। खान-पान शुद्ध है।

प्रमुख सज्जन १ श्री भोलानाथ माजी २ श्री पूर्णचन्द्र माजी ३ श्री गोविन्द माजी।

कु डहित—पो०—खान, थाना—खान, जि०—दुमका (सन्थाल परगना)।

सराक घर—१४, सख्या—१४३, गोत्र—आदिदेव।

लम्बा सफ़र पार करने के बाद यह स्थान प्राप्त हुआ। धूल ही धूल है, कच्चा रास्ता है, (सरकार अब रास्ता पक्का बना रही है) यहाँ पर हाई स्कूल, मिडिल स्कूल हैं। ब्लाक का आफिस है, सराक बन्धुओ में मास्टर, डाक्टर भी दो तीन हैं। दहेज प्रथा से परेशान हैं। खेती, नौकरी व व्यापार करते है। खान-पान शुद्ध है, णमोकार मत्र जानते हैं। अस्पताल भी यहाँ है। सम्पन्न कस्बा है।

विशेष—इस ग्राम तक आते-जाते मेरी जीप का पेट्रोल समाप्त हो गया। इस जगह पर पैट्रोल पम्प नही है अत हम सकट में पड गये। चारो ओर पेट्रोल की दौड धूप की, साथ के बधु श्री रतनलाल जैन को एक मारवाडी बधु का पता लगा वह उन्ही पर पहुँचे और अपनी मारवाडी भाषा मे बोले, वह बधु पिघले और अपनी गाडी का पेट्रोल उन्होने हमें

णमोकार मत्र जानते हैं। खेती, नौकरी, व्यापार करते हैं। पोस्ट ग्रेजूयेट व ग्रेजूयेट कई सज्जन हैं।

प्रमुख सज्जन १ श्री गनपत मडल, २ श्री धरणेन्द्रकुमार मडल, ३ श्री द्वारिकादास मडल, ४ श्री मोतीलाल मडल।

महीसामु डा—पो०–नाला, थाना–नाला, जि०–सन्थाल परगना।

सराकघर—५, सख्या–४२, गोत्र–आदिदेव।

रास्ता टूटा-फूटा, पैदल चलने से लाभ हैं, मध्यम दर्जे के कृषक दहेज प्रथा से भयभीत है। णमोकार मत्र कोई नही जानता। खान-पान शुद्ध है।

प्रमुख सज्जन १ श्री भोलाराम मडल, २ श्री सनातन माजी, ३ श्री सुधीर माजी।

डुमरा—पो०–फालाजोडी, थाना–कुडहित, जि०–सथाल परगना।

सराक घर—२२, सख्या–२७५, गोत्र–आदिदेव, ऋषभदेव।

ग्राम बडा है, साफ व स्वच्छ है, नवयुवक नवयुवतिया पढी लिखी है। ग्रेजूयेट, पोस्ट ग्रेजूयेट, डॉक्टर, मास्टर भी यहाँ है। दहेज प्रथा से दुःखी नही प्रतीत हुए, क्योकि उनका कहना है कि डके की चोट जब लेते है तो डके की चोट देते भी है। रही समाज की दशा सो समाज जब एक जगह बैठें और विचारे तो हम भी उसके साथ है अभी तो खुली छूट लेने देने में है। नतीजा क्या होगा भगवान् जाने आदि। नवयुवको ने बडी सफाई से बातें सामने रखी। कुडहित से ४ मील दूर ग्राम है। हाईस्कूल की शिक्षा यही लेते है। णमोकार मत्र जानते है। खान-पान शुद्ध है।

प्रमुख सज्जन १ श्री मगलप्रसाद चौधरी, २ श्री मदन माजी, ३ श्री बद्रीनाथ मडल, ४ श्री द्वारकानाथ माजी, ५ श्री हरिपद मडल।

पालाजोंडी—पो०–खास, थाना–कुडहित, जि०–सन्थाल परगना।

सराकघर—१, सख्या–९, गोत्र–आदिदेव।

धार्मिक परिवार, कृषि करते है, श्री सनातन माजी है।

नइजोडी—पो०—बागाजोरी, थाना—कुण्डहित, जि०—संथाल परगना ।

सराकघर—२५, संख्या—१९५, गोत्र—आदिदेव ऋषभदेव ।

पढ़े लिखे स्त्री पुरुष हैं, तीन सज्जन उच्च शिक्षा प्राप्त हैं (पोस्ट ग्रेजुएट व ग्रेजुएट हैं) सराक जैन सम्मेलन चाहते हैं । मन्दिर (जिन) भी चाहते हैं और बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ णमोकार मंत्र भी चाहते हैं । बंगला का जैन साहित्य चाहते हैं । खान-पान शुद्ध है । औषधि का प्रबन्ध नहीं है । णमोकार मंत्र कुछ जानते हैं ।

"चौधरी" टाईटिल यहाँ लगा मिला ।

प्रमुख सज्जन १ श्री पन्नालाल चौधरी, २ श्री अतुलचन्द्र चौधरी ३ धीरेन्द्र मांझी, ४ श्री शशिधर चौधरी, ५ श्री गोपाललाल मण्डल ।

भागाडीह—पो०—बागाजोरी, थाना—कुण्डहित, जि०—संथाल परगना ।

सराकघर—२, संख्या—२१, गोत्र—आदिदेव ।

खेतीबाड़ी करते हैं, सब पढ़े लिखे हैं, शुद्ध खान-पान है, णमोकार मंत्र जानते हैं ।

प्रमुख सज्जन १ श्री नरसिंह चौधरी, २ श्री बिहारी चौधरी हैं ।

चन्द्रडीह—पो०—बागाजोरी, थाना—कुण्डहित, जि०—संथाल परगना ।

सराकघर—६, संख्या—५८, गोत्र—आदिदेव ।

यहाँ पढ़े लिखे मास्टर, डाक्टर, इन्जीनियर भी बसते हैं । खान-पान शुद्ध है, णमोकार मंत्र नहीं जानते । दहेज से भयभीत हैं । खेती, नौकरी करते हैं ।

प्रमुख सज्जन १ श्री बाबूलाल चौधरी, २ श्री महादेव चौधरी, ३ श्री ज्योतिन्द्रनाथ चौधरी ।

देवलगढ़ (राजपाड़ा) छिपा वैभव

वर्द्धमान जिले में टुहमुहानी के पास आसनसोल के नजदीक पूचड़ा[1] ग्राम है जो कभी अपने वैभव पर जब रहा होगा तब उसकी तूती चारो ओर बोलती होगी । क्योंकि पूचड़ा का अर्थ ही पाच चूडा अर्थात् पचो की गद्दी होता है ।

यहाँ पर सराकों की विशाल पचायते होती थी तथा यहाँ के निर्णय सभी सराक बधु सिर माथे पर रखते थे । दूर-दूर के झगडे जब कही नही निपटते थे तब यहाँ (पूचडा) आते थे । आज भी यहाँ सराको के ८० घर है, सम्पन्न कृषक है । इसी पूचडा ग्राम से लगा एक टीला है जो खेतो के मध्य मे स्थित है, इसी टीले को देवलगढ (राजपाडा) कहते है । यहाँ ४०० वर्ष पुराना विशाल जिन मदिर रहा होगा जिसके अवशेष आज भी देखे जा सकते है ।

पूजा गृह का स्थान आज भी अपनी प्राचीनता की कहानी कह रहा है, सामने टीले के ऊपरी भाग पर भ० आदिनाथ स्वामी की पद्मासन दो फीट की प्रतिमा यक्ष यक्षिणियो सहित विद्यमान है, भले ही वह जीर्ण शीर्ण हो रही हो, पर अपने वीतराग भाव को स्पष्ट व्यक्त कर रही है । पास ही दूसरी मूर्ति पाच बालयति (तीर्थकरो) की है जो दर्शनीय है, इन मूर्तियो के सम्मुख ही ८ कदम के फासले पर पूजा गृह है, जहाँ पर बैठकर या खडे होकर भक्तजन आराम से पूजा कर सकते है ।

प्राचीन ईंटे टीले के चारो ओर बिखरी पडी है और चारो दिशाओ मे टीले के बडे-बडे कीले भी गडे हुए हैं । साथ ही चारो ओर खेत है ।

---

१ पूचडा का वर्णन 'जैन सस्कृति के विस्मृत प्रतीक' में पढें ।

यहाँ के वयोवृद्ध पुरुष बताते हैं कि पहले खुदाई हुई थी तो काफी धन दौलत निकली जिसे लोग उठाकर ले गये। मगर किसी व्यंतर के हस्तक्षेप करने से सभी उठानेवाले परेशान हुए और इससे लोग डर गये कि अब उस टीले के पास जाने से भी लोग भय खाते हैं। न कोई खुदाई करता है और न कोई सरकार।

जब हमें यहाँ चलने को कहा गया तब भी लोग भयभीत थे, हमने निश्चय किया कि हम ऐसे पवित्र स्थान को अवश्य देखेंगे—इस ता० ४ के होते ही हमारे साथ श्री रतनलाल जैन सिरोठीया, श्री रमाकान्त [illegible] श्री अरुण कुमार भगत, श्री सुधीर कुमार शास्त्री तथा सम्पत श्री ज्ञानेन्द्र नाथ मण्डल पधार गये। जैसे-जैसे ज्यों हम लोग बढ़े तो ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई हम लोगों को अपनी ओर खींच रहा है। यह तो नहीं मालूम मन की गति और शक्ति थी जो शीघ्रता से पग बढ़ा रही थी। निश्चित स्थान पर पहुँच कर हमने टीले स्थान को देखा और निश्चय किया कि इसकी खुदाई अवश्य कराई जाय ताकि भूगर्भ में छिपा वैभव धरा पर प्रकट हो। न जाने किस रूप में प्रभु के दर्शन हों[1]।

•

१ इस जगह को देखने अब दूर-दूर से लोग आ रहे हैं, पुरातत्त्व वाले भी खूब चक्कर लगाने लगे। श्री सराक जैन समिति अपना कार्य शीघ्र प्रारम्भ करेगी।

श्री भ० चन्द्रप्रभु गोयलघाट

छत्रिका में निकली शिखरिका की पंक्ति।

लगती है। मनोज्ञ और दर्शनीय स्थान गगा नदी के किनारे पर बसा है, इमी को कोयला घाट कहते है।

यह खडगपुर से ४४ मील और कलकत्ता से ४० मील दूर है। इससे वगाल, विहार के धर्म यात्री वरावर यहाँ आते रहते है। यही वह चमत्कारिक स्थान है जहाँ पर भ० चन्द्रप्रभु स्वामी की आठ मौ वर्ष पुरानी मूर्ति विराजमान है। यह मूर्ति एक ही रग की नही, वल्कि हल्के पीले रग के माथ-साथ हल्के काले रग की है। इमके प्रगट होने की कहानी लम्वे समय की नहीं है मात्र आठ नौ वर्प पुरानी है,

रूपनारायण नदी पर पुल वनाया जा रहा था, पुल के खम्भे मजवूती मे वनाये गये। मगर एक खम्भ न वन मका जो नदी के मध्य में था, वह वनकर तैयार हो कि टूटने मे देर नही। सभी इजीनियर मिस्त्री परेशान कि वात क्या है जो यह खम्भा वार-वार गिर जाता है। सभी चिंतित वैठे थे, कि अमरनाथ नामक सराक, जो मजदूरो के साथ काम करता था, को किमी ने कहा कि क्रेन को काफी नीचे डालो और गहराई से मिट्टी निकालो। क्रेन पानी में काफी गहराई तक पहुँचाई गई। दो सौ फुट गहरे से मिट्टी निकाली गई तव यकायक क्रेन में कम्पन हुआ और क्रेन के सचालकों ने मशीन को धीरे-धीरे ऊपर उठाया तो देखते क्या हैं प्रभु की मूर्ति का गर्दन का हिस्मा क्रेन में लटका हुआ मिट्टी के साथ-साथ आ रहा है। अव तो चारो ओर जय-जयकार होने लगी। प्रभु ऊपर आये और पुल का खम्भा वनकर तैयार हो गया। मुनते हैं कि क्रेन वालो ने और भी मिट्टी वाद मे निकाली और मदिर के उपकरण आदि प्राप्त हुए तथा एक कलश भी भरा हुआ मिला जो वह लोग ले गये। जो भी हो, हमें इनमे क्या? हमें तो प्रभु मे मतलव है। भ० चन्द्रप्रभु की मूर्ति के मम्मुख भक्तो के दो दलो ने अपनी-अपनी मान्यता प्रगट करके अपने-अपने मदिरो में ले जाने की भावना व्यक्त की, झगडा न वढ़ जाय अत प्रभु को कोयला घाट के पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर मे ही रहना पसद आया और वह अचल होकर वहाँ स्थित हो गये, लोग उन्हें उस समय डिगा न मके आज

मेद्नीपुर जिले के सद्गोप या वाकली धर्म (महिमा धर्म) वालों की विशेषतायें !

मुख्य-मुख्य विशेषतायें

१ नित्य पूजन दीप, धूप से निराकार की करना ।

२ सूर्योदय मे एक घटा वाद भोजन, नाश्ता ग्रहण करना ।

३ रात्रि में भोजन पान नही करते और न वासी भोजन लेते है ।

४ ॐ नम सिद्धेभ्य या ॐ जय श्री की माला जपते हैं ।

५ सूतक पातक को क्रमश १० व १३ दिन का मानते है ।

६ शुद्धि विधान के मानने वाले है अर्थात् मासिक धर्म के ४ दिन वाद स्त्री से भोजन वनवाते हैं ।

७ होटलो व वाजारो में नही खाते पीते ।

८ जल छान कर पीते है ।

९ नशीली वस्तुओ, अभक्ष्यो का सेवन नही करते ।

१० पशुपालक हैं, घर-घर में गाय भैंसें वधी हैं, अत दूध, घी, दही का आनद है ।

११ पचायत प्रथा होने से समस्त झगडे आपस में ही निपट जाते है ।

१२ प्रत्येक माह की दो अष्टमी, दो चर्तुदशी, को निर्जल उपवास करते है ।

१३ प्रत्येक रविवार को नमक नही खाते । रस परित्याग करते हैं ।

१४ भादो सुदी ५, ८, १०, १४ (पचमी, अष्टमी, दसमी, चर्तुदशी) के दिन निर्जल उपवास करते है ।

१५ चौका की शुद्धि का पूरा-पूरा ध्यान रखते है ।

१६. गुरु भक्त हैं, उनकी उपासना भक्ति करते हैं । अतिथि को परमेश्वर मानते है ।

१७ अहिंसा परमो धर्म तथा जियो और जीने दो का नारा लगाते हैं ।

१८ सत्सगी है, सत्सग के इच्छुक है, अत अच्छे प्रश्न करते हैं ।

१९ नारायण श्री कृष्ण और भ० अरिष्टनेमि के उपासक हैं । खडगिरि, उदयगिरि की यात्रा करते है । काशी, मथुरा, जगन्नाथपुरी भी जाते हैं ।

२०. गेरुआ वस्त्र पहनते है ।

२१ शादी विवाह, ब्राह्मण पडितो, पुरोहितो के द्वारा होती है, अपनी जाति की ही कन्या लेंगे और अपनी जाति में ही कन्या देंगे ।

२२. बाल विवाह होता है, पर विधवा विवाह नही करते ।

२३ दहेज प्रथा से परेशान है ।

२४ जल छानने की क्रिया तीन बार की घर घर मे है ।

२५ मध्यम दर्जे के कृषक है, खेती, व्यापार और नौकरी भी करते है ।

२६ पढे लिखे मध्यम दर्जे के हैं । इससे कुछ जगह मास्टर, प्रोफेसर, डाक्टर (होम्योपैथिक) भी है ।

२७ औषधि का अभाव प्राय सभी जगह है ।

२८ गावो में पानी की कही भी कमी नही है—घर घर में नलकूप लगे है ।

२९ बगला भाषी है, अत बगला भाषा का आध्यात्मिक और लौकिक जैन साहित्य पढने की इच्छा व्यक्त की ।

३० आधुनिकता का प्रवेश अभी ग्रामो मे कम है (ट्राजिस्टर को छोडकर) और कोई साधन आधुनिकता के नही के बराबर है । टीन व बास के सममिश्रण में पुराने ढग के मकान बने हुए हैं ।

३१ गुरु मात्र अग्रभाग को ढंकने के लिये लगोटी रखते है बाकी नग्न रहते हैं । पाणिपात्र दिगम्बर की युक्ति के मानने वाले है । एक बार ही भोजन पान दिन में लेते है ।

जिन्हें हम भूल गये ! पर…।

जैन समाज लेन-देन, हिसाव-किताव में पूर्ण निपुण समाज मानी जाती हैं, इसमें शका की कोई गुजाइश नही है। पर यहाँ शका उठती है कि जैन ममाज अपने अगो को कैसे भूल गई ? रघुनाथपुर एरिया में, मान-वाजार एरिया में ऐसे भी वन्धु हमें मिले हैं और उनके यहाँ हम कई कई दिन ठहरे भी है उनका खान-पान, रहन-सहन, पूजा भक्ति आदि ढग भी देखा है। सभी जैनधर्म से मेल खाते रीति-रिवाज हैं, उनके घरो में भ० पार्श्वनाथ स्वामी, भ० आदिनाथ स्वामी और भ० महावीर स्वामी के तथा णमोकार मत्र के यत्र भी लगे देखे तथा भक्तामर काव्य का पाठ भी सुना और उनके मुख से यह भी मालूम हुआ कि हम सरावगी हैं, हमारे वशज सरावगी थे, जैन थे, पर जैनियो मे सम्पर्क टूट जाने से हम लोग विछुड गये। हमारी सतानो की शादियाँ अजैनो में होने लगी या हम लोगो ने कर दी तथा माधु सतो ने उपेक्षा कर दी तो हम जैनधर्म त्याग वैठे, आदि।

ऐसे प्रकरण मेरे प्रवास काल में कई जगह देखने व सुनने को आये। हम अपनी कमजोरी को जानते हैं और अपनी समाज की कमजोरी को भी जानते हैं। हमारी समाज के कुछ वधु वही तो कर रहे हैं जो भूतकाल में इन विछुडे सरावगी वधुओं के साथ हुआ। अपनी समाज से सम्वध विच्छेद लडके-लडकियो के माध्यम से शुरू हुआ नही कि यह जैन समाज मे दूर हुए नही, जो नित्य प्रत्यक्ष देखने में आ रहा है।

मेरे एक घनिष्ठ मित्र ने पूछा, कि—"आज तो आप सराक वधुओ की खोज में लगे, कल क्या करोगे ?" फिर किसे खोजोगे ? प्रश्न हँसी का सा प्रतीत होता है, पर कल क्या करोगे फिर किसे खोजोगे ? में दर्द भरा है, उसी को सोचता हूँ कि हमारी जैन सख्या कम क्यों दिखी। उसका उत्तर

विहार, वगाल और उडीसा के सराको से तो मिला ही साथ ही उन विछुडे सरावगी वधुओ से मिला जो आज कल जैनधर्म छोड चुके, पर जिनकी लडकिया, वहनें अभी भी उच्च धर्मात्मा जैन कुलो मे विवाही है जो व्रती है। ऐसे परिवार रघुनाथपुर, मान वाजार, पुरलिया, कलकत्ता आदि मे तो है ही। अभी-अभी हमे घाट शिला के अग्रवाल वधुओ का परिचय मिला जो जैन थे पर अव नही है।

घाटशिला—यह नगरी टाटा से ७० मील और खडगपुर से ६० मील दूर पर वसी है, पहाडी एक सुन्दर वृक्षावलियो से घिरी हुई है लाल मुरुम की खदाने चारो ओर है, कारखाने भी इस जगह अच्छे लगे हुए है, सराक वधु इन कारखानो में मजदूरी करते है, झोपडियो मे रहते है। शुद्ध शाकाहारी है, इसी जगह पर ५ अग्रवाल वैश्य परिवार रहते है। जो ३० वर्ष पहले जैनधर्म पालते थे। लेकिन जैन समाज के साधु सतो, विद्वानो का सम्पर्क हट जाने से वह हम से दूर हो गये। लडके-लडकियो की शादिया अजैनो मे होने लगी। फिर भी जैनधर्म का आचरण छूटा नही है, णमोकार मत्र, २४ तीर्थंकरो के नाम, भक्तामर काव्य आदि वडे पुरुष जानते है। प्रमुख सज्जन श्री सतलाल भागमल अग्रवाल है जो ऊपा प्रिटम के मालिक है।

समाज की उदासीनता से दिल भर आया और विछुडो से जव मिलता हूँ तव भी दिल भर जाता है।

●

जिला मेदनीपुर (पं० बंगाल) के ग्रामों का वर्णन

दीपा—पोस्ट—वेनाडिया, थाना—केसाडी, जि०—मेदनीपुर (प० वगाल) घर—१५, सख्या—१३०, गोत्र—घोप, कृष्ण।

ग्राम कच्चा है, झोपडे सादा ढग से बने हैं, गाय भैस घर-घर में वधी हैं, आतिथ्य सत्कार में निपुण, मिलनसार, शुद्धशाकाहारी, शुद्ध आचरण वाले कृपक, मध्यम आर्थिक स्थिति वाले। पूजा, उपासना में दक्ष। प्राइमरी स्कूल है, औपधालय नही है, एक डाक्टर प्राइवेट हैं। सत्सग के इच्छुक प्रश्नोत्तर में दक्ष व शात स्वभावी। जल छान कर पीना, रात्रि भोजन प्राण चले जांय पर चारो प्रकार का पदार्थ (भोजन पानी) का त्याग १ घटा दिन से हो जाता है और १ घटा दिन चढ जाने के वाद से प्रारम्भ होता है। णमोकार मत्र कोई नही जानता क्योकि सत्सग नही मिला, अरिष्टनेमि के उपासक हैं, गेरुआ वस्त्र पहनते है, व्रत उपवास अष्टमी चतुदर्शी का नियम मे करते है, (जो पूर्ण जैन विधि के अनुमार अतीचारों को वचाते हुए करते हैं) ॐ सिद्ध २ की माला जपते है। णमोकार मत्र को हाथ जोड कर सुना माथा झुकाया,

प्रमुख सज्जन — १ श्री विश्वनाथ घोप, २ श्री पूर्णचन्द्र घोप, ३ श्री घनजय घोप, और ४ श्री हतोचरण वासुरी है (जो उत्साही धर्मात्मा युवक हैं)।

नोट—वगासिया से दीया जाते हैं, रास्ता जीपकार का व पैदल है।

बनाडिया—पो०—खास, थाना—केसाडी, जि०—मेदनीपुर (प० वगाल) घर—१७, सख्या—१६०, गोत्र—कोलिया, घोप।

रास्ता टूटा फूटा है, ऊचा नीचा है, साईकिल से या पैदल चलें, ग्राम कच्चा पक्का है, गाय भैंसे सुदर व सुडौल स्वस्थ्य दिखी, लोग पचायत

प्रथा को मानते है, पचो को परमेश्वर मानते है, शुद्ध व शाकाहारी विधि विधान तथा गृहस्थ धर्म के मानने वाले सत्सग के इच्छुक है, उपवास, व्रत करते है, मातृ पितृ गुरु भक्त है, पढे लिखे मध्यम दर्जे के किसान है, वगला वोलते है।

प्रमुख सज्जन —प्रो० श्री अमूल्य रत्न कोलिया एम० ए०, २ श्री निरजन लाल घोप, ३ श्री प्रफुल्लचन्द्र कोलिका, ४ श्री अनादिधन कोलिया, ५ श्री विपिन विहारी कोलिया।

कुलवनी—पो०—वनाडिया, थाना—केसाडी, जि०—मेदनीपुर, घर—१५, सख्या—१५२, गोत्र—घोप।

यह ग्राम प्रकृति की गोद मे बसा हुआ घने वृक्षो की छाया में सभी को आनद देता है। उपजाऊ भूमि है, नाना प्रकार के फल फूल होते है। शुद्ध शाकाहारी, उच्च विचारक पढ लिखे स्त्रीपुरुप, मिलनसार, खेती नौकरी और व्यापार करने वाले सादा गोप है। औपधिका अभाव है, वाचनालय भी चाहते है। वनाडिया से कुछ दो मील दूर है रास्ता ठीक है।

प्रमुख सज्जन —१ मा० भोलानाथ घोष वी० एससी० वी० एड० २ श्री खेतराम घोप, ३ प्रो० श्री गजेन्द्रनाथ घोप M Sc, ४ श्री गिरधारी लाल घोप।

आसराघाट—पो०—खास, थाना—केसाडी, जि०—मेदनीपुर, घर—१०, सख्या—१०३, गोत्र—पाल।

स्वर्णलता नदी के किनारे यह ग्राम बसा है, कच्चा गाव है, गरीव किसान है, शुद्ध शाकाहारी, चारित्रवान, व्रत उपवास, सयम करने वाले गुरु की उपासना करते है, अतिथि सत्कार मे दक्ष, रास्ता कष्ट साध्य है, स्कूल आदि नही, कम पढे लिखे लोग है, यहाँ पर एक सज्जन श्री ईश्वर चन्द्र पान वी० एससी० है। जो समस्त धर्मां का अध्ययन किये हुए है और जिज्ञासु है, चर्चा अच्छी करते है विनम्र व श्रद्धालु है।

प्रमुख सज्जन—१ श्री ईश्वर चन्द्र पान वी० एससी०, २ श्री विपिन चन्द्र पान।

डाडरा—पो०—आसराघाट, थाना—केसाडी, जिला—मेदनीपुर। घर—७, सख्या—६२, गोत्र—घोष।

शुद्ध शाकाहारी, गुरु भक्त, मध्यम दर्जे के कृषक, झोपडियो का छोटा गाँव, रास्ता पैदल का, सत्सग के इच्छुक, पशुपालक, विनम्रता के पुतले पढे लिखे कम।

प्रमुखसज्जन —१ श्री सुरेन्द्र कुमार घोष, २ श्री विश्वनाथ घोष

मूराकोटपुरा—पो० लच्छीपुर थाना–केसाडी जि०–मेदनीपुर। घर–६ सख्या २४, गोत्र–साहू।

ग्राम कच्चा-पक्का, सुन्दर ढग निवास हुआ, अच्छे खाते पीते किसान हैं, पढे लिखे हैं, नौकरी व व्यापार भी अच्छा है। धान व गन्ना खूब पैदा होता है, भजन कीर्तन करने में निपुण परोपकारी अपने आसपास के ग्रामो के बधुओ की मदद करने वाले, सख्या में कम होकर भी अच्छा स्थान बनाये हुए हैं, शुद्ध शाकाहारी, अहिंसक, दयालु, सत्सग के इच्छुक, जूनियर हाई-स्कूल चाहते हैं।

प्रमुखसज्जन—(१) श्रीमदन कुमार साहू, (२) श्रीधन्यकुमार साहू।

नरसिंहपुर—पो०–पुरवरिया, थाना–केसाडी जि०–मेदनीपुर। घर–२०, सख्या २०१, गोत्र–खटुआ, सेनापति।

सुन्दर ग्राम है, रास्ता भी ठीक है, पढे लिखे कवियो का ग्राम है, भक्ति व विनय के पद इतने सुन्दर ढग से प्रस्तुत करते है कि श्रोता सुनकर भाव विभोर हो जाता है। गोप वश की शौर्यता और नारायण श्रीकृष्ण के महाभारत सबधी कर्त्तव्यो पर जब गीत गाते हैं तो श्रोताओ को ऐसा बोध होता है। मानो युद्ध भूमि में खडे हो सभी की भुजायें फड़कने लगती है और चेहरे ओज मे दमक उठते हैं। इन गीतो को सुनकर आल्हा उदल के शौर्य का दिग्दर्शन होता है अर्थात् आल्हा जैसी चाल चलती है। शुद्ध शाकाहारी, अहिंसक, दयावान, वीर पुरुष हैं, इनके गुरु—श्रीस्वामी साईधर दास हैं, जो मात्र इन्द्रिय पर आगे थोडा वस्त्र लगोट के रूप में रखते है बाकी सारा शरीर नग्न रखते हैं, हाथ में लेकर भोजन करते है, एक ही

लावदा—पो०—खास, थाना—केमाडी, जि०—मेदनीपुर, घर—१२, सख्या—९६, गोत्र—घोप ।

जूनियर हाईस्कूल है, रास्ता कच्चा व कष्टदायक है, लोग मिलन-सार हैं, सत्सग के इच्छुक हैं, शुद्ध शाकाहारी, परोपकारी, दान देने में निपुण, तीर्थ वदना करते हैं। गीता रामायण-भागवत पढते हैं, पर शुद्ध जैन धर्म की क्रियायें पालते हैं। रात्रि भोजन नही, जल छान कर पीना, मर्यादा का ध्यान रख कर भोजन पानी ग्रहण करना, चौका व्यवस्था, मर्यादा का आटा आदि लेते हैं। जैनियो की सगति न मिलने से जैन धर्म मे शून्य ।

प्रमुख सज्जन १ श्री अविनाश घोप, २ श्री अखिलेशचन्द्र घोप, ३ श्री ज्ञानेन्द्रनाथ घोप प्रधान ।

विष्णुपुर—पो०—खास, थाना—खास, जि०—मेदनीपुर ।

सराकघर—१६ सख्या—१६२, गौत्र—आदिदेव ब्रह्मऋपि ।

वाकुडा से विष्णुपुर जाते है, अच्छा शहर है, सम्पन्न सराक हैं, कपडा वुनने का काम करते हैं, इस ग्राम को या शहर को हिन्दू लोग "गुण वृन्दावन" के नाम से भी पुकारते है। खान-पान शुद्ध, शाकाहारी, भ० पार्श्वनाथ व भ० नेमनाथ के उपासक हैं। पढे-लिखे लोग हैं, रहन-सहन उत्तम है, सत्सग के इच्छुक, तीर्थ यात्रा करने वाले अतिम यात्रा राजगिरि या श्री सम्मेदशेखर की कामना रखते हैं। वाचनालय चाहते हैं।

प्रमुख सज्जन १ श्री वलिराम कर्णि ।

नोट—"कर्णि" वुनकर या कपडा वनाने वाले जुलाहे को कहते है।

चन्द्रकुना—पो०—खास, थाना—विष्णुपुर, जि०—मेदनीपुर ।

विपय है, विचारणीय है। क्यो कि इधर टाइटिल गोत्र कहला रहे है जव कि गोत्रो का पूरा-पूरा पता स्पष्ट यहाँ के विद्वानो को भी नही है वह भी अव चकरा रहे है सराको के गोत्र देखकर। खोज का विपय है।

प्राचीन पार्श्वनाथ जिनमन्दिर

वाहुलाडा—पो०--खास, थाना--उन्दा, जि०--वाकुडा ।

सराकघर—१, सख्या--१०, गोत्र—ब्रह्मऋषि ।

यह नगरी कभी सराको की भरपूर नगरी रही होगी, यहाँ पर अव सिर्फ एक ही परिवार है वह भी मात्र भगवान् जिनेन्द्र देव की पूजा भक्ति करने के लिये, सरकार की ओर से। उस परिवार के मुखिया-श्री माणिक चन्द्र गागुली हैं जो पुजारी है ।

"यहाँ विशाल जैन मंदिर है, जिसमे १८ सौ वर्ष प्राचीन जिन प्रतिमा भ० पार्श्वनाथ स्वामी की खडगासन श्यामवर्ण की है। यहाँ वाले इस मूर्ति को भ० अनत नाथ स्वामी को मानते है जव कि वह भ० पार्श्वनाथ स्वामी की ही मूर्ति है ।"

पार्श्वनाथ जिन मदिर के पास ही दुर्गा मदिर और गणेश मदिर है यहाँ भी श्याम वर्ण की मूर्तियाँ हैं जो दुर्गा व गणेश जी की हैं । इन दोनो मदिरो के मध्य शिवमदिर है जहाँ शिवलिंग है । ऐसा प्रतीत होता है कि इन मदिरो को एक ही समय में एक ही परिवार ने अपनी समन्वय धार्मिक नीति से समस्त जनता की दृष्टि से समस्त धर्म वधुओ के हित के लिये वनवाये हो । पुरातत्त्व विभाग वगाल के आधीन यह मदिर हैं। वही देख-भाल करती है । "यहाँ एक सरस्वती भवन है, जिसमें प्राचीन पाडुलिपियाँ रहीं होंगी, पर, अब नहीं हैं । सरस्वती भवन प्रवचन भवन जैसा है ऐसा लगता है मानो गुरु जन शिष्यो को प्रवचन करने आने वाले हैं। यह जैन परम्परा का स्पष्ट प्रतीक है ।

इस ग्राम में विष्णुपुर से या वाकुडा'से सीधा आया जाता है, बाकुडा से ओदा तक १२ मील पक्का रास्ता है और ओदा से वाहुलाडा ४ मील

कच्चा रास्ता है, जहाँ जीप से या पैदल तथा साईकिल से आया जा सकता है।

गोपी वल्लभपुर—पो०–खास, थाना–विष्णुपुर, जि०–मेदनीपुर।

सराकघर—५, सख्या–४०, गोत्र–प्रतिब्रह्मऋषि।

शुद्ध शाकाहारी, रहन-सहन सादा मध्यमदर्जे के बुनकर पढे-लिखे कम, ग्राम कच्चा, रास्ता टूटा-फूटा परेशानी का है। बच्चो को पढाने-लिखाने की चिंता, सहयोग के इच्छुक। यहाँ के प्रमुख श्री गोवर्धन दास रत्न है।

रामजीवनपुर—पो०–गोपी वल्लभपुर, थाना–विष्णुपुर, जि०–मेदनीपुर

सराकघर—२ सख्या–१८, गोत्र–ब्रह्मऋषि।

छोटा गाव, कपडा बुनते है। शुद्ध शाकाहारी, गरीब है, श्री रामजी लाल दास प्रमुख पुरुष है।

खिरपाई—पो०–चन्द्रकुन, थाना–विष्णुपुर, जि०–मेदनीपुर।

सराकघर—२, सख्या–१७ गोत्र–ब्रह्मऋषि।

मध्यम दर्जे के किसान है, शुद्ध शाकाहारी, विनम्र, अतिथि-सत्कार करने वाले, सत्सग के इच्छुक, तीर्थ यात्रा की भावना मे ओत प्रोत है। श्री शकर दास रत्न प्रमुख है।

खडगपुर—पो०–खास, थाना–खास, जि०–मिदनापुर।

जैन घर–१००, सख्या–९००।

यहाँ पर दिगम्बर श्वे० स्थानकवासी सम्प्रदाय के बाहर प्रातो से आये हुए जैन बधु रहते है। दि० जैन मदिर, श्वे० जैन मदिर और उपाश्रय (स्थानक) बने हुए है। दूर-दूर से यात्री बधु आते है और व्यापार के साथ-साथ धर्म साधन भी करते है। तीनो सम्प्रदाय के उच्च विद्वान्, साधु, श्री मत यहाँ बराबर आते रहते है। इस नगर के चारो ओर सराक बधु ५०, ५० मील की दूरी मे निवास करते है। (६५ घर दि० जैन, २० घर श्वे० जैन, १५ घर स्थानक वासी) रेलवे का सबसे प्रमुख केन्द्र तो यह है ही, साथ ही ट्रेनिग केन्द्र और हवाई रक्षा केन्द्र होने से भी यह महत्त्व का

नगर हैं। समस्त भारत की सम्यता यहाँ देखी जा सकती है, इसी से इस नगर को लघु भारत के नाम से पुकारा जाता है। यहाँ के उत्साही धर्म वधु श्री ला० रतन लालजी जैन के सयुक्त श्री मोतीलालजी, जौहरीलाल जी जैन हैं जिनकी सतान भी धर्म मे तत्पर है, श्री सिघई मगनलालजी जैन परम उत्साही कर्मठ धार्मिक कार्यकर्ता हैं। यह यहाँ के धर्म वधुओ को धर्म कार्य में मदद देते रहते है।

इस नगरी में पूज्य १०५ क्षु० ज्ञानसागरजी महाराज के सुपुत्र भी रहते हैं जो कपडे के वडे व्यापारी हैं, जिनकी पाच दुकानें एक साथ चलती हैं। यह स्थान सराक जाति के कार्य का केन्द्र वन सकता है। सभी नवयुवको को व श्रीमतो को इस कार्य मे उत्साह पैदा करने से कार्य वन सकता है। मेरे प्रचार कार्य में सर्व श्री ला० मोतीलाल जैन, जौहरीमलजी जैन और उनका समस्त परिवार (छोटे वडे वच्चे सभी) ने सहयोग किया, तथा प० मगनलाल जी जैन जो अपना ट्रको का धन्व करते है वडी ट्रासपोर्ट कम्पनी है उसके मालिक हैं ने साथ दिया। दिगम्वर जैन मदिर और धर्मशाला एक ही साथ है, रेलवेलाइन के किनारे गोल मार्केट के नजदीक है।

वेलदा—पो०—वेलदा, थाना—केसाडी, जि०—मेदनीपुर।

घर—२५, सख्या—२२५।

यहाँ पर वाहर मे आकर श्रावक वधु वसे है, जो अपना निजी कारोवार करते हैं, दि० जैन मदिर का निर्माण कर रहे है, वैसे जिन मदिर अभी कच्चे भवन में है। अच्छे व्यापारी हैं श्री प्रीतमदास जैन वजाज परम उत्साही युवक हैं जिन्होने हमारा साथ इस क्षेत्र के कार्य में दिया, वेलदा के चारो ओर शाकाहारी सराक या गोप रहते हैं। जिनसे वेलदा वाले वरावर सम्पर्क वनाये रखते हैं।

प्रमुख—श्री प्रीतमदास जैन, श्री जौहरीमल जैन और श्री रमेश चन्द्र जैन।

दीघा समुद्र यहाँ से ४५ मील है यही से रास्ता जाता है। यहाँ पर

जैन पाठशाला की आवश्यकता है।

दातुन—पो०–खास, थाना–केसाडी, जि०–मेदनीपुर।

यहाँ पर सराक बधुओ का विशाल बाजार मगल को लगता है जहाँ पर गोरातडिया ग्राम के श्री मधुसूदन महतो रहते है। यह शाकाहारी है, लाल वस्त्र पहनते हैं, अपने को 'ऐलक' कहते है। इनकी सख्या इस ओर हजारो है। यह गोप सम्प्रदाय से पृथक हैं, पर इनका खान-पान, रहन-सहन, पूजा भक्ति, गुरु उपासना आदि सभी गोप जैसी है। शुद्ध शाकाहारी, अहिंसक व गुरु भक्त है। दिन में खाना पीना, रात्रि में न खाना पीना, जल छान कर लेना, गुरु नग्न रहना एक भक्त लगोटी व मोर पखा तथा कमडल रखना, हाथ पर भोजन करना और लहसुन, प्याज, आलू, आदि अभक्ष्य न लेना, एक बार ही भोजन लेना आदि इस सम्प्रदाय में है। खडगिरि उदयगिरि की यात्रा साल में एक बार करते है। खेती करते व कपडा बुनते है।

यहाँ श्री कैलाशचन्द्र जैन (श्री के० सी० जैन) तथा कुछ सौराष्ट्र के जैन बधु (**कच्छी समाज**) भी रहती है। ग्राम सुदर है।

विशेष—१ मेदनीपुर—जिले में **गोत्र—और टाइटिल—**कृष्ण, नेमनाथ गोत्र है, साथ ही, टाईटिल गोत्र—घोप, वासुरी, कोलिया, महापात्र, साहू, पान, लाइक, ब्रह्म ऋषि, आदिदेव, सेनापति है।

२ इस जिले के दौरे मे मेरे साथ श्री मोतीलाल जैन, श्री सिघई मगनलाल जैन खडगपुर तथा श्री प्रीतम दास जैन वेलदा रहे धन्यवाद।

उड़ीसा प्रांत की रंगिया जाति की विशेषतायें

१ यह जाति पुरी-कटक-वरहमपुर गजाम जिलो में लाखो की सख्या में वसी पडी है।

२ श्री खडगिरि उदयगिरि की शुभ यात्रा वर्ष में एक वार अवश्य करते हैं। अतिम जीवन इसी सिद्ध क्षेत्र पर पूर्ण करने की अभिलाषा रखते हैं। ५० मील के क्षेत्र में रगिया जाति फैली पडी है।

३ कपडा वुनने का काम करते हैं, धागा भी रगते हैं, रग का पानी सन्ध्या के वाद पात्र में नही छोडते और मिट्टी में डाल देते हैं।

४ जल छान कर पीते हैं, प्रत्येक वस्तु में या कार्य में छना जल का प्रयोग करते हैं।

५ रात्रि भोजन नही करते। (अपवाद रूप में कही-कही शुरू हुआ है)

६ प्याज, लहसुन, मास, मच्छी का प्रयोग नही करते, शुद्ध शाकाहारी है।

७ अपनी जाति में ही शादी-विवाह करते हैं।

८ विधवा विवाह नही करते, जो लोग करने लगे है उनका वहिष्कार करते हैं, उन्हें दड विधान से अवगत कराते हैं।

९ तीन वार दिन में 'ब्रह्म' की उपासना करते हैं, "ॐ गुरुवे नम" तथा "ॐ वुद्धाय शुद्धाय नम" की माला जपते हैं।

१० पहले जैन तीर्थंकरो की मान्यता घर-घर में थी, लेकिन जैन साधुओ, विद्वानो, श्रीमतो का सम्पर्क छूट जाने से जैन धर्म से दूर हो गये और वौद्ध धर्म की शरण में जा रहे हैं। अपने को कही-कही लोग वौद्ध कहने लगे है।

११ जैनो की सख्या कम होने का कारण उनसे सम्पर्क छूट जाना है।

१२ वाजारो मे, होटलो मे भोजन नही करते, अपने घर का ही वना भोजन करते है ।

१३ जरायम पेशा इस जाति मे कोई नही, यहाँ तक कि मुकद्दमा आदि आपस मे नही करते—समस्त झगडे आपस मे सुलझा लेते हैं ।

१४ तीर्थ यात्रायें काशी, पुरी, मथुरा, खडगिरि, उदय गिरि की करते है।

१५ पढे लिखे, नौकरी, और व्यापार करने वाले पुरुप है ।

१६ रगीन गेरुआ वस्त्र पहनते हैं ।

१७ सूतक पातक (१० दिन और १३ दिन का) मानते हैं ।

१८ मासिक धर्म की शुद्धि ५ दिन की मानते है । तव स्त्रियाँ ५ दिन के वाद भोजन वनाती है ।

१९ "पाणिपात्र" साधुओ के उपासक है, उन्हे भोजन करा कर प्रसन्न होते है ।

२० पशुपालक । (उन्हें वेचते नही थान पर ही रखते है)

२१ पचायत प्रथा के उपासक उसके विधान को मानने वाले ।

२२ गुरु भक्त, ब्राह्मणो के हाथ का भोजन नही करते उन्हें खिलाते है ।

२३ दहेज प्रथा का श्री गणेश हुआ हैं, जिसमे चिंतित हैं ।

२४ लडको के समान लडकिया को भी पढाते है ।

२५ आर्थिक स्थिति ठीक है, सम्पन्न हैं (कुछ गरीव है)

२६ सत्सग के इच्छुक है, विद्वानो का सम्मान करते है ।

२७ श्री खडगिरि उदयगिरि को वौद्ध क्षेत्र (मदिर) वताते है, क्योंकि वौद्ध भिक्षु इन्हे ऐसा ही सिखा पढा रहे हैं ।

२८ उडिया भापी हैं, उडिया भापा का साहित्य चाहते है । खडगिरि के मेले में प्रचार होता है ।

२९ रगिया विद्यालय खोलने के इच्छुक है जिसमे धर्म प्रचार हो सके ।

३० नग्न गुरु को जिसे वह "अलक" कहते हैं, मानते है । यह गुरु मात्र अर्द्ध लगोट वाधते है, मोर का पखा और नारियल का कमडल रखते है । (यह सिर्फ कटक की ओर पाये जाते हैं) एक वार ही भोजन

पानी दवा आदि लेते हैं। गुरु के साथ यात्रा करने को यह महायात्रा या तीर्थ वदना कहते हैं।

३१ कार्तिक वदी १५ (अमावस्या) को दीपक जला कर लड्डू आपस में बाटते है। उसे मुक्ति दिवस या ज्ञान प्राप्ति दिवस कहते है (म० महावीर को मोक्ष और गौतम गणधर को केवलज्ञान इसी दिवम हुआ वही यह मानते है पर इन्हें इसका वोध नही हैं।)

टाईटिल—साहू, पुष्टि, राउत, दास, सनावती, वेहरा, साथरा, नायक, पात्र, महापात्र।

गोत्र—काशीनाग, जिनेश, साहू, श्री कृष्ण।

ग्रामपथ—टूटे-फूटे हैं, कही-कही अच्छे भी हैं। पैदल के रास्ता ज्यादा है, जीप भी मदद करती हैं।

निवास-स्थान—रास्तो से दूर, नदी पहाडो के पाम, जगलो में वसे है।

•

उड़ीसा प्रांत के जिलों के ग्रामों का वर्णन

प्रमुख सज्जन—१ श्री गोपाल कृष्ण घोष, २, श्री मुरलीधर महापात्र ।

चडिकेल—पो०–छतिया, थाना–कटक, जि०–कटक ।

सराकघर—२५, स०–२२५, गोत्र–काशी, लाइक ।

चडिकेल—यह स्थान छतिया जाने के रास्ते में जि० कटक का प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय पहाडी स्थान है, विशाल लोहे का भडार इस पहाडी पर से प्राप्त होता है, हजारो ट्रक नित्य लोहा मिश्रित मिट्टी को ढोने में लगे रहते हैं, यहाँ पर सराक बुनकरो के २५ परिवार रहते है जो मिट्टी ढोते हैं और मजदूरो को उनकी जरूरतो के कपडे भी देते हैं। पढे-लिखे कम हैं। शुद्ध शाकाहारी, अहिंसक है। अपनी परम्पराओ का बोध है।

चडिकेल के ऊपर एक विशाल मन्दिर दुर्गा का है, जहाँ पर राजस्थान का एक पुजारी महत रहता है। जो अपना पूरा-पूरा प्रभाव जनता पर जमाये हुए है, जब उससे हमने बात की और उसने हमें अपना हितू या बधु समझा तो उसने हमें कहा कि यह स्थान पहले जैनियो का धर्मस्थान रहा होगा क्योंकि यहाँ पर रचमात्र भी हिंसा के भाव नही उठते और न मन में कोई कषाय पैदा होती है, शाति मिलती है, यदि कटक की जैन समाज या भारतवर्ष की जैन समाज यहाँ एक छोटा-सा मन्दिर बना दे तो मैं पूरी-पूरी मदद करूगा। जगह मैं दे दूँगा आदि उन्होने कहा। उन्होने नाम पूरा न बताकर कहा कि मेरा नाम मात्र चरणदास समझो। बडे विनम्र स्वभाव वाले दिखे। चडिकेल पहाड के नीचे से आम पब्लिक के वाहन आदि जाते हैं और समुद्र से पहाड तक जो मार्ग सरकार ने बनाया है उस पर मात्र लोहे के टुकटो के खड-खड ढोने वाले ट्रक ही आ जा सकते हैं जो समुद्र तक माल ले जाते है और माल जहाज से लदकर जापान आदि को चला जाता है।

प्रमुख सज्जन—१ श्री निर्मलचन्द्र लाइक, २, श्री प्रबोधन घोष हैं।

छतिया—पो० छतिया, थाना छतिया कटक, जि०–कटक ।

कटक में जैन धर्म

कटक—महानदी, गगानदी आदि छोटी-बडी नदियो से घिरा हुआ उडीसा का वडा शहर है। चारो ओर नदिया ही नदिया होने से टापू है और मगम है। धर्म का भी सगम है और नदियो का भी सगम है साथ ही व्यापार का भी मगम है?

समस्त साधन इस नगरी में है, शिक्षा, औपधि, पोस्ट ऑफिस, पुलिस और सेना का भी स्यान है। लघु उद्योग धधो का केन्द्र कुछ समय मे वन मकता है। कलकत्ता के नजदीक है, साथ ही धर्म क्षेत्र (सिद्ध क्षेत्र) श्री खडगिरि, उदयगिरि को जाने का मुख्य द्वार है, यहाँ पर दो विशाल दिगम्वर जैन मदिर है, जिनमें नदियो से निकली प्राचीन जैन प्रतिमाये विराजमान है, मूर्तिया अति प्राचीन (१८ सौ वर्प तथा दो हजार वर्प पुरानी) मानी जाती है। भ० पार्श्वनाथ स्वामी, भ० शातिनाथ स्वामी, भ० आदिनाथ स्वामी और भ० अनतनाथ स्वामी आदि की मूर्तियाँ है। कुछ के चिह्न घिस गये, प्रशस्तियाँ हैं नही। आनद विभोर होता है भक्त जव ध्यान लगाकर मूर्तियो के मम्मुख वैठता है तव। बडा दि० जैन मन्दिर चौधरी वाजार में है, जो स्व० चौधरी पन्नालालजी परवार दि० जैन श्रीमत ने वनवाया था, मध्यप्रदेश के धर्म प्राण वधु ने धर्म प्रभावना की और कटक में उन्ही के नाम पर चौधरी वाजार वसा और चौधरियो का मन्दिर नाम प्रसिद्ध हुआ। मदिर विशाल हैं, अपनी छटा विखरते हुए अपने गौरव की गाथा सुनाते हैं। आज चौधरियो के वश के कोई भी लोग यहाँ नही है समय की बलिहारी है, जिनके पूर्वज अपनी निधि इस तरह सुरक्षित कर जाते है उनके वश के वशज उसे भूल जाते हैं, पर धर्मात्मा वधु उसका उपयोग करते ही हैं वही आज कटक में हो रहा है।

पर सोते, उठते, बैठते है, गर्म जल लेते है, अतराय भी पालते हैं। शुद्ध भोजन करने वाले के हाथ से भोजन लेते हैं। मोर का पखा और कमडल रखते हैं। जल आदि मात्र एक ही बार लेते हैं। इनके समस्त अनुयायी भी दिन में एक ही बार भोजन करते है, रात्रि में भोजन की कौन कहे जल भी ग्रहण नही करते। शुद्ध शाकाहारी, बीडी, सिगरेट आदि भी नही पीते। खडगिरि उदयगिरि की वदना करने साल में तीन बार, चैत्र, माघ और भादो मास में जाते हैं। व्रत उपवास करते है। यह 'अलक' कुछ नही "ऐलक" का अपभ्रश है जैनत्व का पालन इनके यहाँ है, ॐ नम सिद्धेभ्य और सिद्धोऽह का नारा व ध्यान लगाते व करते हैं। ढाका नाल इनकी मुख्य गद्दी है जो ४० मील दूर कटक से है। इस सम्प्रदाय में करीब ५०० साधु है। कटक से खडगिरि उदयगिरि २० मील दूर है, इसक चारो ओर सराक वधु जिन्हें 'अलक रगिया' कहते है हजारो की सख्या मे हैं।

प्रताप नगर— यह कटक से ५ मील की दूरी पर बसा एक बगाली ग्राम है जहाँ पर बगालियो और उडियावासियो का वास है। बगाली ज्यादा हैं, वृक्षो की छाया में बसा लहराता ग्राम है, यहाँ पर एक कृपक वधु को जमीन जोतते समय भगवान् आदिनाथ स्वामी की खडगासन (चौबीसी सहित) तथा भ० पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्तियाँ मिली। मूर्तियाँ अति मनोज्ञ हैं, प्राचीन है। उन्हें कटक के जैन वधु लाना चाहते हैं, पर, ग्राम वाले मूर्तियाँ नही देते वह वही मदिर बनवाना चाहते है, मूर्तियो के निकालने के दिन से उस कृपक वधु की दिनो दिन उन्नति हो रही है, ग्राम वाले भी खुशहाली का अनुभव कर रहे है। इन मूर्तियों के दर्शन पूज्य मुनिराज श्री १०८ मुनि नेम सागर जी महाराज देहली, श्री १०८ मुनि अभिनदन सागर जी आदि भी दर्शन कर आये।

●

पुण्य महिमा

एक दिन किसी ने कहा "उठ मुझे खेत जुताना है, अभी पानी गिरेगा जमीन पर हल चलाना हम तुम्हारे यहा आवेंगे" किसान उठा, आते सभी ऊपर आसमान पर बादल मडरा जाते, और थोड़ी ही देर में पानी गिर गया, सभी हर्ष विभोर हो नाचने कूदने लगे। किसान बंधु हल लेकर खेत मे जा पहुँचा, थोड़ा खोदा ही था कि हल रुक गया, मालूम हुआ कि पाषाण ने हल रोक रखा है, पाषाण को दूर करने को किसान बंधु चटर्जी झुके ही थे उन्हें भ० आदिनाथ स्वामी की मूर्ति के दर्शन हुए उनके हर्ष का पारावार न रहा, वह मूर्ति को निकाल कर घर की ओर जाना चाहते थे कि बैल न चले और बैठ गये, खेत की ओर मुड़े पुन चटर्जी ने हल चलाया और भ० पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति निकली पश्चात् भ० शातिनाथ स्वामी की मूर्ति निकली इस तरह तीन मूर्तियाँ प्राप्त करके कृषक बंधु धन्य हुए।

लोगो का ताता मूर्तियों को देखने का लग गया, और भक्त कृषक ने अपनी दु ख गाथा प्रभु के चरणो मे व्यक्त की।

पाप गया, पुण्य आया और पुण्य का प्रसाद धन दौलत बढ़ी, आज इन बंधु ने विशाल मदिर बनवाकर मूर्तियो को उसमें स्थापित कर दिया, वह मालामाल है, धान का कारखाना लग गया, धर्म की महिमा अचित

है। आज भुवनेश्वर जाने वाला इस मदिर को देखे वगैर नही जाता।

शिशुपालगढ—यह स्थान पुरातत्त्व विभाग उडीसा के आधीन हैं। इस क्षेत्र मे शाकाहारी वधु रहते हैं। नारायण श्री कृष्ण चन्द्र और शिशुपाल का युद्ध इसी जगह हुआ था। ऐसी किंवदती है, यहाँ पर भगवान् जिनेन्द्र देव के सौ जिन मदिर थे, लेकिन मदिरो का नाम निशान नहीं है, पर, खुदाई में जैन मूर्तियो के खड भाग (टुकडे) अवश्य मिले हैं जो पुरातत्त्व विभाग के पास है। खुदाई का कार्य चल रहा है, आशा हैं कोई विशाल जिन मदिर या विशाल जिन मूर्ति प्राप्त हो। सरकारी प्रवध काफी कडा है। कटक से यह स्थान २२ मील दूरी पर है।

भुवनेश्वर—उत्कल विश्वविद्यालय, तपोवन महाविद्यालय, जैसे शिक्षा के महान् साधन युक्त नगरी है, कटक से १७ मील दूर है, यहाँ पर छोटी-सी सुन्दर पहाडी पर सम्राट् अशोक द्वारा निर्मित अहिंसा स्तूप (वौद्ध स्तूप) अपनी गौरव गाथा व्यक्त कर रहा है। अपनी कहानी सुनाता है कि यह वही स्थान है जहाँ पर १ लाख कलिगवासियो को तलवार के घाट उतार कर जैनधर्म के अस्तित्व को मिटाने का स्वप्न सजोये हिंसक अशोक ने खून से रगी धरती को देखा और वीरो के कटे धड, सिर, हाथ पाँव देखे, देखा श्मशान वनी नगरी को। काप उठा, घवडा गया और मृत्यु अवश्यभावी है जान कर तलवार दूर फेंक दी और लगा पश्चात्ताप करने। हिंसा का परित्याग कर अहिंसा धर्म की शरण गया और मुख से निकल पडा "वुद्ध शरण गच्छामि, धम्म शरण गच्छामि, सघ शरण गच्छामि"। उसी की स्मृति स्वरूप यह अहिंसा स्तूप वना है। इसी के सम्मुख शिव मदिर भी वना है। खडगिरि उदयगिरि ५ मील दूर है जो पहाडी से स्पष्ट दिखता है, मानो हिदायत करता हो गर्व न करो, मौत सभी को खा जायगी। अशोक को बौद्ध भिक्षु वनाने वाला यही स्थान है।

इसके चारो ओर रगिया जाति रहती है। व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ कभी जैनधर्म का पूर्ण प्रचार व प्रसार था, समय की थपेडो से धर्म का प्रभाव दूसरी ओर चला गया, पर जैनत्व के लक्षण अव भी नगरी में

विद्यमान है। ताडपत्रों पर जैन शास्त्रों का (हस्तलिखित शास्त्रों का) विशाल भंडार भी सरकारी पुस्तकालय में देखने को मिलता है।

साक्षी गोपाल—नारियल के वृक्षों से घिरी हुई, तथा छोटे-छोटे तालाबों में कमलों की छटा से सुशोभित, हरी-भरी उद्यान पूर्ण नगरी है, वैष्णव सम्प्रदाय के मंदिर है, जिसमें विशाल मंदिर नारायण कृष्ण गोपाल का है, जो इस बात का प्रतीक है कि, श्री जगन्नाथपुरी जी की यात्रा करके यात्री वास्तव में आया है, वह यात्री तभी सफल यात्रा किया हुआ माना जाता है जब इस मंदिर में साथ मुद्रा का अंतिम भेंट (दक्षिणा पूजा पूजा पा) चढ़ाकर पुरोहित को बता देता है कि हम श्री जगन्नाथ जी की यात्रा कर आये हैं। इसी से इस जगह का नाम साक्षी गोपाल है। वैसे श्री जगन्नाथ जी के पुरी मंदिर में भी साक्षी गोपाल का मंदिर है, पर, मान्यता इसी जगह की है।

मेरी धारणा इस स्थान को देख कर यह बनी कि यह साक्षी वन जहां पर है वहां गौएं चराने वाले गोपाल रहते थे, और जब लक्ष्मण जी लंका की ओर जाने लगे और वनमाला ने लक्ष्मण के साथ जाने की जिद की तो लक्ष्मण ने वचन दिया कि हम तुम्हें, गोपालों की साक्षी देकर कहते हैं कि यदि "हम लंका से लौट कर तुम्हें अपने साथ न ले चलें तो हमें वह पाप लगे जो कलियुग में रात्रि भोजन करने वाले को लगे"। आदि। इसी से यह साक्षी गोपाल नाम स्थान का पड़ा है। खोज का विषय है विद्वान् विचार करें।

साक्षी गोपाल में रंगिया जाति के शुद्ध शाकाहारी ६ परिवार रहते हैं, जो अब भी जैन परम्परा का पालन करते हैं। वह अपने को बौद्ध कहते हैं क्योंकि जैनियों का सम्पर्क भी नहीं रहा। खंडगिरि उदयगिरि यात्रा करते हैं।

●

रंगिया जाति के बंधुओं की धारणा और वेदना

पुरढिया—पो०–कोटपुला, थाना–खुर्दा, जि०–पुरी।

घर–३, सख्या–२७, गोत्र–काशी।

कटक से ५० मील दूर पर यह गाँव स्थित है, उदयगिरि, खडगिरि मे ३० मील दूर है, बुनकर (रगिया) जाति के मध्यम दर्जे के उद्योगी पुरुप है। रास्ता ठीक है।

कपडा बुनना और रगना इनका काम है। पढे-लिखे कम हैं, फिर भी वेद मत्रो का उच्चारण अपने ढग से ठीक करते हैं। शुद्ध शाकाहारी है, प्याज आदि नहीं खाते, जल छान कर पीते है, रात्रि भोजन नही करते, बासी नही खाते, विधवा विवाह नही करते, सिद्ध क्षेत्र की वर्प में एक यात्रा करते है, अर्थात् खडगिरि, उदयगिरि जाते हैं, सत्सग के इच्छुक हैं।

प्रमुख सज्जन १ श्रीपरमानद पुष्टि, २ श्री दीनवधु नायक।

पुरढिया पाटन—पो०–कोटपुला, थाना–खुर्दा, जि०–पुरी।

घर–२०, सख्या–१९२, गोत्र–काशी, नाग, साहू।

(विचारणीय प्रश्न)—मुर्गा उडाल गाव है, बुनकरो की बस्ती है, अच्छी स्थिति वाले रगिया दिखे, घर-घर में कई कर्घे चलते दिखे, भारत सरकार की नई नीति (सूत सम्बन्धी) से सूत मिलने में कठिनाइयाँ हैं, इसी से सभी चिंतित हैं।

लडके-लडकियाँ पढाते हैं, प्राइमरी स्कूल है, औपधि का प्रवन्ध नही है, उडिया भापा जानते हैं, अन्य भापायें नही जानते, हिंदी समझते हैं। विधवा-विवाह प्रचलित हो गया। यह क्यो ? उत्तर मिला कि बौद्ध धर्म इसकी आज्ञा देता है, पर पहला धर्म इसकी आज्ञा नही देता था इसमे नही होता था, अब होता है।

प्रश्न—पहला धर्म कौन था ?

उत्तर—खडगिरि उदयगिरि वाला। (जैन धर्म)

प्रश्न—जैन धर्म क्यो छोडा ?

उत्तर—क्योंकि उस धर्म के मानने वाले समाप्त हो गये, या फिर हमारे मे दूर हो गये। आदि।

इन प्रश्नोत्तरो मे जो चोट दिल पर लगी वह लेखनी से नहीं लिख सकता हूँ। जैनधर्म के मानने वाले समाप्त हो गये। यह धारणा क्यो बनी इसकी तह में जाने से पता लगा कि अन्य धर्मों वालो ने इस क्षेत्र में यही प्रचार कर रखा है कि भारतवर्ष में जैनधर्म अब नहीं है, बौद्ध धर्म है। इसी से जैनियो की सख्या कम होती गई और लाखो बन्धु अजैनो में गर्भित हो गये। सन् १९७२ ई० में जनगणना में जो बौद्धो की सख्या भारत में जैनियो से अधिक प्रगट हुई है उसका मूल कारण समाज विभ्रम है।

पुरोहितो मे शादी विवाह कराते है, जल छान कर पीते है, घर पर टल्ना बराबर डाले रहते है। वर्ष मे सिद्ध क्षेत्र की वदना सपरिवार करते है। रात्रि भोजन नही करते, मास, मछली, अडा, प्याज आदि नही खाते, सूतक पातक मानते है।

प्रमुख सज्जन १ श्री जगन्नाथ महाजन, २ श्री भगवान बोहरा, ३ चन्द्र शेखर बोहरा, ४ श्री मगरु साहू, ५ श्री चैतन्य साहू।

वाघेश्वर—पो०—ग्राम, थाना—बाकी, जि०—कटक।

घर—१८, सख्या—९८०, गोत्र—साहू।

ठीक नही मानते, दहेज कुछ-कुछ बढा है, समाज की पचायत प्रथा का पालन करना पडता है, रास्ता टूटा-फूटा है ।

प्रमुख सज्जन १ श्री वृन्दावन साहू, २ श्री भारत बधु साहू ।

घोला पात्थर—पो०—काला पात्थर, थाना—बाकी, जि०—कटक ।

घर—५०, सख्या—४५०, गोत्र—काशी ।

प्राइमरी स्कूल है, दवाखाना नही है, पोस्ट ऑफिस नही है, गाँव बडा है, सुन्दर कृषि है, पशु पालक है, अच्छे बुनकर रगिया है । शुद्ध शाकाहारी है। रात्रि भोजन प्रचलित किन्ही-किन्ही घरो मे हो गया, जल छानकर पीते है, कच्चे झोपडे है, यात्रा करने गाँव वाले जाते हैं, गुरु भक्त हैं । खडगिरि उदयगिरि को बौद्ध मदिरो का तीर्थ मानते हैं, भक्ति मे वदना करते है । वयोवृद्ध श्री पद्मनाभ साहू जैनधर्म के जानकार हैं, वह भ० पार्श्वनाथ स्वामी की स्तुति बडे सुन्दर ढग से पढ कर सुनाते हैं । बडे दर्द में बोले, "जैनियो ने इस क्षेत्र को छोड कर बडी भूल की है, मात्र उत्तर भारत को जैनधर्म का केन्द्र बनाया । पूर्व और दक्षिण भूल गये यह अच्छा नही किया । उनके प्रचारक विद्वान् साधुओ को इस ओर आना चाहिये । नग्न साधुओ को खडगिरि उदयगिरि पर चातुर्मास करना चाहिये ताकि धर्म का प्रचार हो, पिछले साल एक नग्न जैन साधु के दर्शन हमने खडगिरि उदयगिरि पर किये थे, बडे शात स्वभावी साधु थे । आदि । यह मुनिराज पूज्य १०८ मुनि श्री नेमसागर जी महाराज देहली वाले थे ।

प्रमुख सज्जन १ श्री पद्मनाभ साहू, २ श्री अर्जुन राउत, ३ श्री उदितनाथ साहू, ४ श्री उदयभानु राउत ।

कालापात्थर—पो०—खास, थाना—बाँकी, जि०—कटक ।

घर—७८, सख्या—२७२, गोत्र—काशी, कृष्ण ।

अच्छी नगरी है, रास्ता कष्टदायक है, जीप आ जा सकती है । बौद्ध भिक्षुओ का जोर धन वैभव से बढ रहा है, वैष्णवो का भी प्रचार है जिससे कुछ तनाव बढा है । खडगिरि उदयगिरि की यात्रा करके धन्य भाग

मानते हैं। "जब इन्हें जैनधर्म के सिद्धान्त बताये और उनका रहन महन बताया तथा अन्य जगह के सराको का चारित्र समझाया तो बोल उठे, यह सब तो हमारे इन ग्रामो में घर-घर में रगिया जाति में प्रचलित हैं तो हम भी जैन हैं। क्योकि हमारे यहाँ रात्रि भोजन नही, अनछना जल नही, प्याज लहसुन नही खाया जाता, बाजार का नही खाते, हिंसा व्यापार नही करते, शुद्ध शाकाहारी हैं आदि। साहित्य उडिया भाषा में छपवा कर भेजिये, ताकि हमें जानकारी हो आदि।

प्रमुख सज्जन —१ श्री लोकनाथ साहू, २ श्री रघुनाथ दान, ३ श्री भागीरथ साहू, ४ श्री लिगराज साहू।

तुलसीपुर (धर्मकेन्द्र)—पो०-खास, थाना-बाकी, जि०-कटक।

घर-६०, सख्या-५४०, गोत्र-जिनेश (जिगनेश)

यह नगरी सम्पन्न रगिया गृहस्थो की है, पक्के मकान है, घर-घर में आधुनिक साधन हैं, पढे लिखे लोग हैं, श्रीसम्पन्न व ज्ञानी हैं, रहन महन भी शहरी है, कपडे गेरुआ पहनते हैं, इस नगरीको रगिया जातिका प्रमुख केन्द्र या धर्म प्रचार केन्द्र कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नही होगी। शुद्ध शाकाहारी चारित्रवान पुरुष हैं, लडके-लडकियो को उच्च शिक्षा दिलाते हैं। अच्छे सत्सगी हैं। श्री नरसिंहदास राउत सुसम्पन्न ज्ञानी श्रीमत हैं मिलनसार हैं, और अपनी जातिके माने हुए नेता है। बौद्धधर्म ग्रहण किया है। यहाँ बौद्धधर्म का प्रचार अपने ढग से पुन पनप रहा है। जापान की बौद्ध सोसायटी अपना पूरा-पूरा समय इस ओर लगा रही है, धन व साहित्य भी दे रही है। 'बुद्ध शरण गच्छामि, धम्म शरण गच्छामि, सघ शरण गच्छामि" कह कर ही श्री नरसिंह दास राउत ने चर्चा प्रारम्भ की। नये बौद्ध हैं अत बार-बार बुद्ध का नाम लेते थे, पर सस्कार जैनत्व के होने से फिर जैनधर्म के ग्रथो का अध्ययन भले ही कम हो पर क्रियायें जैन की अब भी चल रही हैं। खडगिरि उदयगिरि की पूज्यता में रचमात्र भी कमी नही आई और भ० महावीर व ऋषभदेव का भी स्मरण कर उठे, और बोल उठे-खडगिरि उदयगिरिको बौद्ध मदिर बताया अवश्य जाता

है पर हम तो उन्हें भ० आदिनाथ महावीर अनतनाथ और कलिंगजिन का मानते है। गोत्र ही जिनेश या जिगनेश है तो उन्हें बताया कि मात्र वीत-राग प्रभु को ही जिनेन्द्र देव कहा गया, इन्द्रियो पर जिन्होने विजय प्राप्त कर ली उन्हे ही जिनेन्द्र कहा है उन्ही के माननेवाले जैन हैं। फिर आप लोग तो गोत्र से स्पष्ट जैन हो, यह भूल क्यो रहे हो।

ज्योही हमने कहा कि तुम 'जैन' हो भूल क्यो रहे हो। त्यो ही एक वयोवृद्ध पुरुप आगे वढ आये और कहने लगे, सन् १९२३ ई० में यहाँ एक जैनधर्म प्रचारक आये थे। उस समय हमारे चारो ओर जैनधर्म की उपासना, महामत्र का जाप और तीर्थ वदना व निर्ग्रंथ गुरुओ का उपदेश सुना जाता था। फिर उसके वाद कोई भी न आया, जव कि भारतवर्ष वदल गया ? समाजों का रहन-सहन वदल गया, खान पान वदल गया, वोल चाल वदल गया और आचार-विचार वदल गया, पर हमारे घरो की परम्परा आज भी वैसी है जैसी हमारे पूर्वजो ने वनाई थी। आप (मैं) आज पुन १९७३ ई० में पधारे हो फिर कितने वर्पों में कौन आवेगा प्रभु जाने। आते रहोगे या गायव हो जाओगे ? विचारो और फिर कदम वढाओ। वडा व्यग कसा और वेदना व्यक्त की।

सोचने लगा—कि कहाँ हैं वह जैनाचार्य गुरु और धर्म भक्त श्रीमत जो नित्य एक जैन वना कर भोजन ग्रहण करते थे और कहाँ आज का जो एक जैन नित्य खो रहे हैं।

वयोवृद्ध पुरुप श्री वुद्धिराय राउत जो ८० वर्प के धर्मात्मावधु हैं जिन्हें अपनी प्राचीन परम्परा का वोध है, प्राचीन परम्परा का जो पालन करते है आपने पुन कहा—पहले इस क्षेत्र में जैनधर्म की मान्यता थी उसकी पुष्टि आज भी हमारे खानपान रहन सहन से की जा सकती हैं। पर जैनियो के सम्पर्क छूट जाने से विछुड गये। आदि। अव आप पुन आये सो ठीक प्रचार करो आओ जाओ मिलो जुलो तो शायद सफलता मिल जावे। क्योकि अभी तो यहाँ सभी शुद्ध शाकाहारी हैं रात्रि भोजन त्यागी है जल छान कर पीते हैं, खडगिरि उदयगिरि की यात्रा करते हैं

अहिंसा धर्म के उपासक हैं। ठीक है, जैनियों से हटकर हम भगवान् बुद्ध की शरण में गये हैं, क्योंकि उनके अनुयायी तन मन धन से हमारी मदद करते हैं आदि। बौद्ध भारत व प्रचारक बराबर आते जाते रहते हैं।

प्रमुख सज्जन— १ श्री नरसिंह राउत बी० ए०, २ श्री बुद्धिराय राउत ३ श्री ना० जनार्दन राउत बी० ए०, बी० एड० ४ श्री मोहन-रत्न बी० ए०, ५ श्री चन्द्रमोहनदास, ६ श्री पद्मचन्द्र पृष्टि, ७ श्री नटवरलालदास एम० ए०, ८ श्री सनातन पात्र।

श्री जगन्नाथ पुरी—यह हिन्दुओं का परम पूज्य तीर्थ स्थान है[१], विशाल मंदिर भगवान् (और जैन मूर्ति स मंदिर) जगन्नाथजी का इस जगह स्थापित है, इतना विशाल मंदिर और प्रांगण है कि एक साथ बीस हजार आदमी बैठ सकते हैं, और विभिन्न महलों में (प्रांगणों) पाठ से लगाकर दस हजार तक श्रोता व भक्त बैठकर भगवान् की भक्ति करते हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य की पीठ विशाल है। यहां पर प्रतिवर्ष श्री जगन्नाथ जी की रथ यात्रा आषाढ सुदी २ को होती है जिसमें लाखों यात्री भाग लेते हैं।[२] प्रतिवर्ष नया रथ बनता है और फिर उसे बाद में नीलाम-कर दिया जाता है "जगन्नाथ का भात सभी पसारें हाथ" वाली कहावत पढा करता था, सुना करता था पर आज जब प्रत्यक्ष श्री जगन्नाथजी के मंदिर में खडा हूं तब प्रत्यक्ष ही सब यही दृश्य देख रहा हूं। शुद्ध पवित्र विभिन्न प्रकार के चावलों के पके-पकाये पात्र भर-भर कर भ० जगन्नाथ स्वामी के सन्मुख उपस्थित अन्नपूर्णा भंडार में भंडारा हो रहा है। सैकड़ों पात्र बडे-बडे मटकों के करते हैं विभिन्न प्रकार की कढ़ियां भी रखी हैं, साग भाजियां हैं। पर लहसुन, प्याज, आलू आदि नहीं हैं पात्रों को भरते

१ पुरी नाम पुरुसे पडा है अर्थात् भ० ऋषभदेव को पुरु कहते थे।
२ आषाढ सुदी २ को भगवान् ऋषभदेवस्वामी का निर्वाण है जगन्नाथ जी भगवान् ऋषभदेव हैं ऐसा ऋषभदेव स्तुति में आता है।

वाले ब्राह्मण मुह पर पट्टियाँ बाधे हैं सिर पर शुद्ध दुपट्टा बधा है, कमर में धुली हुई गीली धोती बधी है, जनेऊ पडे हैं, आने-जाने वाले मार्ग में कोई भी खडा नही हो सकता, जल छिडक कर पवित्र किया गया मार्ग पर कोई पैर नही रख सकता। रसोई घर से भडार घर तक एक ही रास्ता बनाया गया है। पडे, पुजारी और भिखारियों की लम्बी सेना है जिससे यात्री बच जाय नामुमकिन, उन्हें दान दक्षिणा देकर पीछा छुडाया जाता है।

रजोगुण सतोगुण और तमोगुण के प्रतीक तीन विशाल शिखर श्री सुभद्रा जी पर श्री बलराम (बलभद्रजी) जी पर और श्री जगन्नाथ जी पर बने हुए हैं। यह तीनो मूर्तिया एक साथ एक ही विशाल वेदी मे विराजमान हैं। समस्त मदिर पहाड को काट छाँट कर बनाया गया है। मदिर के सम्मुख ही कुछ दूर पर विशाल उत्तु ग तरगो से परिपूरित समुद्र अपनी गौरव गरिमा से उमड उमड कर चरण पखार रहा है। हरित नील मणि के समान कचन जैसा स्वच्छ जल सभी का मन हरता है। छोटे-छोटे बच्चे जिनकी उम्र ६ वर्ष की है समुद्र की लहरो के साथ ही गोते मार कर सीप इकट्ठी करते देखे गये, लहरें बच्चो को अपने साथ ले जाती और कुछ क्षण के बाद ही किनारे पर छोड जाती। यह दृश्य घटो समुद्र के किनारे देखने मे भी मन नही भरता।

श्री जगन्नाथपुरी धन धान्य से पूरित धार्मिक नगरी है, पर धर्म द्रोह भी देखने को मिला। श्री जगन्नाथजी मे ४० घर रगिया जाति के सराको के हैं, वह लोग कपडे बुनकर यात्रियोको वेचते हैं, पडो पुजारियो को देते हैं, शुद्ध शाकाहारी हैं। भगवान् जगन्नाथजी के मुख्य द्वार पर जहां यात्री दर्शन करने जाता है, एक शीशे से जडी अलमारी में वर्षो पुरानी वीतराग जिनेन्द्र भगवान् श्री शातिनाथ स्वामी की प्रतिमा विराज-मान थी। जिसे जगन्नाथजी के मदिर के अदर से बाहर विराजमान तत्कालीन पुलिस अधीक्षक रा० ब० केसरे हिंद श्री सखीचन्द्रजी पन्नाने

की थी। किन्ही दुष्ट धर्मद्रोही व्यक्तियो ने अभी-अभी (एक दो दिन के भीतर) मूर्ति का लिंग छेदन करके अपनी मदान्धता का परिचय दिया हैं।

हमारे माथ आये धर्मप्राण वधु श्री शाति कुमार जैन श्री सम्पतराय जैन और श्री जौहरमलजी जैन सभी वेदना से भर गये, और सभी उपजिलाधीश की कोठी पर पहुँचे जो इस मदिर की देख भाल करते हैं। (फिर मदिर पुरातत्त्व विभाग उडीसाके आधीन है)। यह उपजिला-धीश श्री विहारीलालजी पटनायक है। ऋषिराज अरविंद स्वामी के भक्त है, माताजी के भक्त है, पाडचेरी की सालमें दो वार यात्रा करते हैं, इतने भक्त है कि कार के स्टेयरिंग पर-टेलीफून के नम्वर पर-पेन पर-दीवाल पर जहाँ भी देखो श्री अरविदऋषि के प्लास्टिक के चित्र लगे है। इन्हें अपनी वेदना सुनाई, आप वडे चिंतित हुए और शीघ्र अपराधियो का पता लगाकर दडित करने का वचन दिया तथा जिनेन्द्र देव की मूर्ति का लिंग पुन लगवाने का आश्वामन दिया।

सभी साधनो से सम्पन्न यह नगरी है। शिक्षा का पूरा-पूरा प्रवध भी है। प्रसन्नता है १२ वर्प में श्री जगन्नाथ स्वामी की मूर्ति को 'काय' नवीनीकरण किया जाता है। जिसमें भगवान् चन्द्रप्रभु की मूर्ति हृदय स्थल पर स्थापित की जाती है, ऐसा सुनने को मिला मगर पूरी-पूरी खोज करने पर भी किसी ने स्पष्ट न वताया। यह मदिर जिन मदिर भी अवश्य रहा होगा जव कि भ० शातिनाथ स्वामी की मूर्ति खडगामन अदर थी तो और भी मूर्तिया होगी ?

●

चमत्कार युक्त

श्री अतिशय क्षेत्र-पार्श्वनाथ महादेव बेड़ा !

अनाईजामबाद (पुरलिया) प० बंगाल

पुरलिया (प० बंगाल) जिले मे चारो ओर जैन मूर्तियाँ निकल रही हैं, जहाँ भी जाओ कोई न कोई मूर्ति किसी न किसी कृषक के पास मिल ही जाती है। सराक बंधु इस जिले में चप्पे चप्पे पर बसे हुए हैं[1]।

मानभूमि कभी जैनधर्म का महान् केन्द्र रहा होगा इसमें दो राय नही हैं। आज मानबाजार में भले ही जैन लोग या सराक लोग न हों, पर, उसके आस पास जैन संस्कृति के प्रतीक जैन मंदिर और जैन प्रतिमायें अवश्य हैं।

पाकबीर का पावन पवित्र क्षेत्र भले ही बलिदान का क्षेत्र हमारे उदासीनता से बना हो, भ० ऋषभदेव की ९ फीट खड्गासन श्यामवर्ण की प्रतिमा भले ही भैरो जी के नाम से पुकारी जा रही हो, पर भ० ऋषभदेव, पार्श्वनाथ और अन्य-अन्य तीर्थंकरों की मूर्तियाँ तो अब भी हमारी ओर देख रही है, हम मूर्तियो में भगवान् के दर्शन करते हैं और मूर्तियाँ हम में उदासीनता व उपेक्षा के भाव देखती हैं। भले स्तूप (मुनियो की कुटीर) और मुनियो के उपदेश कक्ष तथा पूजाग्रह व अभिषेक कुम्भ आज पाषाण बने हमारी पाषाणता को निहार रहे हैं पर, युग हमें क्षमा न कर सका न करेगा। अब भी समय है इस पावन पवित्र क्षेत्र की रक्षा करो[2]।

अनाईजामबाद जो कि पुरलिया से कच्चे रास्ते मे ५ मील है और कार के मार्ग से १३ मील है सुन्दर रमणीक स्थान है, इसके चारो ओर जैन मूर्तियाँ प्राप्त हुई व जैन मंदिर है।

---

१ देखो "सराक बन्धुओ के बीच" और "सराक हृदय" नामक पुस्तकें।

२ पाकबीर का पूरा वर्णन "सराक बन्धुओ के बीच" पुस्तक में पढिये।
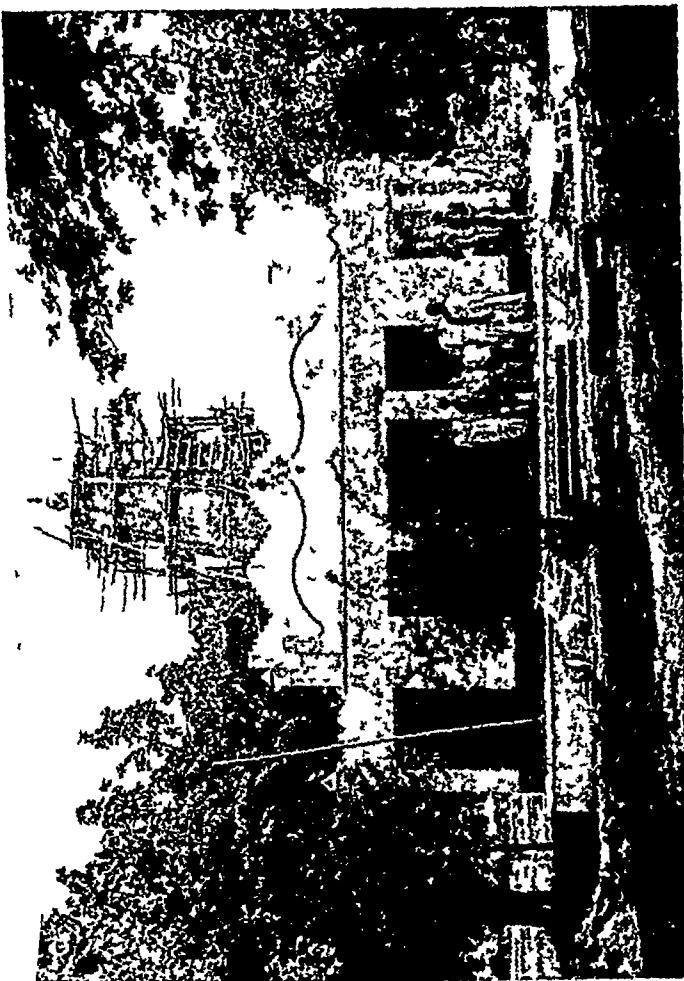
अनाईजामबाद में श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर का नवीन भव्य भवन
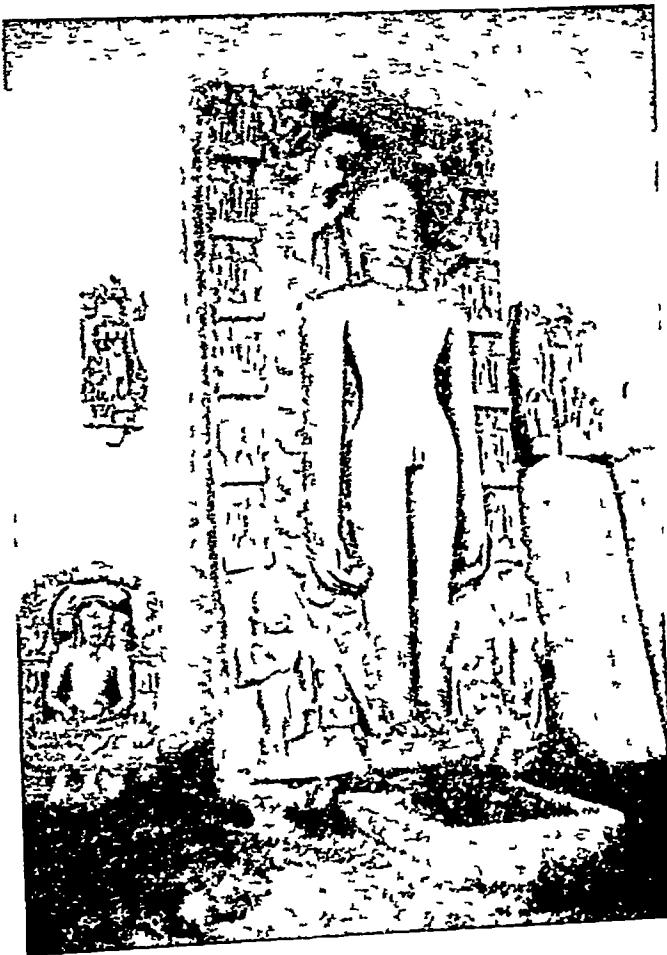
श्री देवाधि देव भगवान पार्श्वनाथ स्वामी
अनाईजामवाद में निकली हुई अतिशयवान मूर्ति (विस्तृत विरवण
अध्याय ८ में पढिये ।)
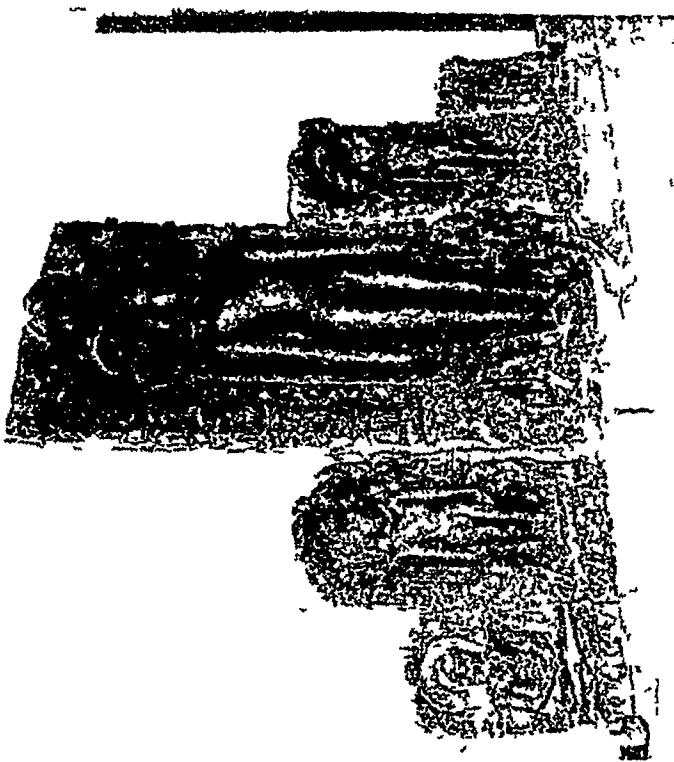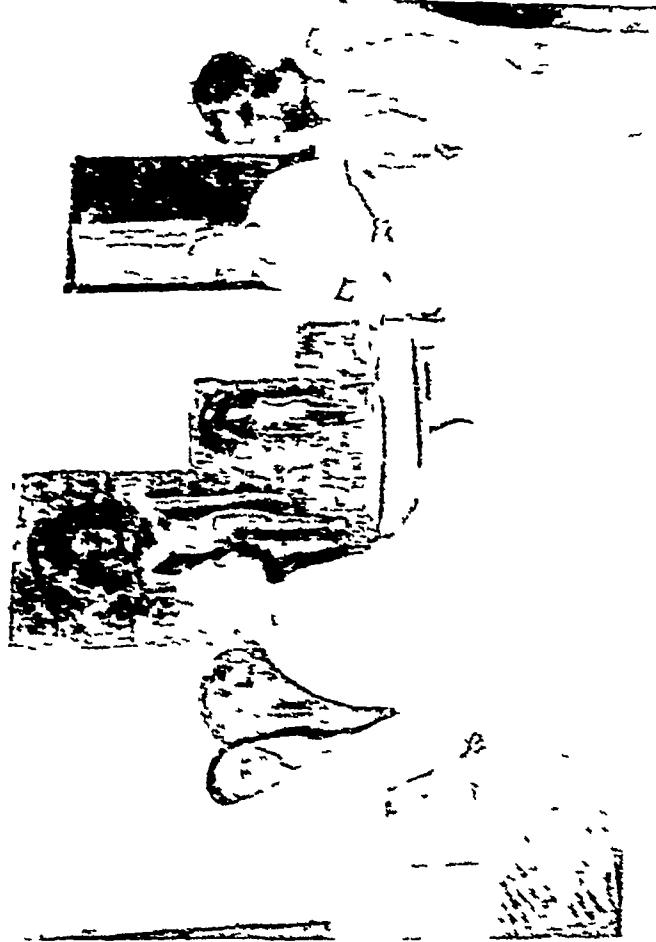
अनाईजामबाद मे विराजमान प्रतिमा (अध्याय ८ में वर्णन पढ़िये।)

श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर अलाईजामनगर

मूर्ति विराजमान के समय पर बाबू दिलरचन्दजी, श्रीमती किरणमाला जैन, श्री महन्त चिदानन्दजी पूजन करते हुए। श्री पं० बाबूलालजी जमादार विधि विधान कराते हुए।

श्री पार्श्वनाथ जैन गौशाला, श्री पार्श्वनाथ जैन मदिर, श्री पार्श्वनाथ जैन अतिथि भवन, श्री पार्श्वनाथ शिवानद जैन जूनियर हाई स्कूल तथा श्रीपार्श्व-नाथ जैन जल कूप जहाँ बनाये गये हैं वहाँ पर, श्री हरि मदिर, श्री तुलसी मदिर, श्री दुर्गा मदिर का भी निर्माण किया गया। सत्य यह है कि यह स्थान प्रात स्मरणीय पूज्य १०५ क्षु० गणेश प्रसाद जी वर्णी (पूज्य मुनि गणेश कीर्ति भ०) की भावना का साकार रूप है वह चाहते थे कि "ऐसा कोई पवित्र धाम मिले जहाँ पर चारा ओर वृक्ष हों, ठडी छाया व स्वच्छ पवन मिले, नदी का किनारा हो, चारो ओर हरियाली हो, नगर व गाँव का कोलाहल (शोर) न हो, शुद्ध जल हो, भक्ष्य वनस्पति फल हो और पूज्य भगवान की मूर्ति हो साथ ही प्रत्येक धर्म के पावन मदिर भी हों, ताकि सभी धर्मों का स गम प्रतीत हो और रात दिन तत्त्व चर्चा करके आत्म कल्याण हो", । आदि, ।

यह सभी बातें पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र पर प्राप्त होती हैं[1] क्या यह अतिशय क्षेत्र है ?—हाँ, क्योकि यहाँ पर नित्य नये नये चमत्कार होते रहते हैं (१) प्रथम तो भ० पार्श्वनाथ स्वामी के निकलने से पहले महत शिवानदजी को ही नाना प्रकार के भयो से मोर्चा लेना पडा और नाना रूपो में स्त्री, पुरुप, जानवर और हवाओं ने अपना जोर आजमाया, पर महत शिवानद जी टस से मस न हुए। जिस स्थान पर दिन में आने से लोग मौत का भय खाते थे, आज आधीरात को भी मानद विहार करते है। यह सव चमत्कार भ० पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति का ही सभी मानते है।

दूसरा चमत्कार—वन के पशु व जानवर (जैसे वनविलाव, नाग और खरगोश, चिडियाँ, बाज़ आदि) बराबर झोपडी में आकर अपनी भक्ति प्रदर्शित करते हैं व करते रहे हैं[2] ।

---

१ अनाईजामवादका वर्णन "सराक बन्धुओ के बीच" पुस्तक में पढिये।

२ लेखक ने वन बिलाव व नाग तथा बाज़ को स्वय देखा है। वन बिलाव की भक्ति का वर्णन, 'सराक हृदय' पुस्तक में पढिये।

डा० अखिल कुमार जैन आरा वाले अनाईजामबाद में प्रतिमा के सम्मुख प० वावूलालजी जमादार व महन्तजी के साथ ।

श्री दि० जैन मन्दिर और हरि मन्दिर (अनाईजामगाव)

की अपेक्षा) अति हर्षित हो साष्टाग नमस्कार करके बोल उठे यही मूर्ति कई बार स्वप्न में दिखाई दी, इसी के साथ साथ भगवती काली के नजदीक भ० पार्श्वनाथ स्वामी भी दिखते है वह कहाँ है ? काली मदिर का द्वार खोला गया उसे देखकर डाक्टर बोल उठे यही है वह मूर्ति जो हमें कई दिन मे स्वप्न मे दिखती थी, आज धन्य भाग हुआ। जो प्रभु दर्शन पाये। वह प्रथम प्रथम ही इस क्षेत्र पर आये थे।

सातवा चमत्कार—अभी विराजमान[1] के दिन ७ जुलाई को हवन कुड की प्रज्वलित अग्नि में (हवन हो जाने के बाद) एक पाँच वर्ष के छोटे बालक का पैर भूल से पढ गया, मैं घबडा गया कि बालक का पैर झुलस गया होगा लेकिन देखा बच्चा हसता हुआ अपने साथियो में खेलने लगा और अपनी माँ के साथ सानद मदिर जी से बाहर गया। पर, बच्चे को कही भी अग्निका प्रकोप न हुआ। सभी इस घटना से प्रभावित हुए और क्षेत्र के प्रति आकर्षण बढा हुआ। ऐसे अनेक चमत्कार यहाँ हो रहे है, बीमार स्वस्थ होते हैं, अपनी मान्यताओं की पूर्ति पाकर भक्त जन नित्य आते है, ऐसे अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ जी के भव्य दर्शनो का लाभ सभी को प्राप्त हो ऐसी प्रभु से कामना है।

भविष्य में इस पुनीत सम्मेलन व नेत्र यज्ञ आदि होगे ऐसी आशा है[2]।

---

१ ७ जुलाई १९७३ ई० को भ० पार्श्वनाथ स्वामी को नवीन जिनवेदी मे विराजमान श्री बा० शिखरचद जी जैन ने श्रीमती धनवती देवी (ध० प० श्री सेठ विमल प्रसाद जैन) और श्रीमती किरण माला जैन तथा अन्य साधर्मी जैन बधुओ बहनो की पूर्णाहुति देने के बाद किया। प्रारभिक प्रतिष्ठा विधि स्वय लेखक के (श्री बाबूलाल जैन जमादार ने) पूर्ण कराई।

२ दिसम्बर ७३ में विशाल वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर सराक सम्मेलन, भ० महावीर स्वामी का २५ सौंवा निर्वाण दिवस सम्मेलन, नेत्र यज्ञ, और जैन विद्वत् सम्मेलन होगा।

गंगा जल घाटी में रचनात्मक कार्य प्रारम्भ

पोलमा में निकली जिनमूर्तियों के पावन स्थान पर एक डोल का कुआ
(विवरण पढिए-जैन सस्कृति के विस्मृत प्रतीक के पृष्ठ ७५ पर)

पोलमा में निकली हुई चतुर्मुखी जिन प्रतिमाएँ
(विस्तृत वर्णन जैन सस्कृति के विस्मृत प्रतीक में पृष्ठ ७ पर)

बस फिर क्या था, नवयुवको ने कर डाला आनन-फानन निर्णय, कि जो "दहेज लेगा उससे सामाजिक सम्बध समाप्त तथा जो दहेज देगा उसकी लडकी उसके घर रहेगी। तथा जो गरीब भाई हैं उन्हें लडकी की शादी में जमीन, जायदाद नहीं बेचनी पडेगी और सराक समाज ही चन्दा करके शादी करेगी" आदि।

उसी का पालन प्रारम्भ हो गया, जिन सराको ने दहेज लिया, दिया उन्हें शर्मिन्दा होना पडा, रुपया वापिस हुए, जिन गरीबो ने जमीन जायदाद बेची थी उनकी जमीनें वापिस करायी और उनके कर्जे को सराक-समाज ने पूरा किया। यह महान कार्य धीरे-धीरे सभी प्रातो व जिलो मे फैल जायगा ऐसी आशा है।

मालतोडा क्षेत्र में भी नवयुवक इसी प्रकार का कार्य करने जा रहे हैं। बगाल के सराको का विहार के सराको मे शादी विवाह शीघ्र शुरु होने के लक्षण भी बन गये हैं।

बगला भाषा का साहित्य तैयार होने लगा है अत उसके माध्यम से प्रचार बढेगा। सभी सराको को पुराना भय सता रहा है कि कही यह श्रावक लोग हमारी गति पुरानी न करा दे जैसी २५-३० साल पहले हुई थी कि पावापुर की यात्रा जैन बनकर की और जब घर वापिस लौटे तब सभी स्त्री-पुरुषो को सिर मुडन कराना पडा तब सभी जातियो ने बहिष्कार वापस लिया।

आज स्वतत्र भारत में सभी अपने धर्म के मानने मे स्वतत्र है, सराक कोई नवीन धर्म ग्रहण नही कर रहे है वह तो शुद्ध प्रामाणिक जैन हैं श्रावक है उन्हें भय कैसा?

अब सराक जाति का कार्य निर्माणचरण में पहुँच गया है अत सराक नवयुवको को ही कार्य करने के लिए तैयार किया जा रहा है, जिसका कार्य प्रारम्भ हो गया।

●

उद्बोधन

रचयिता—श्री लक्ष्मीचन्द्र जी 'सरोज' जावरा

है कौन तुम्हें कहता अजैन, तुम तो सुजैन सुन्दर सराक।
जब गोत्र तुम्हारा आदिदेव, जब गोत्र तुम्हारा शांतिदेव।
जब गोत्र तुम्हारा धर्मदेव, जब गोत्र तुम्हारा ऋषभदेव॥
जब गोत्र तुम्हारा नेमिनाथ, जब गोत्र तुम्हारा पार्श्वनाथ।
तब तुम्हे चाहिये कौन हाथ, तुम तो सचमुच हो जगन्नाथ॥
हो गोत्रदृष्टि से तीर्थंकर, के नाम विश्व में महा पाक।
है कौन तुम्हे कहता अजैन, तुम तो सुजैन सुन्दर सराक॥
जब गोत्र तुम्हारा है गौतम, जब गोत्र तुम्हारा है माँजी।
जब पार्श्वनाथ प्रभु के पूजक, सम्मेदशिखर तीरथ राजी॥
बीता गौरव कुछ याद करो, बनकर खुद ही अपने काजी।
साहस सहिष्णुता शौर्य सिंधु, आ गले मिलो तज नाराजी॥
गुण-गण से पूजित जन मन हो, मुख पर जैसे हो भली नाक।
है कौन तुम्हें कहता है अजैन, तुम तो सुजैन सुन्दर सराक॥
सच समझो तुम पवित्र ऐसे, जैसे हो मन्दिर की पूजा।
सच कृषि कर्मी खनित्र जैसे, भार उठाने साथी दूजा॥
जब दिन रात किया करते श्रम, तब सचमुच श्रमणोपासक हो।
तुम वसुधा पर नभ-छाया में, उदार उर करुणा-वाहक हो॥
आशय तो तनुके ढकने का, धोती हो या फिर हो फराक।
है कौन तुम्हे कहता अजैन, तुम तो सुजैन सुन्दर सराक॥
यह मत भूलो सिंह तनय हो, गीदड दल में बनो न गीदड।
यह मत भूलो शुद्ध स्फटिक, कीचड में मिल बनो न कीचड॥
संस्कार कुछ विकृत हुए तो, प्रकृत रूप में फिर से लाओ।
जैसे मानव जीवन दुर्लभ, वैसे जैनधर्म समझाओ॥
एकबार श्रावक-मुनि बन लो, तप से तनु को स्वर्णिम कर लो।
गुण गायेंगे कालिदास औ, शेक्सपीयर गेटे फिराक॥
है कौन तुम्हे कहता अजैन, तुम तो सुजैन सुन्दर सराक॥

पलामू जिले की भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति और बेलचम्पा का योगदान

पलामू जिला—बिहार प्रान्त में छोटा नागपुर डिवीजन मे आदि-वासी जातियो का शुद्ध जिला है। इसके तीन ओर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और उडीसा प्रदेश हैं। उनकी सीमायें इस जिले से लगती है।

इस जिले में नदियाँ, पहाड और विशाल जङ्गल चारों ओर है। पलामू की सबसे बडी नदी कोयला है, जो नेत्रहाट की ३ हजार फीट की ऊँचाई से बहकर नीचे गिरती है। डाल्टनगज को स्पर्श करती हुई बेलचम्पा पर अपना विशाल स्थान बनाये हुए है जो आगे जाकर सोन नदी में विलीन हो जाती है। इस नदी मे बारह माह पानी रहता है जो सिंचाई व फसलो को लाभदायक है।

पलामू ऐतिहासिक काल का जिला है, नगरी है। जहाँ का राजा मेदनीराय था, यह राजा खरवाल जाति का था, जो धर्मात्मा, बहादुर, शूरवीर था। उसका उस समय का बनाया राजमहल उसके गौरव की कथा सुनाता है। कला प्रेमी और स्थापत्य का चितेरा तथा भविष्य का द्रष्टा था, जो उसने अपने राजभवन में अकित कराया उसे देखने वह लोग जाते हैं जो डाल्टनगज जाते हैं। राजमहल डाल्टनगज से कुछ मील की दूरी पर स्थित है।

राजा सर्वगुणसम्पन्न था, धीर-वीर, प्रजावत्सल और उसके सुख-दु ख की चिता में अपने को खपा देने वाला था। जो आज भी इस क्षेत्र की जनता अपने लोक-गीतो में मेदनीराय की कीर्ति के रूप मे सुरक्षित रखे हुए है। प्रत्येक शुभ मागलिक अवसरो पर घर में उसके नाम का कीर्तन होता है।

यह जिला साहित्य, सगीत से शून्य है, इसका पडोसी वगाल जहाँ साहित्य, सगीत और कला में प्रगति पर है वहाँ यह जिला निराशा में भटक रहा है ।

ब्राह्मण, राजपूत, पठान और कायस्थ जातियाँ जो पश्चिमी प्रदेशो से आकर इस जगह वसी हैं वही इन लोगो को सूद पर रुपया उधार देती है, वही इनकी जमीन जायदाद पर कब्जा किये हैं, वही इनके मालिक हैं। फिर भी कोई ऐसा नही है जो रोना और हँसना न जाने। जन्म से रोना और हँसना प्रकृति भेंट करती है। इस जिले की आदिवासी जनता भी अपने दु खो को हल्का करने के लिए स्त्री-पुरुष मिलकर 'धानरोपण' गीत और नृत्य गाते व नाचते हैं। धानरोपण के समय का गीत अति उत्साह वढाने वाला है, दु ख को भुलाने वाला और कर्त्तव्य पर चलाने वाला है, उत्सवो, त्यौहारो पर लोक-नृत्य और लोक-गीत, मृदग, खजरी, जजरी, मँजीरो के साथ जव गाये जाते है तब एक उत्साह व उमग का वातावरण वन जाता है। वीरता-धीरता पुरुषो में स्पष्ट उस समय देखने को मिलती है।

जिलेकी भाषा अर्द्धमागधी है। पर वाहुल्य मैथिल्य का है। मिथिला की सभ्यता जगह-जगह पर देखने को मिलती है। नर-नारी अधिक पढे-लिखे नही है। फिर भी नवीन शिक्षा का प्रचार प्रारम्भ हुआ है जिससे कुछ पढे-लिखे युवक-युवतिया दिखने लगी है। हाईस्कूल व हायर सैकेन्ड्री तक ही शिक्षा है।

दुर्भाग्य इस जिले पर सदैव अपना हाथ रखे रहता है। सूखा, अकाल महामारी, चेचक, बेरोजगारी, भुखमरी आदि थोडे-थोडे समय वाद खडी रहती है। ऐसे पिछडे जिलेमें भगवान् महावीर का समोशरण अवश्य आया होगा और उस समय जनता को राहत भी प्राप्त हुई होगी, इसमें शका नही। लेकिन भगवान् महावीर की विहार भूमि में प्राणी दु खी रहे यह भगवान् महावीर के अनुयायी कैसे देख सकते थे। पलामू की पुकार सुनकर भगवान् महावीर के अनुयायी दौड पडे और लग गये पिछडी जातियो के दु ख दर्द के कार्य में।

दस वर्ष पूर्व बेलचम्पा में अहिंसानिकेतन नाम की सस्था की स्थापना इमी मकट स मुकाबला करने के लिये हुई। जिसने अपने दस वप में क्या-क्या काय किये वह पाठक आगे पढ कर जान सकेंगे।

बेलचम्पा—कोयला नदी के किनारे बसा हुआ एक रमणीक स्थान है। जिस नदी में ३९ नाले विभिन्न दिशाओ से आकर मिलते हैं। पूर्व में कोयला नदी और सामने पहाडिया विन्ध्यगिरि, उत्तर में सोन नदी, डेरी ओन सोन, दक्षिण में डालटनगज और पश्चिम में गढवा तहसील नगर उँटारी है। चारो ओर नदी-नालो के बीच में टापू की शक्ल में बेल-चम्पा है जहाँ पर "अहिंसा निकेतन" आश्रम है। इसी आश्रम से इस जिले में क्या ममस्त विहार, बगाल, उडीसा में सराक जाति का कार्य, नेत्र यज्ञ, अकाल पीडितो को सहायता, बच्चो को शिक्षा और धर्म पिपा-सुओ को धर्म-मार्ग बताया जाता है[१]।

●

१ बेलचम्पा आश्रम का वर्णन आगे इसी पुस्तक में पढिये।

अहिंसानिकेतन बेलचम्पा की एक झांकी

साधनाभवन—यह भवन कोयला नदी के किनारे आश्रम के आखिरी छोर पर अपनी अनोखी छटा बिखेर रहा है[1]। दूर-दूर से लोग इस भवन को देखने आते हैं। यहाँ ध्यान, योग और योगासन की साधना की जाती है। प्रात अहिंसा निकेतन के छात्र, कार्यकर्त्ता, विद्वान् और योगीमुनि इसमें साधना करते हैं। इस भवन में उदासीन श्रावको को रहने की व्यवस्था अलग-अलग कमरे बना कर की गई है। उदासीन दम्पतिके रहने की भी व्यवस्था अलग से है। आधुनिक साधन इसमें उपलब्ध हैं। जैसे-बिजली, नल, पखा आदि। अमरूद, केला, पपीता के वृक्ष हैं, आम के पेड अपनी सघन छाया इस पर किये हुए हैं। यह आश्रम (भवन) सन् १९६४-६५ ई० में बनकर तैयार हुआ। साधको की पूर्ण व्यवस्था आश्रम की ओर से की जाती है। और बदले में साधकों के अनुभवो का लाभ वर्तमान पीढी को पहुँचाने की व्यवस्था की गई है।

प्रार्थनाभवन—जैनभवन में जैन धर्म के चारो सम्प्रदायो के धार्मिक ग्रथ, महान् पुरुषो के पुराण, उच्च कोटिके दार्शनिको के चिंतन बगैर जातिपाँति भेद के ग्रथ हैं। श्री महात्मागाधी के प्रिय भजन "वैष्णवजन तो तैने कहिये, तें पीर पराई जानें क्यो ? का सचित्र वर्णन देखने को मिलता है[2]। जिसमें बैठ कर साधक सभी कष्ट भूल जाता है और ध्यान मग्न हो जाता है। सम्यग्दर्शन का आनद यहाँ आता है।

१ श्री राजारामजी याज्ञिक जो भू० पू० निरीक्षक माध्यमिक विद्यालय गुजरात तथा उत्तर प्रदेश रहे, आजकाल इसी भवन में साधना करते है। नेत्रयज्ञोंका सचालन आपकी देख-रेख में होता है। दूसरे एक

---

१ 'सराक वधुओं के बीच' पुस्तक में विस्तृत वर्णन पढिये।

२ 'सराक वधुओं के बीच' पुस्तक में विस्तृत वर्णन पढिये।

वायु का सेवन तथा शुद्ध शिक्षा बालको में ओज पैदा करती है यह इस जगह देखा जा सकता है।[1]

अहिंसा निकेतन जैन छात्रावास मे उच्च प्रतिभा के बालक ही लिये जाते है वह भी बगैर भेद भाव के। उन्हें छात्रावास में सभी सुविधायें दी जाती हैं प्रवेश फीस और छात्र फीस के ४०) रु० ज्यादा से ज्यादा छात्रो कि अभिभावक से लिया जाता है जब कि आश्रम से ३०, ४०, रु० माह और खर्च किया जाता है छात्रो को धार्मिक लौकिक शिक्षा आश्रम में तथा रेहला हायर सैकेन्ड्री स्कूल में दिलाई जाती है प्रात ५ बजे से रात्रि के १० बजे तक व्यवस्थित कार्यक्रम छात्रो का चलता रहता है इनकी प्रार्थना में बैठकर जो आनद आता है वह लेखनी मे लिखने का नही प्रत्यक्ष अनुभव करने का विषय है। मुनि जयतीजी महाराज अतिथियों के साथ तथा आश्रमवासियो के साथ स्वय प्रार्थना मे दोनो वक्त उपस्थित होते है।

छात्रावास का एक छात्र श्री देवदत्त पाठक भ० महावीर स्वामी का सदेश प्रचारित करने के लिये आजकल प्रचार क्षेत्र में निकल भी गया है। जो ग्राम-ग्राम में पैदल घूमकर सदेश फैला रहा है। आगे भी कुछ छात्र निकलेंगे।

गौशाला—सन् १९६६ ई० में छात्रो व साधकों को दूध की परेशानी से अधिक चिंतित देखा गया तब आश्रम व्यवस्थापको ने सुन्दर दूध देने वाली गायें मँगाकर व दान में प्राप्त करके सुन्दर विशाल गौशाला की स्थापना की। जिनके बछडे आश्रम में खेती के काम मे आने लगे और सभी को यथासाध्य दूध भी उपलब्ध हो जाता है। गौशाला मे पशुओ की पूर्ण देख-भाल, चारा-पानी की सम्भाल अच्छे ढग से चल रही है।

---

१ आश्रम का वर्णन फल-फूल, सब्जी आदि का 'सराकवधुओ के बीच' पुस्तक में पढिये।

कृषिकार्य—अहिंसा निकेतन आश्रम में आम, पपीता, केला, अमरूद, जामुन आदि के पेड तो है ही, मटर, टमाटर, सेम, भिंडी, लौकी, घिया-तोरई आदि नाना प्रकार की सब्जियाँ भी पैदा की जाती है और भूमि में अच्छा धान भी पैदा किया जाता है। जिसके लिये योग्य कृषक बधु कार्य करते है।

भीषण अकाल और सेवाकार्य—सन् १९६७ ई० में अहिंसा निकेतन आश्रम में नेत्र यज्ञ प्रारम्भ होने जा रहा था कि एकाएक बिहार मे (विशेपकर पलामू जिले में) भीपण अकाल पडने के समाचार प्राप्त हुए। लोग भूखो मरने लगे। चारो ओर त्राहि-त्राहि मच रही थी। आश्रमवासियो को कहाँ चैन, नेत्र यज्ञ का कार्य बीच में रोक दिया और दौड पडे अकाल-पीडित क्षेत्रो में अपने बधुओ की सेवा करने।

भोजन, कपडा, दवा और राशन की व्यवस्था मे आश्रमवासी पूर्ण-रूपेण जुट गये। मुनि जयन्तीजी महाराज की देखरेख में पीडितो की सेवा का कार्य प्रारम्भ हुआ। अहिंसा निकेतन ने कार्य सर्वप्रथम प्रारम्भ किया। बाद मे सरकार ने व अन्य धार्मिक सस्थाओ ने भी जुटकर हाथ बँटाया। ८५६ भोजनालय इस समय चलते थे जिसमें अहिंसा निकेतन आश्रम का स्थान सर्वश्रेष्ठ रहा। दो हजार स्त्री-पुरुषो व बच्चो को नित्य मुफ्त भोजन ठीक ८ बजे प्रात से देना प्रारम्भ किया जाता था। एक मिनट भी समय इधर-उधर नही होता था। यह अपने में सर्वश्रेष्ठ रिकार्ड रहा है।

तीन श्रेणियो में राशन अलग बाँटा जाता था, जो रुपया का माल पचहत्तर पैसा, पचास पैसा, पच्चीस पैसा में दिया जाता था। जैसी स्थिति का आदमी होता वैसे ही पैसे उससे लिये। यह राशन सात हजार आद-मियो ने खरीदा।

अहिंसा निकेतन ने उस समय ५०० पशुओं को चारा, स्त्रियो के लिये ५ हजार साडियाँ (धोतियाँ), २० हजार बच्चो के लिये नये कपडे

और बीस हजार बच्चो को पुराने कपडे बाँटे। तथा मजदूरो को मजदूरी मिलती रहे इससे कई जगह कुँआ बनवाये, रास्ते ठीक कराये और सफाई आदि कार्य कराये जिससे लोगों को राहत मिली। रोगियों को दवा, निराश्रितो को आश्रय इस आश्रम ने दिये।

अकाल के समय पर दानवीर सेठ विमलप्रसादजी जैन खरखरी व श्री लक्ष्मीनारायण ट्रस्ट धनवाद और जमशेदपुर की गुजराती (कच्छी) समाज ने लाखो रुपया इस कार्य मे खर्च किया। जैन समाज ने हजारो रुपया मुनिजी पर भेजा तथा मुनिजी के शिष्यों ने भी इस कार्य मे हजारो रुपया लगाया। यह भयानक समय था और अहिंसा निकेतन की सेवाओ की परीक्षा का समय था। लेकिन भगवान् महावीर के श्रमण ने भ्रमण करके शांति व धीरज का संदेश देकर अपनी परम्परा परोपकार की अक्षुण्ण रखी। और इस काल में सेवा करके अपने को धन्य माना।

× × ×

विशाल नेत्र यज्ञ—सन् १९६९ ई० में विराट नेत्र यज्ञ अहिंसा निकेतन बेलचम्पा में किया गया। संकल्प की पूर्ति की ५०० व्यक्तियो के नेत्रो का सफल ऑपरेशन करके हुई। इस क्षेत्र में यह महान् यज्ञ प्रथम बार हुआ था, अत दूर-दूर से स्त्री-पुरुष पधारे। "सद्विचार मण्डल" अहमदाबाद ने इसकी पूरी-पूरी व्यवस्था अपने हाथ मे ली थी, उन्होने ही गुजरात के नेत्र विशेषज्ञों का दल (डॉ० आर० जोशी के नेतृत्व में जिसमें ६ सर्जन डाक्टर, २५ नर्से व कम्पाउडर थे) बुलाया था, जो पूर्ण सेवाभावी था। उनके इस कार्य की सफलता से आश्रम के प्रति जनता की भावना ममतामयी हो गई। अकाल के समय की सेवा भावना और नेत्र यज्ञ में चक्षु दान ने आश्रम की ख्याति चारो दिशाओ में फैला दी। इस नेत्र यज्ञ मे जो भी खर्च आया उसको श्री जसवन्त भाई बोहरा की सद्प्रेरणा से "श्री लक्ष्मीनारायण देव ट्रस्ट" धनवाद ने वहन किया। इस ट्रस्ट की ओर से लगातार चार नेत्र यज्ञो का खर्चा पूर्ण हुआ। पलामू जिले की ही क्या समस्त बिहार प्रदेश की जनता ट्रस्ट की आभारी हैं।

उदयगिरि की गुफाएँ

महावीर गुफा खण्डगिरि में विराजित २४ तीर्थंकर

तीर्थंकर और उनकी यक्षिणी देवियाँ खण्डगिरि

श्री उदयगिरि की हाथी गुफा में अंकित शिलालेख

पुरातत्त्व विभाग की सूचना पर, जिसमें ईसा पूर्व १०० वर्ष स्थापित सम्राट् खारवेल की प्रशस्ति तथा गुफाओं का वर्णन था।

सीधे हाथ की ओर मुड़े और वहाँ पर गुफाओं को देखा जो पहाड़ में बनी हैं, द्वारपाल छड़ियाँ लिये खड़े हैं, ऐसा लगता अभी यह बातें करते हैं, मुनियों की गुफायें, शिष्यों के अध्ययन कक्ष, शिष्यों के दंड स्थल, और गुरुओं के उपदेश गृह इसी जगह पर हैं।

ठाकुरानी गुफा, पातालपुराई गुफा, पचापुरी, स्वर्गपुरी गुफा, देखने के बाद जव-हस्ति गुफा, सर्प गुफा और बाघ गुफा के सम्मुख खण्डगिरि देखा तो अतीत के स्वप्नों में खो गये। इन गुफाओं में सैकड़ों वीत-रागी मुनियों ने ध्यान किया, उपदेश दिया, और आत्मभावना में लीन हो कर मुक्ति प्राप्त की। धन्य हैं उन पूज्य पुरुषों को जिन्होंने इन्द्रिय जय करके आत्म कल्याण किया। धन्य है वह सम्राट् खारवेल जिसने अपने वैभव का उपयोग धर्म साधना में किया, स्वय कल्याण का भाजन बना और साधकों को बनाया।

यहाँ पर १७ लाइनों में ॐनमः सिद्धेभ्य से प्रारम्भ बड़ी प्रशस्ति[1] खुदी हुई है जो उस काल के जैन धर्म की महिमा व्यक्त कर रही है। पाषाण क्षीण होने लगा है, प्रशस्ति[2] भी धीरे-धीरे समाप्त हो रही है यहाँ ध्यानस्थ रहे, और बाद में सीधे हाथ जाने से गणेश गुफा की ओर गये। जिसमें श्री गणेशजी और जिनेन्द्र देवकी मूर्तियाँ आजू-बाजू में स्थित हैं, जो गुफा के पाषाणों में बनी है।

सामने दरवाजे पर की दीवाल पर सीताहरण आदि के चित्र हैं, रामायण का चित्र प्रगट हो रहा है। इस गुफा से हाथी गुफा (लक्ष्मी को स्नान कराते हुए हाथी) भी देखी। मगर रानी गुफा अपनी अनोखी

---

१ ब्राह्मी लिपिमें लिखी हुई प्रशस्ति सम्राट् खारवेल की धर्म कीर्ति को प्रकाश मान करती है।

२ प्रशस्ति को अलग पृष्ठ पर पढ़ें।

आदिनाथ जिनमंदिर

विशेषता लिये दिखती है, इसे जनानीगुफा भी कहते है ऊपर पहाड से नालिया निकाली गई है, जिनसे पानी वहता है, पर्दा जैसी दीवाले हैं जिनमे औरतें रहती होगी। इसी से इसे रानी गुफा कहते हैं, पर, यह जचा नही रानियो का इन गुफाओ में क्या काम।

स्पष्ट है कि यह गुफा आर्यिकाओंके लिये है, जहाँ मुनियो से पृथक् और न दिखने वाली पहाडियो मे यह पर्दा जैसी रक्षक गुफा में एकात में वनाई हैं, इसमें आर्यिकायें रहती होगी उसीसे यह जनानी गुफा या रानी गुफा नाम पटा, आर्यिकागुफा है। यह गुफा सवसे वडी गुफा है। दर्शनीय गुफा है।

इसके नीचे "वाजा गुफा" है, जिसमें आवाज देनें से बाजे जैसी धुन निकलती है ऐसी किंवदती है (पर हमने धुन नही सुनी) हाथी गुफा, नाग गुफा और वाघ गुफाओ के ऊपर भी गुफायें है। यह गुफायें ऐसी वनी हैं जैसे तीन मजिल हवेली वनी हो। खम्भो तथा दीवारो पर प्रशस्तिया खुदी हुई हैं। भित्ति चित्र भी दर्शनीय है। उदयगिरि से उतर कर खडगिरि पर चढे।

खण्डगिरि समुद्र तट से १२३ फुट ऊचा, उदयगिरि ११० फुट ऊचा है। प्राचीन काल से जैन साधुओ के विराजने से यह पहाडी पवित्र हो चुकी थी। यहाँ की स्वाभाविक या कृत्रिम गुफाओ में जैन साधु अवश्य पहले से ही विराजते होगे। कम से कम आधी शताव्दी तो अवश्य लेना चाहिए। जव यह पहाडी मुनियो के विराजने से पवित्र हो चुकी थी जिसको पवित्र जानकर राजकुटुम्व ने यहाँ खुदाई में वहुत-सा द्रव्य व्यय किया। यहाँ अवश्य तीसरी शताव्दी पूर्व जैन गुफाए मौजूद थी क्योकि यहाँ जो कुछ प्रमाण मिलते हैं उनमे यह स्पष्ट है। हाथी गुफा के लेख से १०० वर्प उडीसा देश मौर्य राज्य का एक भाग हो गया था। तव निर्ग्रन्थ धर्म का वहुत प्रभाव पडा। सम्राट् खारवेल ने उसी अनुपम पहाडी को चुना, कारीगर को वुलाकर एक प्रसिद्ध शिलालेख लिखने की आज्ञा दी।

सम्राट् खारवेल के सम्वन्ध में तत्कालीन गृहस्थाचार्य ने गुरु के सम्मुख

लेख लिपि वद्ध किया और आचार्य ने आशीर्वाद दिया—राजन् ! लोक म
तुम्हारा यश चिरकाल विस्तार को प्राप्त हो जब तक गगन मण्डल म
ज्योतिप देवो के विमान स्थिर है, सूर्य-चन्द्र में प्रकाश है तब तक तुम्हार
उज्ज्वल कीर्ति ससार मे अक्षय वनी रहे-यो कह स्वस्तिक वना उत्त
शिला पर पीछी फेर कर पुष्प अक्षत जल क्षेपण कराकर मन्त्र पूर्वव
कारीगर को टाकी लगाने की आज्ञा दी । कुशल कारीगर ने पच परमेष्ठ
को प्रणाम कर 'ॐनम सिद्धेभ्य' कहकर पत्थर को निर्मल वना लेर
लिखना प्रारम्भ किया ।

प्रतिलिपि प्रतिलाइन अर्थ सहित

१ नमो अरहन्तान नमो सव सिधान वेरेन महाराजेन महा मेघ
वाहनेन चेतराज वम वधेन पसथ सुभ लखनेन चतुरन्त लगन गुनोपगतेन
कलिगाधिपतिना मिरि खारवेलेन ।

अर्हन्तो को नमस्कार, सर्व सिद्धो को नमस्कार, वीर महाराजा महा
मेघ वाहन चैत्र राजवश वर्धन प्रशस्त शुभ लक्षण, अपने गुणो से चार
दिशाओ में प्राप्त किया है सम्मान जिसने ऐसे कलिङ्ग देश के अधिपति
महामेघ वाहन पदवी समन्वित श्रीमान् महाराजा खारवेल ने ।

२ पन्दर सवसानि सिरि कुमार सरीखता कीडिता कुमार कीडका
ततो लेख रूप गणना व्यवहार विधि विमार देन सव विजावदातेन,
नववसानि योवराज पसासित सपुण चतु विसनि वसोच दान वधमेन सेस
योवनामि विजय वत्तिये ।

पन्द्रह वर्ष क्रीडा करते हुए कुमार काल में विताए, फिर लिपि विद्या
गणित, व्यवहार, नीति, युद्ध कला कौशल में चतुर होकर नौ वर्ष तक
युवराज पद प्रशसा पाई पूरे चौबीस वर्ष के होने पर दान और धर्म से
शेप यौवन के आधिपत्य और वृत्ति के लिए ।

३ कलिङ्ग राजवश पुरिस युगे महाराजाभिसेचन पापुनाति भिसित
मतोच पधभवसे वात विहत गोपुर पाकार निवेसन, पठिर्स खारयति

कलिङ्ग नर्गार खिवीरश सिलज तडाग पाडियो च वधा पयति सवुयान पति सगपनच ।

कलिङ्ग के राजवश के पुरुप युग में महाराज पद के अभिषेक से पवित्र हुए। अभिपेक होने के पहले ही वर्ष में हवा से टूटे हुए कोट द्वारा महल तथा मकानो को सुधरवाया, तथा कलिङ्ग नगरी की छावनी और तालाब की रक्षिका बवाई तथा सर्व बागो की स्थापना कराई ।

४ कारयति । पनती साहि सत सह सेहि पकातिये रजयति दितिये च वस अभितीयता सातकणि पछिम दिस घ्यगज नर रघवहुल दड पगपयति । कुस वान खतिय च सहायवता पत मसिक नगर ततिये च पुनवसे ।

३५ लाख रुपये व्यय करके नगर का निर्माण कराया। इस तरह लोगो को प्रसन्न किया । दूसरे वर्ष रक्षा करने के लिये शतकर्णी के पास हाथी, घोडे, मनुष्य, रथ से भरी हुई सेना, पश्चिम दिशा को भेजी तथा कौशाम्वी के क्षत्रियो की सहायता से मासिक नगर (वासिक) को प्राप्त किया और फिर तीसरे वर्ष में ।

५ गन्धव वेद वुधो दपन गीत वादित सद स नाहि उस वस मा जकारापनाहि च कीडापयति नगरी इथ चवुथे वसे विजा घराधिवास अहत पुव कलिङ्ग युवराज न मसित' घम कूटस (पू) जिन च निखितछत ।

गान्वर्व गान विद्या में प्रवीण होकर गीत नृत्य वादित्र दिखलाकर तथा उत्सव के समाज कराकर नगरी में क्रीडा कराई। इसी तरह चौथे वर्ष में विद्याधरों से सेवित पूर्व में कलिङ्ग राज्यो से वन्दनीय धर्मकूट मदिर की पूजा की तथा चढ़ाए हुए छत्र—

(६) भिगोरेहि तिरतन सपतयो सवरठिकमो जके सादेवे दसयपति पचमे च दानि वसे दस राजति वससत ओघाटित तन सु लीय टावाठी पनाडि नगर प्रवेश राजसेय सदसणतो सव कण्वण ।

और भृङ्गोरा से सर्व राष्ट्रो के सरदारो को मानो तीन रत्न सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र की श्रद्धा प्रदर्शित कराई फिर पाचवे वर्ष, नन्दराजा के द्वारा स्थापित दानशाला को फिर उद्घाटित किया ।

कलिंग देश के प्रतापी नरेश के जितशत्रु[1] के साथ भगवान् महावीर स्वामी की छोटी बुआ विवाही थी। उसी जितशत्रु महाराज की एक कन्या थी जिसका नाम यशोदा था, उससे महाराजा सिद्धार्थ अपने पुत्र वीरप्रभु से विवाह करना चाहते थे। पर वीतरागी प्रभु ससार वधन में वधना नही चाहते थे उन्होने शादी करने से साफ इन्कार कर दिया और घर वार छोडकर वैराग्य की शरण मे पहुँचे।[2] यशोदया महाराजा सिद्धार्थ की छोटी वहन थी और यशोदा भानजी। लेकिन भगवान् महावीर प्रभु को तो भव वधन काटना था, और त्रसित मानवो को धर्मामृत का पान कराना था अत अपने सम्माननीय श्रद्धेय आत्मीयो की वात ठुकरा दी[3]। जो भी हो खडगिरि पर देवाधिदेव भगवान् ऋपभदेव स्वामी से लगा कर भगवान् महावीर पयत अखड रूप से धर्म गगा वही।

पर इसी खडगिरि को अपने सम्मुख लाखो जीवो का वध होते भी देखना पडा, कलिंग जिनकी मूर्ति को मगधाधिपति आदि ले गये। वडे-वडे युद्ध हुए। मगध में भी महापद्म नरेश ने जैन धर्म का प्रचार किया। सम्राट अशोक ने जो नर सहार कर के जैन धर्म को क्षति पहुचाई वह इतिहास के पृष्ठो पर ही अकित नही है वल्कि खडगिरि उदयगिरि के कण-कण मे अकित है।

कलिंग जिनका अभाव कलिंगवासियो को सताता था, सम्राट्‌अशोक

---

१ हरिवश पुराण में जितशत्रु राजा का सम्मान महाराजा सिद्धार्थ ने ने भ० महावीर स्वामी के जन्म के समय "सुपूजित शब्द से क्रिया और उन्हें नृपोपमाखण्डलतुल्यविक्रम" (इन्द्र के समान पराक्रमी) सम्बोधन किया।

२ यशोदयाया सुतया यशोदया, पवित्रया वीरविवाहमगलम्।
अनेककन्यापरिवारया सह-समीक्षितु तुगमनोरथ तदा॥
हरिवशपुराण सर्ग ८।६६

३ श्वेताम्वर जैन ग्रथो मे भ० महावीर की शादी यशोदा से हुई और उससे सतान भी (पुत्र) हुई ऐसा वर्णन मिलता है।

कलिंग देश के प्रतापी नरेश के जितशत्रु[1] के साथ भगवान् महावीर स्वामी की छोटी बुआ विवाही थी। उसी जितशत्रु महाराज की एक कन्या थी जिसका नाम यशोदा था, उससे महाराजा सिद्धार्थ अपने पुत्र वीरप्रभु से विवाह करना चाहते थे। पर वीतरागी प्रभु संसार बन्धन में बंधना नहीं चाहते थे उन्होंने शादी करने से साफ इन्कार कर दिया और घर बार छोड़कर वैराग्य की शरण में पहुँचे।[2] यशोदया महाराजा सिद्धार्थ की छोटी बहन थी और यशोदा भानजी। लेकिन भगवान् महावीर प्रभु को तो भव बंधन काटना था, और त्रसित मानवों को धर्मामृत का पान कराना था अतः अपने सम्माननीय श्रद्धेय आत्मीया की बात ठुकरा दी[3]। जो भी हो खंडगिरि पर देवाधिदेव भगवान् ऋषभदेव स्वामी से लगा कर भगवान् महावीर पर्यंत अखंड रूप से धर्म गंगा बही।

पर इसी खंडगिरि को अपने सम्मुख लाखों जीवों का वध होते भी देखना पड़ा, कलिंग जिनकी मूर्ति को नन्दाधिपति आदि ले गये। बड़े-बड़े युद्ध हुए। मगध में भी महापद्म नरेश ने जैन धर्म का प्रचार किया। सम्राट अशोक ने जो नर संहार कर के जैन धर्म को क्षति पहुंचाई वह इतिहास के पृष्ठों पर ही अंकित नहीं है बल्कि खंडगिरि उदयगिरि के कण-कण में अंकित है।

कलिंग जिनका अभाव कलिंगवासियों को सताता था, सम्राट्अशोक

---

१ हरिवंश पुराण में जितशत्रु राजा का सम्मान महाराजा सिद्धार्थ ने ने भ० महावीर स्वामी के जन्म के समय "सुपूजित शब्द से किया और उन्हें नृपोपमाखण्डलतुल्यविक्रम" (इन्द्र के समान पराक्रमी) सम्बोधन किया।

२ यशोदयाया सुतया यशोदया, पवित्रया वीरविवाहमंगलम्।
अनेककन्यापरिवारया सह-समीक्षितु तुगमनोरथ तदा॥
हरिवंशपुराण सर्ग ८।६६

३ श्वेताम्बर जैन ग्रंथों में भ० महावीर की शादी यशोदा से हुई और उससे संतान भी (पुत्र) हुई ऐसा वर्णन मिलता है।

आ खडे हुए सम्राट् खारवेल आदि । यकायक यही मुख से निकला ।

जिन श्रेष्ठ सौधो पर सुगायक श्रुति सुधा थे घोलते,
निशि मध्य टीलो पर उन्ही के, आज उल्लू बोलते ।
सोते रहो ऐ जैनियो ! हम मौज करते है यहाँ,
प्राचीन चिह्न विनष्ट यो किस जाति के होगे कहाँ ।।

—मैथिलीशरण गुप्त

धर्मक्षेत्र के जिनमन्दिरो को मिट्टी में मिलते हुए देखकर हृदय वेदना से भर गया, हमारी उदासीनता ने धर्म क्षेत्र के जिन मन्दिर हो नही हमारे जैन बन्धु ही हमसे जुदा कर दिये । आज वह पावन खडगिरि उदयगिरि के दर्शन करके अपने को धन्य तो मानते है, पर जैन नही कहलाते । वह आचरण तो जैन धर्म के सिद्धातो के अनुसार करते है, पर जय बोलते है— महात्मा बुद्ध की या अकलक की या कृष्ण की ।

जिनके गोत्र जैन तीर्थंकर के हो या जिनेश (जिगनेश) हो और सभी वातावरण जैन का है, वह भी अपनी सुध भूलकर अन्य गति को अपनाये हैं ? यह सब किसका दोष है ?

यह सब हमारा, हमारी उदासीनता का, और हमारी उपेक्षा का है ।। यही भाव लेकर भारी मन से अपने निश्चित स्थान को लौटा ।

●

ता दक्षिण टूटी गुफा आय तिनमें ग्यारह प्रतिमा सुहाय ॥
पुनि पर्वत के ऊपर सुजाय, मन्दिर दीरघ मन को लुभाय ॥
तामें प्रतिमा मुनिराज मान, खडगासन योग धरे महान ॥
पूरव उत्तर द्वय जिन सुधाम, प्रतिमा खडगासन अति महान ॥
पुनि दर्शन करके मन शुद्ध होय, शुभ बंध होय निश्चय जु सोय ॥
पुनि एक गुफा में बिम्बसार, ताको पूजनकर फिर उतार ॥
पुनि और गुफा खाली अनेक ते है मुनिराजा के ध्यान हेत ॥
पुनि चलकर उदयगिरि सजाय, भारी-भारी जु गुफा लगाय ॥
एक गुफा माँहि जिन विराजमान, पद्मासन धर प्रभु करत ध्यान ॥
जिनमें एक हाथी गुफा महान, तामें इक लेख विशाल थाम ॥
पुनि और गुफा में लेख जान, पढते जिन मत मानत प्रमान ॥
तहँ जसरथ नृपके पुत्र आय, सग मुनि पच शतक ध्याय ॥
तप बाहर विधि का यह करन्त, बाईस परीषह वह महन्त ॥
पुनि समिति पच युत चलें सार, दोष छयालीस टाल करें अहार ॥
इस विधि तप दुद्धर करत जोय, जो उपजै केवलज्ञान सोय ॥
सब इन्द्र आय अति भक्ति धार, पूजा कीनी आनन्द धार ॥
पुनि धर्मोपदेश दे भव्यसार, नाना देशन मे कर विहार ॥
पुनि आय याही शिखर थान, सो ध्यान योग्य अघातिहान ॥
हये सिद्ध अनन्ते गुणनि ईश, तिनके युग पदकर धरत शीश ॥
भयो जन्म सुफल अपना सुभाय, दर्शन अनूप देखो जिनाय ॥
ता क्षेत्र पूजत मैं निहाल, कर जोड नमत है मुन्नालाल ॥

●

तीर्थंकर के निर्वाण काल से पार्श्वनाथ की ही पूजा होती थी। ऋषभ वासुपूज्य नेमि और महावीर को छोडकर शेप सभी तीर्थकरो ने सम्मेद-शैल से मुक्ति प्राप्त की है। पर सम्मेद शैल से निर्वाण प्राप्त करने वाले अन्तिम तीर्थंकर पार्श्वनाथ ही थे। पार्श्वनाथ की टोंक भी अन्य सभी तीर्थ-करो की टोंक से अधिक ऊँचाई पर स्थित है। इससे अनुमान होता है इस प्रान्त मे भगवान पार्श्वनाथ की मान्यता ही अधिक रही है। उसी मान्यता के सदर्भ में यह कहना उचित है कि सराक जाति के कुल देवता भगवान पार्श्वनाथ रहे हैं। इधर जो भगवान महावीर के भक्त हुये उन्होने भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति को तो वैसा ही कायम रक्खा पर पार्श्वनाथ के इन भक्तो को भुला दिया है। और आज तो स्थिति और भी खराव है। अव तो भक्तो में से ही वहुत से लोग भगवान् वनते जा रहे है। पार्श्वनाथ और महावीर की प्रतिस्पर्द्धा में स्वय को भगवान और भगवती वनने वनाने की चिन्ता करने वालो को इतनी फुर्सत कहाँ कि उन विछुडे हुये सराक बन्धुओ को सम्हाले। इस सम्वन्ध श्री विमलप्रसादजी खरखरी वाले तथा उनके सहयोगी श्री प० वावूलालजी जमादार जो कुछ कर रहे है सो कर रहे है, अन्यथा समाज तो उदासीन ही है। ईसाई मिशनरियाँ जिस लगन और सेवा के साथ कार्य करती है उसकी तुलना मे हम कही भी नही है। हमारे यहाँ केवल इतना ही साधन ह कि सेवा की आवश्यकता हुई तो एक प्रचारक को नौकर रखकर समाज में छोड दिया। वह दर-दर भिक्षुक की तरह अर्थ सग्रह करे, अपने वाल-वच्चो से महीनो अलग रहे, मालिको की हाँ में हाँ मिलावे साथ में उनकी खोटी खरी भी सहे। जव अर्थ सग्रह हो जाय तो मालिक लोग नाज नखरे के साथ काय स्थल पर ...ाज का अभूतपूर्व आतिथ्य औरसम्मान ग्रहण करें। वे चाहे जब उस प्रचारक को अलग कर सकें और इच्छानुसार किसी दूसरे जी हजू... ...ारक रक्ख सकें। पर वस्तुत यह जन साधारण की सेवा नहीं है ...युत अपनी ही सेवा है।

सच्चा सेवक अपने मान सम्मान की चिन्ता किये विना जनसाधारण